गुरु विरजानन्द दण्डी
पुस्तकालय
5330
दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र

खण्डन मण्डन ग्रन्थ माला पुष्प सं० ६०

कुरान पर सप्रमाण

१७६ प्रश्न

(कुरान के विद्वान जवाब दें)

लेखक—
(खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला के समस्त ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)
आचार्य डा० श्रीराम आर्य
कासगंज (एटा) उ० प्र०

तिथि ....
पुस्तकालय........

प्रकाशक—
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १५०
प्रथमवार ११००   सृष्टि संवत् १९७२९४९०७५   मूल्य ३)
सन् १९७५ ई०

कुरान पर सप्रमाण १७६ प्रश्न

प्रकाशक-
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०)

सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य:—तीन रुपया

मुद्रक-
देशबन्धु प्रिन्टिङ्ग प्रेस
हाथरस ।

भूमिका

यह ऐतिहासिक सत्य है कि कुरान शरीफ की रचना इस्लाम मत के आदि प्रवर्तक हजरत मौहम्मद साहब ने खुदाकी ओरसे मक्का और उसके आसपास के रहने वालों को दोजख आदि के भय एव जन्नत (स्वर्ग) में सुन्दरी अछूती औरतों, गिलमों (लोडों) शराबों आदि का प्रलोभन देकर इस्लाम में लाने के लिए अरबी जबान में की थी। यह बात कुरान में खुले शब्दों में दी है (देखो कु० पारा ७ सूरे अनआम रुकू ११ आयत ९२ । कु० पा० २५ सू० शूरा आ० ७। कु० पा० २५ सू० जुखरुफ आ० ४। कु० पा० १२ सू० यूसुफ आ०२ तथा प्रश्न व आलोच्य स्थल नं० १७६)

कुरान हजरत मौहम्मद साहब की ही रचना है इस विषय में उनके ही शब्द इसे प्रमाणित करते हैं (देखो कु० पा० १० सू० तौबा रु० ५ आ० ३०। कु० पा० ११ सू० हूद आ० ३५। कु० पा० ३ सू० बकर रु० ३३ आ० २५२। कु० पा० २६ सू० अहकाफ आ० ८ व ११)।

इस पर भी कुरान का दावा है कि कुरान खुदाई है और उसमें जो कुछ भी लिखा है वह सब सत्य ही सत्य है (कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५ आ० ४२। कु० पा० १५ सू० कहफ आ० १)

मौजूदा कुरान असली है या नकली, इसकी जांच की भी एक कसौटी कुरान में दे दी गई है कि जिस कुरान से मुर्दे जिन्दा होकर बोलने लगें, जमीन के टुकड़े हो जावें और पहाड़ चलने लगें वही असली सच्चा कुरान होगा (देखो कु० पा० १३ सू० राद रु० ४ आयत ३१ ॥ कु० पा० २८ सूरे हशर रु० ४ आ० २१) किन्तु इस पक्की कसौटी पर भी कुरान पूरा नहीं उतरता है। अतः मौजूदा कुरान असली साबित नहीं होता है।

कुरान में लिखा है कि आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं (कु० पा० १८ सू० नूर रु० ६ आ० ४३ ॥ आसमान जमीन पर गिरने से रुका है (कु० पा० १७ सू० इज्ज रु० ९ आ० ६५) सूरज और चांद जमा किये जायेंगे

(कु० पा० २९ सूरे कयामत आ० ९) आसमान की खाल खींची जावेगी (कु० पा० ३० सूरे तकवीर आ० ११) आसमान कागज की तरह लपेटा जायगा (कु० पा० १७ सूरे अम्बिया रुकू ७ आ० १०४) सूरज काली कीचड़के तालावमें डूबता है (कु० पा० १६ सूरे कहफ रुकू ११ आ० ८६) आदि अनेक स्थलों को देखकर हमारे मनमें यह बात पैदा हुई कि कुरान के बुद्धि विरुद्ध-विज्ञान विरुद्ध सृष्टि नियम तथा इतिहास विरुद्ध साथ ही परस्पर विरुद्ध कुछ स्थलों को मय समीक्षा के पुस्तकाकार प्रस्तुत करें और उन पर अपनी शंकाओं को प्रश्नों के रूप में पेश करके संसार के कुरान मर्मज्ञों को समाधान के लिये आह्वान करें।

हमने सैकड़ों ऐसे स्थलों में से केवल नमूने के रूप में १७६ स्थल ही इस पुस्तक में संग्रहीत किये हैं। इतने मात्र से ही कुरान की स्थिति स्पष्ट हो जावेगी। पुस्तक में दी गई विषय सूची से उन स्थलों के शीर्षकों का पता लग जावेगा। प्रश्नावली में १७६ प्रश्नों के नम्बर के क्रमानुसार ही आलोच्य स्थलों के नम्बर हैं। अतः प्रत्येक प्रश्न व उसके आलोच्य स्थल का पता नम्बरों के क्रम से लग सकेगा।

कुरान अरबी सभ्यता का ग्रन्थ है। उसका निर्माण केवल अरब वालों के लिए ही हुआ था। यह बात भी स्वयं कुरान में ही लिखी गई है। उसमें ईश्वरीय ज्ञान की कोई भी बात हमको नहीं मिल सकी है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जो भी कुरान को पढ़े अन्ध-विश्वास को त्याग कर खुले दिमाग से पढ़े और सच्चाई को ग्रहण करे। क्योंकि अन्ध-विश्वास के साथ किसी भी बात को बिना परीक्षा के मानने से सच्चाई से दूर भागना होता है।

आशा है इस पुस्तक को पढ़कर कुरान के विद्वान हमारे प्रश्नों पर गंभीरता पूर्वक विचार करके समुचित उत्तर देने का कष्ट करेंगे अथवा सच्चाई को स्वीकार करेंगे।

निवेदक—
प्रश्नकर्ता

विषय सूची

भूमिका	(इ—ई)
विषय सूची	(१—७)
कुरान पर हमारे १७६ प्रश्न	१—२४
१ खुदा जन्नत (स्वर्ग) में रहता है	२५
२ खुदा तख्त पर बैठता है	२५
३ खुदा फौज लेकर लड़ने गया	२५
४ पत्थर भी डर जाते हैं	२६
५ बादल जमीन और आसमान के बीच में है	२६
६ दोजख का ईंधन आदमी व पत्थर	२७
७ खुदा ने बेजान इन्सान में रूह डाली	२७
८ खुदा ने जमीन के बाद सात आसमान बनाये	२८
९ खुदा ने गोश्त पकाकर उतारा	२८
१० इन्सान को बन्दर बनाकर नगद सजादी	२९
११ खुदा सर्वज्ञ नहीं	२९
१२ औरतों पर खुदाई जुल्म	३०
१३ रोजा रखना जरूरी है	३१
१४ रोजों में विषय भोग जायज कर दिया	३२
१५ बीवियां खेतियां हैं चाहे जैसे जाओ	३३
१६ बतीफीउलदब्र (पुरुष मैथुन) जायज है	३३
१७ झूठी कसमें	३३
१८ कुरान मुहम्मद ने लिखा था	३४
१९ सूद खाना पाप है	३४
२० खुदा ने अरब वालों को जाहिल बताया	३४
२१ हर काफिर को खुदा ७० हाथ की जंजीर से बांधेगा	३५
२२ खुदा की हो (कुन)	३५

२३	ईसा को इन्जील सिखाने का गलत बयान	३५
२४	खुदा का मकर करना	३६
२५	गैर मुस्लिम का विश्वास न करो	३६
२६	खुदाई दीन इस्लाम को प्रशंसा	३६
२७	सबकी उम्र निश्चित है	३७
२८	गुनाह करने को खुदा की ढील	३७
२९	दुनियां की जिन्दगी धोखे की है	३७
३०	चाहे जितनी औरतें रखो छूट है	३८
३१	बीबियां बदल सकते हो	३८
३२	माँ से निकाह का निषेध व समर्थन	३९
३३	मिट्टी मलने से पाक	३९
३४	खुदा दोजख में खालें बदला करेगा	४०
३५	मुसलमान मुसलमान को न मारे	४०
३६	खुदा वकील गवाह और मुल्जिम	४१
३७	कल्मा पढ़ने वाले गुनहगार हैं	४२
३८	खुदा सच्चा है, या धोखेबाज है	४२
३९	काफिरों को दोस्त मत बनाओ	४३
४०	ईसा को सूली न लगी थी	४३
४१	खुदा ने हलाल को हराम कर दिया	४४
४२	मसीह खुदा का बेटा नहीं था	४४
४३	खुदा को कर्ज दो तो गुनाह माफ	४४
४४	खुदा की शरारत	४४
४५	ईसाई काफिर हैं	४५
४६	सजा या इनाम खुदा की मर्जी पर है	४५
४७	खुदा चाहता तो सबको एक ही दीन पर कर देता	४५
४८	यहूदी व ईसाई मुसलमानों के दुश्मन	४६
४९	खुदा के दो हाथ हैं	४६
५०	शराब की निन्दा	४७

५१	ईसा के बारे में गलत बयान	४७
५२	बिना खुदा की मर्जी के कोई सीधे रास्ते पर नहीं आसकता	४७
५३	खुदा ने हर चीज किताब में लिखली है	४८
५४	खुदा ही लोगों को भटकाता है	४८
५५	खुदा ने बेशुमार पैगम्बर भेजे थे	४८
५६	कुरान मक्का के आसपास वालों को डराने को उतारा था	४८
५७	मुशरिक खुदा की मरजी से बने थे	४९
५८	खुदा ने जुल्म करने को ही जालिम पैदा किये	४९
५९	इस्लाम की सीधी राह	४९
६०	कर्मों के अनुसार दरजे होंगे	५०
६१	सूरज चांद व तारे फर्मांबर्दार हैं	५०
६२	बहुत से लोग दोजख ही के लिये पैदा किये गये	५१
६३	लूट के माल में खुदा व पैगम्बर का साझा	५१
६४	खुदा ने फरिश्तों की फौजें भेजीं	५१
६५	काफिरों से लड़ो, जजिया लो	५२
६६	कुरान में दो खुदा	५२
६७	आस पास के काफिरों से लड़ने का आदेश	५३
६८	खुदा अर्श पर बैठता है उसका मालिक है	५३
६९	कुरान तफसील है	५४
७०	हर बात रोशन किताब में लिखी है	५४
७१	खुदा दिलों पर मुहर कर देता है	५५
७२	खुदा नहीं चाहता कि सब मुसलमान बनें	५५
७३	एक व दस सूरतें बनाने की शर्त	५५
७४	अप्राकृतिक व्यभिचार व लूत की बेटियां	५६
७५	अरबी में ही कुरान क्यों उतारा गया	५७
७६	आसमानों को ऊँचा खड़ा किया	५८
७७	असली कुरान से मुर्दे जी उठें, पहाड़ चलने लगें जमीन फट जावेगी	५८

७८ खुदा के पास असल किताब है ५९
७९ सूरज चक्कर खाता है ५९
८० इब्राहीम का नमाज पढ़ना (गलत है) ५९
८१ फरिश्ते उतरने की बात गलत है ६०
८२ आसमान में बुर्ज हैं ६०
८३ तारे टूटना शैतान को मारना है ६०
८४ जमीन में पहाड़ गाढ़े ६०
८५ शैतान की बनाई आयतों के चन्द नमूने ६१
८६ पिछली जिन्दगी का विश्वास करो (पुनर्जन्म) ६१
८७ कयामत करीब है ६२
८८ सबका एक गिरोह बनाना मजूर न था ६२
८९ कुरान में खुदा ने आयतें बदली ६२
९० कुरान जिब्रील लाया था ६३
९१ बिना पहिले पैगम्बर भेजे खुदा सजा नहीं देता है ६३
९२ अरबी खुदा के जुल्मों का नमूना ६४
९३ खुदा के साथ दूसरे की इबादत का निषेध ६४
९४ खुदा कुरान सुनने पर परदा लगा देता है ६४
९५ विवशत: खुदा ने चमत्कार भेजना बन्द कर दिया ६५
९६ कयामत को लोग अन्धे बहरे गूंगे उठेंगे ६५
९७ कयामत को लोग देखते सुनते बोलते उठेंगे ६५
९८ कुरान में कोई ऐब नहीं है ६६
९९ खुदा का अज्ञान ६६
१०० बहिश्त में सोने के कंकण व हरे रेशमी कपड़े मिलेंगे ६६
१०१ खुदा ने शैतानों की मदद क्यों नहीं ली ६७
१०२ सूरज डूबने की जगह कीचड़ का तालाब है ६७
१०३ जन्नत में सुबह शाम खाना मिलेगा ६७
१०४ पुरानी बातों को ही कुरान में दोहराया गया है ६७
१०५ कुरान आसान कर दिया ६८

१०६	जमीन आसमान का एक पिण्ड था	६८
१०७	खुदा ने शर्मगाह में रूह फूंक दी	६८
१०८	आसमान का लपेटना	६९
१०९	अल्लाह की मदद करो	६९
११०	आसमान गिरने से रुका है	६९
१११	शरीर के अंग गवाही देंगे	७०
११२	लोडियों से व्यभिचार जायज	७०
११३	आसमान में ओलों के पहाड़ हैं	७०
११४	जन्नत में बालाखाने मिलेंगे	७१
११५	इगलामबाजी अरब से चालू हुई	७१
११६	खुदा ने मकर किया (मक्कार है)	७२
११७	जमीन से एक जानवर निकलेगा	७२
११८	पहाड़ उड़ते फिरेंगे	७२
११९	मुहम्मद साहब बे पढ़े लिखे थे	७३
१२०	कयामत का फैसला हजार साल में होगा	७४
१२१	खुदा ने सभी को ठीक सूझ क्यों नहीं दी	७४
१२२	मुहम्मद की बीबियों को खुदा की धमकी	७५
१२३	खुदा ने व्यभिचार को औरतें दी	७५
१२४	खुदा की कसम खाने वाला कुरान में कौन था	७५
१२५	चिड़ियों ने फौज को मार डाला	७६
१२६	फरिश्तों के पंख हैं	७६
१२७	खुदा ने हर बात लिख ली है	७६
१२८	सूरज चांद को नहीं पकड़ सकता है	७७
१२९	कयामत के दिन फैसला किताबों से होगा	७७
१३०	खुदा का जमीन आसमान से बातें करना	७७
१३१	बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दो	७८
१३२	कुरान में झूठ का प्रवेश नहीं है	७८
१३३	खुदा शैतान पीछे लगा देता है	७८

१३४	खुदा का गुस्सा होना	७९
१३५	हर आदमी का हाल दो-दो फरिश्ते लिखते हैं	७९
१३६	खुदा ने गुमराह किया	८०
१३७	खुदा का दफ्तर	८०
१३८	कुरान मुहम्मद ने बनाना मान लिया	८०
१३९	जन्नत में दूध शराब और शहद की नहरें	८१
१४०	लड़ो या वे मुसलमान हो जावें	८१
१४१	अरबी खुदा ने लूटें कराई	८२
१४२	खुदा का न थकने का ब्यान	८२
१४३	खुदा ने आसमानों को बाहुबल से बनाया	८३
१४४	अपनी पूजा का भूखा खुदा	८३
१४५	खुदा जमीन पर उतर कर आया	८३
१४६	खुदा जन्नत (स्वर्ग) में रहता है	८४
१४७	सूरज निकलने व डूबने की जगह	८४
१४८	खुदा को कर्ज दो दूना मिलेगा	८५
१४९	औरतों को चेली बनाने की स्वीकृति	८५
१५०	ईसा के बाद अहमद आवेगा (गलत है)	८५
१५१	कसमें तोड़ डालने का आदेश	८५
१५२	गैर मुस्लिमों से जहाद करो	८६
१५३	खुदा के तख्त को आठ फरिश्ते उठाये होंगे	७६
१५४	खुदा कितनी दूर रहता है	८६
१५५	खुदा ने सबके गले में भाग्यपत्र बांध रखा है	८७
१५६	आसमान में चौकीदार हैं	८७
१५७	सूरज और चांद जमा किये जायेंगे	८७
१५८	सूरज लपेटना और तारे झाड़ना	८७
१५९	खुदा के पास पृथक-पृथक रजिस्टर रहते है	८८
१६०	आसमान व जमीन खुदा की बात सुनेंगे	८८
१६१	बाल बच्चे भी जन्नत में जायेंगे	८८

१६२ कुरान लोहे महफूज पर खुदा ने लिख रखा है ८९
१६३ आसमान में दरवाजे किवाड़े भी हैं ८९
१६४ दोजख में आंतें भी गल जावेंगी ८९
१६५ यह खुदा की कसम किसने खाई (खुदा ने या पैगम्बर ने) ९०
१६६ कुरान फरिश्ते का पैगाम है ९०
१६७ खुदा घेर लिया जावेगा ९०
१६८ खुदा के प्रगट होने पर पहाड़ चूर चूर हो गया ९०
१६९ खुदा कयामत के दिन का मालिक है ९१
१७० खुदा को गूंगे बहरों से घृणा है ९१
१७१ खुदा ने खालों से डेरे बनाये ९८
१७२ जमीन और पहाड़-उठाकर तोड़े जायगे ९२
१७३ खुदा बहुत ऊंचा है ९२
१७४ खुदा बिना कारण रोजी कम या ज्यादा कर देता है ९३
१७५ क्या खुदा ईमानदार परीक्षक था ९३
१७६ जन्नत के नजारे ९४

कुरान पर हमारे प्रश्न

प्रश्न १—जब खुदा जन्नत में रहता है तो जन्नत खुदा की अपेक्षा लम्बाई चौड़ाई में बड़ी साबित हो गई। खुदा एक स्थान पर रहता है तो आकाश भी खुदा से बड़ा हो गया। तब खुदा से बड़ा दुनिया में कोई नहीं है यह बात गलत होगई? खुदा सर्व व्यापक (हाजिर नाजिर) भी नहीं रह गया? कुरान का यह आयत खुदा की महानता पर बट्टा लगाती है।

प्रश्न २—यदि तख्त पर खुदा बैठता है तो तख्त खुदा से बड़ा होगा। यदि खुदा बड़ा होगा तो तख्त के इधर उधर लटकता रहेगा? बतावें कि तख्त बड़ा है या खुदा?

प्रश्न ३—खुदा जब फौज लेकर लड़ने गया तो वह मदद के लिये फौजों का मुहताज रहा। इन्सान के मुकाबिले पर खुदा सेना के साथ लड़ने जावे तो वह खुदा कादिरे मुतलक (सर्व शक्तिमान) कैसे रहा?

प्रश्न ४—क्या बेजान पदार्थ भी डर सकते हैं? डरने के लिये चेतनता की आवश्यकता होती है। कुरान की इस आयत को उचित होना साबित करें

प्रश्न ५—आसमान की व्याख्या करें?

प्रश्न ६—आग जिस के सहारे जलती है उसे ईधन कहते है। दोजख की आग इन्सान को जलावेगी अतः वह ईधन नहीं हुआ? पत्थर से मतलब क्या पत्थर के कोयलो से है या पहाड़ी पत्थरों से है?

प्रश्न ७—मनुष्य बेजान कब होता हैं। गर्भ के अन्दर या गर्भ से बाहर आने पर भी बेजान मानना चाहिये? कुरान की इस आयत को खुलासा करें।

प्रश्न ८—खुदा द्वारा सात आकाश बनाये जाने से पहिले इस अनन्त पोल स्थान में क्या भरा था और अब वह कहां गया? यदि कुछ भरा था तो वह कब से था? क्या वह खुदा की ही तरह अनादि था!

प्रश्न ९—खुदा ने गोश्त स्वयं पकाया था या किसी होटल में पकवाया था। खुदा ने अंगूर रबड़ी हलवा पूड़ी के थाल क्यों नहीं उतारे थे। क्या खुदा भी गोश्त खाना पसंद करता है।

प्रश्न १०—जब हर एक के कर्मों का फैसला कयामत के दिन होने का कुरान का दावा है तो खुदाने अपने ही उसूल को तोड़ कर इन्सान को बन्दर सुअर क्यों बना दिया जब खुदा ही अपना कानून तोड़ता है तो उसकी किसी बात पर विश्वास कैसे किया जावे?

प्रश्न ११—जो खुदा आगे की बातें या मनुष्यों के दिलों की कमजोरी को न जान सके क्या वह सर्वज्ञ खुदा हो सकता है। कुरान में खुदा को सर्वज्ञ कई स्थानोंपर लिखा है वह दावा इस प्रमाण से गलत साबित हो गया।

प्रश्न १२—जो खुदा अपनी ही प्रजा (स्त्रियों) पर जुल्म ढाने उन से व्यभिचार करने बलात्कार करने का हुक्म दे क्या वह जालिम व दुष्ट नही है?

प्रश्न १३—दिन में न खाना और रात में खाना इस रिवाज को स्वास्थ विज्ञान के आधार पर सही साबित करें।

प्रश्न १४—खुदा ने रोजो में औरतों से विषय भोग करने पर पहिले पाबन्दी क्यों लगाई थी जो उसे बाद में तोड़नी पड़ी। क्या इससे खुदा की अज्ञानता प्रगट नही होती है।

प्रश्न १५—अपनी बीबियों से पीछे से संभोग करना क्या को शराफत की आज्ञा खुदा ने दी?

प्रश्न १६— क्या इगलाम बाजी की बुराई कुरान ने ही नही फैलाई है।

प्रश्न १७—झूठी कसमों पर खुदा सजा नहीं देगा इस घोषणा से खुदा ने मुसलमानों को दुनियां में अविश्वास योग्य घोषित करके इस्लामकी क्या बहतरी की है? उनको झूठी कसमें खाने का प्रोत्साहन ही मिला है।

प्रश्न १८—इस आयत में कुरान सुनाने वाला दुसरा खुदा है (या कुरान लेखक मुहम्मद है) यह स्पष्ट किया जावे। दूसरा खुदा कहाँ रहता है। क्या करता है ?

प्रश्न १९—जब खुदा कर्ज लेकर कुरान में दुगना देने (शतप्रतिशत सूद देने) का वायदा करता है तो सूद खाना या देना हराम कैसे होगा।

प्र० २०—खुदा ने अरबी जाहिलों को पैदा करके अपनी अकलमन्दी का सबूत दिया है या जहालत का। जब स्वयं जाहिल पैदा किये तो उन्हें गाली क्यों दी।

प्रश्न २१—मुल्जिम को पकड़ कर बेवस कर देने के बाद उस पर दया की जाती है पर अरबी खुदा का दोजख की भट्टी में भूनते समय भी काफ़िरों को ७० हाथ लम्बी जंजीर से बांधना क्या उसकी बेरहमी का सबूत नहीं हैं। क्या ऐसा खुदा रहोम कहा जा सकता है ?

प्रश्न २२—यदि 'हो' कहने से ही सब कुछ बन जाता था तो विचारे खुदा को छः दिन रात दुनियां बनाने की कड़ी मेहनत क्यों करनी पड़ी। क्या इस छूमन्त्र को खुदा उस वक्त भूल गया था।

प्रश्न २३—खुदा ने ऐसी बेसर पैर की गलत बात कुरान में क्यों कही थी ?

प्रश्न २४—क्या धोखेबाजी, मक्कारी करना खुदा की सिफ़ात (गुण) है या अवगुण है। जो मक्कार हो क्या वह खुदा भी हो सकता है ?

प्रश्न २५—खुदा के इस आदेश का परिणाम हैकि गैर मुस्लिम भी मुसलमानों का ऐतबार नही करते हैं। प्रजा में फूट डालने वाला अरबी खुदा भी क्या खुदाई के काबिल माना जा सकता है।

प्रश्न २६—खुदा ने पहिले यहूदी दीन पसन्द किया। फिर ईसाई मत का प्रचारक बना। अब दोनों को गलत बता कर इस्लाम का वकील बन बैठा है। आगे किसी और नये दीन का प्रचारक बन जावेगा ऐसे रोज नया मजहब बदलने वाले खुदा पर कोई कैसे विश्वास कर सकता है।

प्र० २७–जब सब की उम्र पहिले ही से निश्चित है तो खुदाने लोगों को कत्ल करने, लड़ने को फ़रिश्तों की फौजें लेकर खुद लड़ने जाने इस्लाम स्वीकार न करने पर कत्ल करने, काफिरों व मुशरकीन को मार डालने, लोगों को दोजख आदि में झोंकने, मनुष्यों को गुस्सा होकर बन्दर बनाने आदि की गलती क्यों की? क्यों हत्या के आदेश दिये? क्या खुदा भूल गया या कि बिना समय आये कोई भी मर नहीं सकता है?

प्र० २८–जब खुदा लोगों को इसलिये ढील देता है कि वे गुनाह खूब करें तो असली गुनहगार अथवा लोगों के गुनाहों में प्रमुख साझीदार खुदा हुआ या नहीं। यदि खुदा लोगों को गुनाह करते ही रोक देवे तो लोग बुराई से बच सकेंगे। क्यों इसलाम यह मानने को तैयार नहीं है कि लोग कर्म करने में स्वतन्त्र हैं और फल भोगने में परमात्मा के आधीन हैं। लोगों को अपनी मर्जी के अनुसार कर्म करने से रोकना खुदा की ताकत से बाहर है क्योंकि इससे उनकी स्वतन्त्रता नष्ट होगी और कर्मों की उनकी जिम्मेवारी नही रहेगी?

प्र० २९—दुनियाँ जीवों का कर्म क्षेत्र भोग क्षेत्र तथा कर्म करने की अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग करने का उत्तम स्थान है। धोखे की जिन्दगी तो इस्लामी जन्नत में होगी जहां हूरें, गिलमें, बेशुमार औरतें शराब खोरी आदि का लालच दिया गया है? साबित करे कि जन्नत की काल्पनिक जिन्दगी से उस दुनियां की जिन्दगी में क्या कमी है?

प्र० ३०—अगर देह में ताकत हो कमर तगड़ी हो तो चाहे जितनी औरतों से रोज भोग करते रहो, इसकी छूट देने से खुदा ने व्यभिचार प्रोत्साहन दिया है। यदि ताकत न होगी तो ज्यादा औरतों को कोई क्यों फांसेगा। इस आयत को कुरान में लिखने से खुदा का क्या मंशा था, खुलासा करें।

प्र० ३१—क्या इसका मतलब यह है कि यदि किन्हीं दो दोस्तों की एक दूसरे की बीबी पर तबियत हो तो वे आपस में औरतों की अदला

बदली करलें और उनसे दिल भर जावें तो फिर आपस में बदल कर अपनी अपनी औरतों को ले लेवें ? क्या कुरान की नजर में औरतें जानवरों की तरह हैं जो उनकी अदला बदली की जा सकती है ? क्या बीबियों की अदला बदली बिना तलाक के सम्भव है ?

प्र० ३२–सगी मां के साथ ज़िना या निकाह का निषेध खुदा ने तौरात जबूर इन्जील नाम की अपनी पहली किताबों में क्यों नहीं किया था। खुदा को यह बात इतने दिन बीतने पर कुरान में ही लिखाने की क्यों सूझी थीं ? क्या इसके मानी यह हैं कि अरब के लोग अपनी माँ को भी अय्याशी के लिये नहीं छोड़ते थे ? क्या खुदा ने अरब वालों को उसी बुराई की वजह से तो 'जाहिल' नहीं घोषित किया था ?

प्र० ३३—पाक होने के इस अजीब तरीके को दलील देकर खुलासा करें ?

प्र० ३४–खालें जलनेके साथ जब मांस भुन जावेगा तो मुर्दे जिन्दा कैसे रह सकेंगे। खुदा अपनी ताकत से ऐसा क्यों नहीं करेगा कि मुल्जिमों को गरमी तो खूब लगती रहे पर खालें जलने न पावे, तो खुदा मेहनत से बच जावेगा।

प्र० ३५—क्या इससे अरबी खुदा का मुसलमानों के साथ पक्षपात व दूसरों से शत्रुता साबित नहीं होती है।

प्र० ३६–बतावें कि खुदा और तहसीलदार की कचहरी में क्या अन्तर होगा। क्या लोगोंको अपना बैरिस्टर खड़ा करने की छूट होगी। यदि किसी तगड़े बैरिस्टर ने खुदा को हटा दिया तो खुदा की क्या इज्जत रहेगी।

प्र० ३७–जब कलमा कुरानमें नहीं हैं और मौजूदा कलमा मुहम्मद की शिरकत वाला होने से कुरान के विरुद्ध है तो उसे पढ़ने वाले क्यों काफिर नहीं माने जाने चाहिये। क्या बता सकते हैं कि कुरान में खुदा ने कलमा क्यों नहीं दिया है जब कि बेकार की सैकड़ों आयतें उसमें लिखा दी हैं ?

प्र० ३८—बतावें कि खुदा को सच्चा माने या धोखेबाज़ माने और क्यों। कुरान में परस्पर विरुद्ध बातें क्यों लिखी हैं। क्या इससे कुरान की इज्जत में बट्टा नहीं लगता और वह अविश्वासनीय नहीं हो जाता है।

प्र० ३०—क्या संसार में अशान्ति कुरान की इसी शिक्षा का परिणाम नहीं है। क्या प्रजा में घृणा फैलाने वाली किताब भी खुदाई हो सकती है।

प्र० ४०—खुदाने अपनी किताब इन्जील का खण्डन करके गुनाह किया है या अपनी शान बढ़ाई है। यह परस्पर विरोध दोनों किताबों में क्यों है।

प्र० ४१—कुरान पा० २६ सूरे काफ रु०२ आ० २८ में खुदाने घोषणा की है कि "मेरे यहां बात नहीं बदली जाती है।" और उस स्थल पर खुदा ने अपना हुक्म बदल डाला क्या इससे खुदा का झूँठा होना साबित नहीं होता है। खुदा जबान का पाबन्द क्यों नहीं था।

प्र० ४२—खुदा की यह घोषणा उसकी अपनी बनाई किताब इन्जील? यूहन्ना ४।६ की घोषणा के विरुद्ध है जिसमें लिखा है परमेश्वर ने अपन इकलौते पुत्र को जगत में भेजा कि हम उसके द्वारा जीवन पायें। ईसा को इन्जील में खुदा का इकलौता बेटा बताया है और कुरान में इसका खण्डन किया है। बतावें दोनों में से खुदा की कौन सी किताब झूठी है और क्यों?

प्र० ४३—बतावें खुदा को किस व्यौपार या योजना के लिये कर्ज लेने की जरूरत आ पड़ी है और यदि कर्ज दिया भी जाये तो वह मारा नहीं जावेगा उसकी जमानत व गारन्टी कौन करेगा?

प्र० ४४—लोगों में बुराई पैदा करना शराफ़त का काम है या शैतानियत का? जो खुदा लोगों को बुरे रास्ते पर डाले उससे भलाई की आशा कैसे की जा सकती है।

प्र० ४५—खुदाई किताब इन्जील के हुक्म का पालन करने वाले काफिर

हैं या खुदाई किताव कुरान को मानने वाले काफिर हैं। कुरान ने दोनों किताबें खुदाई मानी हैं।

प्र० ४६–बिना वजह किसी को इनाम या सजा देने वाले मजिस्ट्रैट या खुदा को यदि लोग अत्याचारी या पागल कहें तो वे गलत क्यों कर होंगे।

प्र० ४७–जब खुदा ने खुद ही सबको मुसलमान बनाना न चाहा तो फिर कुरान में लोगों को लड़ लड़कर मुसलमान बनाने का हुक्म क्यों दिया।

प्र० ४८–यहूदी-ईसाई–मुशरिक-गैर मुस्लिम सभी को जब खुदा ने मुसलमानों का दुश्मन घोषित कर दिया और सभी से नफरत करने को कहा है तो उसका मतलब है कि खुदा मुसलमानों का दुनियां में बहिष्कार कराना चाहता था। बतावें तब अरबी खुदा मुसलमानों का दुश्मन हुआ या दोस्त। यदि दोस्त हुआ तो कैसे ?

प्र० ४९–जब खुदा के दो हाथ हैं तो पैर सर मुँह कितने२ हैं। क्या वह आदमी जैसी शक्ल का है ?

प्र० ५०–कुरान पा. १४ सूरे नहल रु. ६ आ. ६-७ में खुदाने शराब की प्रशंसा की है और यहां निन्दा की है। बतावें खुदा की परस्पर विरोधी बातें जिस किताब में हों उसे प्रमाणिक कैसे माना जा सकता है ? परस्पर विरोधी बातें कहने वाले बुद्धिमान होंगे या ना समझ माने जावेंगे।

प्र० ५१–इन्जील के विरुद्ध होने से यह कुरान की बात अमान्य क्यों नहीं है।

प्र० ५२–जब सब कुछ खुदा की मर्जी पर निर्भर करता है तो खुदा सबको सीधे रास्ते पर क्यों नहीं लगा देता। क्या उसे किसी का डर लगता है।

प्र० ५३–क्या खुदा की यादगार इतनी कमजोर है कि उसे हर बात डायरी में लिख कर रखनी पड़ती है ताकि वक्त पर भूल न जावें।

प्रश्न ५४--जब खुदा ही लोगों को बिना वजह भटकाता है तो वह डबल शैतान हुआ या नहीं ? तब मुसलमान शैतान को दोष क्यों देते हैं ?

प्रश्न ५५—क्या खुदा ने सारे पैगम्बर अरब में ही भेजे थे या दुनियां के और देशों में भी भेजे थे ? भारत, चीन, अफ्रीका, अमरीका में कौन २ से पैगम्बर आये थे ?

प्रश्न ५६—खुदा को अरबी लोगों से क्या दुश्मनी थी कि उसने उनको ही डराने को कुरान भेजा था ? उसने डराने के बजाय अच्छी नसीहतों वाली प्रेम प्रचारक किताब क्यों नहीं भेजी जिससे सभी उससे प्रेम करने लगते ?

प्रश्न ५७—जब लोग खुदा की मर्जी से ही मुशरिक बने थे तो उनको कत्ल करने के हुक्म कुरान पारा १० सूरे तौबा रुकू १ आयत ५ में कुरान के अबी ज़ालिम खुदा ने क्यों दिये हैं ? बतावें कि इस खुदा का दिमाग सही था या नहीं ?

प्रश्न ५८—जब बदमाशी (जुल्म) करने के लिये ही जालिम लोग खुदा ने पैदा किये हैं और वे जो भी गुन्डागर्दी करते हैं वह खुदा के हुक्म से ही करते हैं तब फिर सारे कुरान के कायदे कानून सजायें आदि वाली आयतें क्या लोगों को धोखा देने को लिखी गई हैं। खुदा फ़साद को पसन्द नहीं करता कु० पा० २० सूरे कससरुद आ० ७७ में खुदा ने बिलकुल गलत बोला है कि वह फ़साद को पसन्द नहीं करता है। जिस कुरान में परस्पर विरोधी बातें लिखी हैं। उसे खुदाई बताना खुदा का अपमान करना क्यों नहीं माना जावे ?

प्रश्न ५९—खुदा की ख्वाहिश है कि दुनियां के सभी लोग इस्लाम से बिलकुल दूर रहें, इसी लिये लोग इसे नहीं चाहते हैं। आर्य समाज इस्लामी सिद्धान्तों का जो खण्डन करता है तथा हम जो कुछ उस पर लिखते हैं यह खुदा ही की मर्जी से लिखते हैं। बदकिस्मत हैं वे लोग जो इस्लाम में फंसे हुए हैं। दुनियां की ३॥ अरब की आबादी इस्लाम

से दूर रह कर प्रसन्न है जब कि अरब के इस्लामी देशों को खुदा यहूदियों से तबाह करा रहा है। मुसलमान उल्मा सावधान रहे क्यों कि खुदा गुमराहों की ही तबाही चाहता है, शरीफों की नहीं, उनको तो तरक्की देता है इसलिये ज्यादा लोगों को तरक्की दे रहा है।

प्रश्न ६०—जन्नत व दोजख में तो एकसा बर्ताव सभी से होगा, फिर ये दर्जे कहां होंगे ? कहीं इसका इशारा पुनर्जन्म से तो नहीं है ? कुरान में तो दर्जों का हाल दिया नहीं है।

प्रश्न ६१—फर्मावर्दार कौन होता है, समझदार, जानदार या बेजान ? इसे खुलासा करें ?

प्रश्न ६२—दोजख के ही लिये लोगों को पैदा करना, उन्हें दोजख में तड़फाना और खुश होना क्या यह खुदा को जालिम साबित नहीं करता है ?

प्रश्न ६३—क्या खुदा और पैगम्बर पर इतनी गरीबी भुखमरी आ पड़ी थी कि चोरी डकैती व लूट कराकर उससे दोनों अपनी गुजर करते थे ?

प्रश्न ६४—यहूदी खुदा के पास इन्जील में बीस करोड़ घुड़सवार फौजें बताई हैं, अरबी खुदा के पास कितनी फौजें थी यह खुलासा बताया जावे ? ये फौजें किस २ तरह की हैं और कहां रहती है ? इनके राशन आदि की क्या व्यवस्था है ?

प्रश्न ६५—कुरान वालो ! जमाना बदल गया है। पाकिस्तानी फौजें भारत के काफिरों से तीन वार पिट चुकी हैं। इस्राएल ने अरबी मुसलमानों को रोंद डाला है। खुदा की फरिश्तों की फौजें भी पिटकर भाग चुकी हैं। अतः मुसलमानों को दूसरों के खिलाफ भड़काना छोड़कर शराफत के उपदेश दे ताकि आपस में प्रेम पैदा हो सके।

प्रश्न ६६—स्पष्ट किया जावे कि यह आयत किसी शख्श या मुहम्मद ने लिखी थी या इस्लाम दो खुदा मानता है ?

प्रश्न ६७—यदि ऐसा ही उपदेश काफिरों को भी कोई देवे और

वे भी लड़ने पर कमर कस लेवें तो क्या इस्लाम का दुनिया में नाम निशान न मिट जावेगा ? ऐसे लड़ाने भिड़ाने वाले उपदेश जिस किताब में हों वह संसार के लिये दुखदाई होगी या सुखदायी होगी ? खुदा भी फिसादी व फसाद पसन्द था क्या ?

प्रश्न ६८—अर्श पर खुदा बैठता है यदि लेटने की उसकी इच्छा हो जावे तो उसके लिये क्या कोई सोफासैट पलंग आराम कुर्सी आदि की भी व्यवस्था है या नहीं ? घूमने के लिए सवारी आदि का भी प्रबन्ध होता है या नहीं ? तख्त की लम्बाई चौड़ाई कितनी है तथा वजन कितना होगा ?

प्रश्न ६९—खुदा ने पुरानी किताबों की तफसील कुरान क्यो लिखा कोई नई उत्तम किताब ज्ञान विज्ञान की क्यों नहीं लिखाई ? पुरानी आल्हा गाना कोई खूबी की बात नही है। न उससे खुदा की शान बढ़ी है। पुरानी किताबों को नई जबान में खुदा ने नकल कर दिया है यह इस आयत से स्पष्ट है ? ऐसा तो हर कोई अक्ल मन्द या शायर कर सकता था।

प्रश्न ७०—जिस किताब में ज्ञान विज्ञान की हर बात हो वह रोशन किताब कौनसी है ? यदि वह खुदा के पास छिपी रखी है तब उसकी प्रशंसा करना बेकार है, क्योंकि दुनियां को उससे कोई लाभ नहीं। यदि दुनियां में है तो उस विलक्षण किताब का जरूर पता बताया जावे ?

प्रश्न ७१—खुदा यदि लोगों के दिलों पर मुहर न किया करे तो उसका क्या नुकसान होगा ?

प्रश्न ७२—जब खुदा ही इस्लाम का प्रचार नहीं चाहता है तो कुरान व इस्लाम का प्रचार करने वाले मुसलमान व उनकी संस्थायें कुफ करने से काफिर क्यों नहीं हैं ?

प्रश्न ७३—खुदा एक सूरत पेश करने की पहिली शर्त पर कायम न रह कर दस सूरतो की शर्त क्यो पेश कर बैठा, इसका रहस्य खोल

कर बताया जावे ? पहिले दस की शर्त लगाकर फिर घटाकर एक को रखना तो ठीक था पर एक से एक दम बढ़ाकर दस कर देना रहस्य पूर्ण है। रहस्य खोला जावे ?

प्रश्न ७४--गुन्डों का सामना करने के बजाय अपनी बेटियाँ व्यभिचार को पेश करना, उस जमाने के लोगों से इग़लामबाजी का जारी होना, इन गन्दी बातों को कुरान में लिखा कर खुदा ने लोगों को कौन सी नसीहत दी है ? क्या खुदा यह सिखाना चाहता था कि ऐसे मौके पर दूसरे लोग भी अपनी निर्दोष बेटियां गुन्डों को दे दिया करें और उनका मुकाबिला न किया करें ? आखिर यह गन्दी कथा कुरान में क्यों दी गई है ?

प्रश्न ७५—क्या इससे स्पष्ट नहीं है कि खुदा का उद्देश्य कुरान उतारने का केवल अरब वालों को डराना मात्र था ? यह दुनियाँ के लिये होता तो उसे हर मुल्क में वहीं की भाषा में बनाया गया होता ताकि सारी दुनियां के लोग उसे पढ़ व समझ सकते।

प्रश्न ७६— पढ़े लिखे मौलाना इस आयत को खुलासा करें कि (तम्बू की तरह) सात आसमान कैसे ऊँचे खड़े किये गये हैं ?

प्रश्न ७७—वह कुरान पेश करें जिससे मुर्दे जो उठें, बोलने लगें, पहाड़ चलने लगें व ज़मीन फट जावे ? जब तक ऐसा कुरान पेश नहीं होता है मौजूदा कुरान नकली फर्जी स्वयं ही साबित हो जाता है। इसका प्रचार न किया जावे तो उत्तम होगा। मुर्दे न सही यदि किसी कुरान से मरी हुई मक्खी जिन्दा हो कर उड़ने लगेगी तो भी हम उसे असली खुदाई कुरान मान लेंगे।

प्रश्न ७८—खुदा ने असली किताब दुनियां में क्यों नहीं भेजी ताकि लोग उससे फायदा उठा सकते ? यह नकली किताब क्यों भेज दी है ? उस असल किताब से खुदा क्या फायदा उठाता है ?

प्रश्न ७९—सूरज का चक्कर खाना विज्ञान से गलत है। इसे सही साबित करे ?

प्रश्न ८०—इतिहास से साबित करें कि सूरतें फ़ातिहा (नमाज) इब्राहीम के जमाने में मुहम्मद से हजारों साल पेश्तर भी मौजूद थी व इब्राहीम मुसलमान था ?

प्रश्न ८१—खुदा ने फरिश्तों को भेजने की बात पहिले कही थी यहां अब इन्कार करता है। दोनों में खुदा का कौन सा दावा गलत है और क्यों ?

प्रश्न ८२—आसमान में बुर्ज होने की बात विज्ञान से साबित करें ?

प्रश्न ८३—तारे भी टूटते हैं, यह भी विज्ञान से साबित करें ?

प्रश्न ८४—पहाड़ों को जमीन से प्रथक बनाकर उसमें गाढ़ा गया यह साबित करें ?

प्रश्न ८५—कुरान का यह दावा कि कुरान जैसी आयतें कोई नहीं बना सकता है क्या इस बात से गलत नहीं हो जाता है कि कुरान में शैतान ने ही अनेक आयतें बोलकर इस दावे को गलत साबित कर दिया है ?

प्रश्न ८६—जब सब का पहिली ही बार जन्म हुआ है तो पिछली जिन्दगी की बात कहना क्या खुदा का धोखा देना नहीं है जब कि कुरान पुनर्जन्म को नहीं मानता है।

प्रश्न ८७—कयामत करीब है, उसमें 'करीब' से क्या मतलब था ? कुरान को बने १४०० वर्ष बीतने पर भी करीब कयामत नहीं आई अतः आयत गलत साबित हो गई।

प्रश्न ८८—जब खुदा ही गुमराह करने वाला है तो पूँछ भी उसी से होगी कि भले आदमी तूने लोगों को गुमराह करके जो गुनाह किया है उसकी तुझे क्यों न सजा दी जावे ? इन्सान से पूछना महज पागलपन होगा क्योंकि खुदा ने उसे गुमराह किया था इन्सान ने खुद कोई गलती नहीं की थी ?

प्रश्न ८९—खुदा ने अपनी पहिली उतारी आयतों को गलत

अनुभव करके बाद को उन्हें अनेक स्थानों पर बदलडाला था इससे क्या यह स्पष्ट नहीं है कि खुदा बिलकुल ठीक बात को भी एक बार में नहीं लिखा सकता था। उसे अपनी पिछली बातों में लगातार संशोधन करना पड़ता था। इससे दो बातें साफ हो जाती हैं पिछली यह कि खुदा दूरन्देश नहीं था। दूसरी यह कि मौजूदा कुरान पहिली बार में उतरा पूरा सही कुरान नहीं है। यह संशोधितकटा छटा कुरान होने से अप्रमाणिक है।

प्रश्न ९०—कुरान को यदि जिब्रीला फ़रिश्ता लाया करता था तो एक बार जब लोगों ने उसे दिखाने को कहा था तब खुदा ने साफ इन्कार क्यों किया था कि हम फ़रिश्ता नहीं उतारा करते हैं (देखो कु० पा० १४ सूरे हिज्र आयत ८ इस का प्रश्न न ८१) खुदा की दोनों में से कौन सी बात गलत मानी जाबे और क्यों ?

प्रश्न ९१—यदि खुदा का यह दावा सत्य है तो भारत-अमरीका चीन-जापान आदि सैकड़ों देशों के रहने वालों को खुदा कोई सजा नहीं दे सकेगा, क्यो कि उसके सारे पैगम्बर केवल अरब के कबीलो में ही पैदा हुए थे। संसार के अन्य देशों में कोई भी पैगम्बर खुदा ने क्यो नहीं भेजा था। यदि भेजे थे तो उनके नामों का कुरान में उल्लेख क्यों नहीं किया गया है।

प्रश्न ९२—लोगों को तबाह करने के लिये खुदा जो गन्दे हथकण्डे इस्तैमाल करता है उनमें से एक यह उसने बताया है। ऐसे कुकर्म करने वाले को न्यायी खुदा कैसे माना जा सकता है ?

प्रश्न ९३—कल्मे में मुहम्मद को शरीक कर लेने से उसका पढ़ना इस आयत के विरूद्ध क्यों न माना जावे।

प्रश्न ९४—मुसलमानों को कुरान का प्रचार बिना खुदा से पूछे नहीं करना चाहिये क्यों कि खुदा नही चाहता कि कुरान का प्रचार गैर मुस्लिमों में किया जावे। यदि वह चाहता तो परदे नही लगता। कुरान का प्रचार गैरों में इस आयत के विरुद्ध क्यो न माना जावे।

प्रश्न ९५—खुदा यह बात भी क्यों न जान सका कि लोग आगे चलकर हमारे चमत्कारों को झुठला देंगे और इससे उनकी सरकशी बढ़ेगी। अरबी खुदा की नातजुर्बेकारी क्या इससे प्रगट नहीं है?

प्रश्न ९६ व ९७-कुरान में दोनों परस्पर विरुद्ध बातें क्यों लिखी गई है। इन में कौनसी बात झूठ है और क्यों?

प्रश्न ९८ —कुरान की यह शेखी इसलिये अमान्य है कि इस प्रश्नावली के सभी प्रश्न कुरान में ऐब (कमजोरी) साबित करने को काफी है?

प्रश्न ९९—कुरान की यह आयत क्या यह नहीं प्रगट करती है कि खुदा सब कुछ नहीं जान पाता है जब तक कि वह खुद जांच न करले?

प्रश्न १००-जन्नत में जेवर भी औरतों की तरह जन्नती लोग पहिनेंगे। पैरो में कानों में अंगुलियों में और कौन कौन से जेवरपहिनेंगे यह भी बताया जावे।

प्रश्न १०१—खुदा ने शैतानों की इस डर से मदद नहीं ली थी कि कही वे खुदा को ही गुमराह न कर देवें। बतावें कि खुदा का यह डर सही था या गलत।

प्रश्न १०२—सूरज डूबने की यह जगह कहां है जिसमें कीचड़ भरी है। स्पष्ट बतावे।

प्रश्न १०३—जन्नत में यदि किसी बच्चे को बीच में तीसरी बार भूख लगी तो क्या वह भूखा ही रोता रहेगा या शराब पी कर पेट भरेगा?

प्रश्न १०४—जब कि पहिली किताबो तौरात जबूर और इन्जील में दी गई पुरानी बातों को ही कुरान में खुदा ने नकल किया है तो कुरान की कोई इज्जत नही रह गई न उसकी कोई जरूरत पुरानी किताबों के मौजूदा रहते बाकी रह जाती है। तब कुरान क्यों उतार गया यह बतावे?

प्रश्न १०५—असल कुरान खुदा के पास किस कठिन भाषा में लिखा रखा है बताया जावे ?

प्रश्न १०६—पोला आकाश और ठोस जमीन का पिण्ड कैसे बन सका था साबित करें ?

प्रश्न १०७—पवित्रात्माकुवारी लड़की मरियम की फुर्ज (शर्मिगाह) में खुदा में रूह फूंक कर उसकी पवित्रता भंग करके पाप क्यों किया ? रूह उसकी नाक में होकर खुदा ने क्यों नहीं फूंकी ? फूक से गर्भ रहना भी साबित करें ?

प्रश्न १०८—जो कुछ चीज ही नहीं है उसे कैसे लपेटा जा सकता है, स्पष्ट करें ?

प्रश्न १०९—खुदा में इतनी कमजोरी क्यों है कि वह इन्सान की मदद मांगने पर भी मजबूर हो गया ? बतावे कि खुदा की किस बात में मदद की जावे ?

प्रश्न ११०—आसमान गिरने से रुका है, यह वाक्य क्यों अज्ञानता पूर्ण न माना जावे जब कि आसमान शून्य है, कोई ठोस पदार्थ नहीं है ?

प्रश्न १११—व्यभिचारी स्त्री पुरुषों की गुप्तेन्द्रियाँ किस भाषा में बोलेंगी ? उस आयत को खुलासा किया जावे ? क्या वे अरबी की शायरी में बोलेंगी ?

प्रश्न ११२—जब जिना करने की खुली छूट इस्लाम में है तो उसे व्यभिचार प्रधान मजहब यदि माना जावे तो क्यों कर गलत होगा ?

प्रश्न ११३—आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हैं यह बात साबित की जावे ? अन्यथा ऐसी बात कहना खुदा की अज्ञानता को प्रगट करता है।

प्रश्न ११४—जन्नत में कई मंजिलें मकानात पत्थर, लकड़ी, सीमेंट या कच्ची ईटों के बने हैं या फूंस के छप्परों जैसे हैं ? क्या वहां

सभी लोगों के लिये अलग २ कमरे अलाट (नियत) होंगे ? उनमें क्या क्या आराम होंगे ?

प्रश्न ११५–बतावें कि इगलामबाजी क्या सारे अरबमें जारी थी ? क्या अब भी यह बुराई वहां के मुसलमानों में जारी है ? यह बुराई इस्लाम में जायज है या नहीं ? हकबातुलमुसलमीन पुस्तक में (सफा ४० व ४१ पर) बतीफीउल्दब्र (गुदा मैथुन) के जायज होने की बात लिखी है वह सही है या नहीं ?

प्रश्न ११६—कुरान ने खुदा को मकर करने वाला (मक्कार) लिखकर खुदा की इज्जत बढ़ाई है या उसकी शान में बट्टा लगाया है ?

प्रश्न ११७—ज़मीन से जानवर निकल कर खुदा कयामत के फैसले में उससे क्या मदद लेगा ? वह जानवर नर होगा या मादा ? उसके दाढ़ी होगी या नहीं ?

प्रश्न ११८—पहाड़ों का उड़ना दलील से साबित करें ? यदि पहाड़ उड़ेंगे तो अरबी मुसलमानों का क्या हाल होगा वे भी उड़ेंगे या नहीं ? पहाड़ गिर पड़े तो उनका क्या हाल होगा ?

प्रश्न ११९—कुरान की भाषा बताती है कि मुहम्मद साहब बे पढ़े लिखे नहीं थे क्योंकि उन्होंने कहा है मैं खुदा की आयतें तुम्हें पढ़कर सुनाता हूँ (कु० पा० ११ सूरे हद आ० २) वे पढ़ा आदमी भी अरबी नहीं पढ़ सकता था। अथवा घोषणा करें कि कुरान की यह आयत गलत है ?

प्रश्न १२०—फैसले के लिये हजार साल क्यों लगेंगे ? 'कु०' कहकर फैसला पलभर में क्यों नहीं कर दिया जावेगा ताकि खुदा का वक्त बरबाद न हो ?

प्रश्न १२१—कुरान में लिखा हैकि उस समय के लोग भी मुहम्मद को शायर मानते थे (देखो पा० २३ सूरे साफ्फात आ० ३६ शायर बे पढ़ा लिखा नहीं हो सकता है यदि हो सकता है तो साबित करें ?

प्रश्न १२२—क्या इससे यह प्रगट नहीं होता कि बुढ़ापे में ज्यादा

शादियां करने मे मुहम्मद की बीबियां बदकार हो गई थी और खुदा को मजबूर होकर उनको बदकारी से बाज आने की धमकी देनी पड़ी थी ? बतावें कि खुदा ने ऐसी कमजोर चरित्र वाली औरतें पैगम्बर को क्यों व्याहने को दी थी ? क्यों खुदा पहिले से नहीं जान पाया था कि ये औरतें बदकार बन जावेंगी ?

प्रश्न १२३--क्या खुदा का पेशा जिना खोरी (व्यभिचार) के लिये औरतें पहुंचाना भी है ? खुदा ने चचा जात व बुआ जात बहिनों से शादी करना सभी मुसलमानों के लिये जायज क्यों नहीं किया ? केवल मुहम्मद के साथ पक्षपात क्यों किया। क्या अय्याशी के लिये लोंडियां अब भी मुसलमानों को खुदा (Supply) (पेश करता है) ?

प्रश्न १२४—क्या इससे यह साबित नहीं है कि कुरान या यह आयत खुदा के अतिरिक्त मुहम्मद या किसी दूसरे खुदा ने लिखी थी ?

प्रश्न १२५--यह आयतें हास्यास्पद क्यों न मानी जावें ? क्या उस वक्त के आदमी चीटी और हाथी मक्खी जैसे होते थे जो ४-६ रत्ती की कंकड़ियों से मर जाते थे ?

प्रश्न १२६--फ़रिश्तों की शक्ल कबूतर, ऊंट या कुत्ते जैसी है या आदमी जैसी है ? स्पष्ट करें कि ये विलक्षण जीव कहां रहते हैं तथा उनके होने में साबूत क्या है। उन्हें काल्पनिक क्यों न माना जावे ?

प्रश्न १२७—खुदा खुद लिखता है या कोई उसने क्लर्क या पेशकार इस काम के लिये नियत कर रखा है। हर बात लिखते रहने का उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न १२८--साबित करें कि सूरज चांद एक दूसरे को पकड़ने को दौड़ लगा रहे हैं ?

प्रश्न १२९--बतावें कि ये किताबें कानून की होंगी, खुदा के याद्दाश्त की डायरियां होंगी या लोगों के कर्मों के रजिस्टर होंगे ? यदि ये किताबें किसी तरह गुम हो जावें या शैतान मियां चुरा ले

जावें तो फैसला खुदा कैसे करेगा? क्या खुदा भी फैसले के लिये किताबों का मोहताज है?

प्रश्न १३०—साबित करें कि बेजान पदार्थों से बातें करना हो सकता है? जो कुछ चीज ही नहीं है जैसे आसमान, उससे बातें कैसे की जा सकती हैं और वह जवाब कैसे दे सकता है?

प्रश्न १३१—बुराई का बदला नेकी से देने को खुदा की बात, बुराई का बदला बुराई से देने के कुरान पा० २ सूरे बकर रु० २२ आ० १७८ के आदेश के विरुद्ध क्यों है? दोनों में से कुरान की कौन सी बात सही व कौन सी गलत है?

प्रश्न १३२—कुरान में झूट का प्रवेश नहीं है यह दावा क्यों न गलत माना जावे जब कि कुरान में आसमान में ओलों के पहाड़ जमे होने की बात (प्रश्न नं० ११३) कागज की तरह आसमान का लपेटना (प्रश्न नं० १०८), आसमान में बुर्ज है (प्रश्न नं० ८२) आदि अनेक स्थल सर्वथा काल्पनिक लिखे मिलते हैं?

प्रश्न १३३—जब लोगों को गुमराह करने को स्वयं खुदा उनके पीछे शैतान लगाता रहता है तो खुदा डबल शैतान हुआ या नहीं? गुनहगार दोनों में से कौन हुआ?

प्रश्न १३४—गुस्सा होना, स्वभाव से क्रोधी होना यह दिमागी बीमारी होती है। क्या खुदा भी उस बीमारी का शिकार है? होम्योपैथिक में कैमोमिला नाम की दवा खिलाने से यह बीमारी मिट जाती है? क्या आलिमाने कुरान खुदा बन्दे को इस दिमागी रोग से इस दवा को देकर रोग मुक्त करके उसका उपकार करने की कृपा करेंगे? इससे दुनियां का भी भला हो सकेगा। खुदा की दिमागी उत्तेजना शान्त हो जावेगी और फैसले ठंडे दिमाग से कर सकेगा।

प्रश्न १३५—इन दो फरिश्तों के हर व्यक्ति का हाल लिखते रहने की मिथ्या कल्पना को सत्य साबित करें?

प्रश्न १३६—बतावें कि गुमराह करने वाला खुदा मुल्जिम क्यों

नहीं है और जिसे उसने गुमराह किया उसे दोषी मानना अन्याय क्यों नहीं है ?

प्रश्न १३७-खुदा का दफ्तर, मुहाफिज खाना, कचहरी किस स्थान पर है ? पता लगाकर यह भी बतावें कि वह कहीं रूसी अमरीकी राकेटों से मिसमार तो नहीं हो गये ?

प्रश्न १३८—क्या मुहम्मद साहब का यह ब्यान मजबूर होकर सत्य को स्वीकर करना नहीं है ?

प्रश्न १३९—नहरों में दूध ऊंटनी, बकरी का होगा या किस जानवर का होगा ? शराब जौ या अंगूर की होगी या महुए की ? शहद चाशनी का होगा या बड़ी शहद की मक्खी का होगा ? और उन सबको तैयार या इकट्ठा कौन करेगा ? खुदा या फरिश्ते ?

प्रश्न १४०—जब खुदा ही लोगों को अपनी सारी ताकत लगाकर मुसलमान नहीं बना सका तो बिचारे मुसलमान किस गिनती में हैं जो लड़कर लोगों को मुसलमान बना सके ? इस्लाम का प्रचार उसकी खूबियों के आधार पर नहीं बन सकता था। क्या इसी लिये कुरान ने लड़कर लोगों को मजबूर करके इस्लाम स्वीकार कराने का आदेश दिया था ? जिस मजहब के गुणों को देखकर लोग उसे स्वयं स्वीकार करे वह अच्छा होगा या जिसे जबर्दस्ती स्वीकार कराया जाय वह अच्छा होगा ?

प्रश्न १४१—क्या इससे साबित नहीं है कि लूट के शौकीन गुन्डों को इस्लाम में भर्ती कराके निर्दोष प्रजा को लुटवा कर खुदा ने गुन्डा पन का कार्य किया था और मुहम्मद की सेना में लुटेरे भर्ती किये गये थे। क्या जनता को लुटवाना खुदा का काम हो सकता है। स्पष्ट है अरबी खुदा व इस्लाम शान्ति व प्रेम के स्थान पर गुन्डगर्दी व लूट मार का प्रचार करता है। बंगलादेश इसकी ताजा मिसाल है ?

प्रश्न १४२—बतावें कि खुदा को यह अपने न थकने की झूंठी शेखी क्यों बघारनी पड़ी थी जब कि तौरात में थककर आराम

करना उसने स्वीकार किया था। बतावें कुरान की बात तौरात के मुकाबिले क्यों न गलत मानी जावे ?

प्रश्न १४३—दुनियां बनाते वक्त खुदा 'हें'। (कुन) कह कर सब कुछ बना लेने का अपना बताया नुस्खा क्यों भूल गया खुदा के हाथ कितने लम्बे हैं। क्या पोला आकाश भी बनाया जा सकता है। जो स्वयं में कुछ भी न हो ?

प्रश्न १४४—अपनी पूजा का शौक खुदा को पैदा हुआ तो उसने सभी को अपना चेला क्यों नहीं बनाया और क्यों लोगों को स्वयं गुमराह किया।व क्यों लोगों के पीछे शैतान लगाये ताकि वे गुमराह होवें। अपनी पूजा के शौक से खुदा को क्या लाभ पहुंचता था यह बताया जावे ?

प्रश्न १४५—खुदा पहिले शायद पलंग पर लेटा होगा, फिर उठकर बैठ गया फिर ऊपर से उतर कर नीचे जमीन पर आया। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं है कि खुदा हाजिर नाजिर (सर्व व्यापक) नहीं है। वह आसमान में रहता है सैर करने कभी २ जमीन पर चला आता है और फिर वापिस चला जाता है ?

प्रश्न १४६--खुदा का महल जन्नत (स्वर्ग) में हैं जहां वह रहता है, उसके पास ही प्यारी २ करोड़ो हूरें (सुन्दरी स्त्रिया) भी रहती है, शराब की नहरें भी खुदा ही के पास है। तो बतावें कि खुदा को जन्नत (स्वर्ग) हमारी पृथ्वी से कितनी दूर व किस दिशा में है। क्या आप जन्नत की मौजूदगी साबित कर सकते हैं ?

प्रश्न १४७—सूरज निकलने और डूबने की जगह कहां पर है बताने का कष्ट करें। क्या इससे यह जाहिर नहीं हैकि खुदा की उल्मी लियाकत बहुत ही कम थी जो वह सूरज निकलने व डूबने की जगह भी जानता था।

प्रश्न १४८--कुरान पा० ६ सूरे निशा रु० २ आयत १३ में खुदा को कर्ज देने से गुनाह माफ का कुरान ने वायदा किया था और यहां

खुदा कर्ज लेने पर उसे दूना मयसूद के वापिस देने का वायदा करता है। बतावें कि सूद देना व लेना तब इस्लाम में गुनाह कैसे हो सकता है जिसका कुरान में निषेध है ?

प्रश्न १४९—बतावें कि यदि चेलियों से ज़िना किया गया है तो वह गुनाह तो नहीं माना जावेगा। चेली और प्रेमिका में इस्लाम की निगाह में अन्तर क्या है ?

प्रश्न १५०—खुदा ने ऐसी गलत बात क्यों कही जो ईसा ने कभी भी इन्जील में नहीं कही थी जिस खुदा ने अपना पैगम्बर बताया था। कुरान में झूठी बात लिखी होने का ऐब भी है। यह आयत कु० पा० १५ सूरे कहफ़ रु० १ आ० १ को गलत साबित कर देती है।

प्रश्न १५१—लोगों (मुसलमानों) को झूठ बोलना झूठी कस्में खाने को उत्साह प्रोत्साहन देना, आदि का हुक्म देकर खुदा ने इस्लाम को दुनियां में बदनाम क्यों किया है। यदि लोग मुसलमानो का विश्वास न करें उन्हें झूठा समझने लगें तो वे गलत क्यों होंगे ?

प्रश्न १५२—क्या इससे साबित नहीं है कि कुरान फ़िसाद फैलाने वाली पुस्तक है ? दुनिया में लड़ाई झगड़े कराना ही क्या कुरान का उद्देश्य नहीं था जिसमें ऐसी २ फिसादी आयतें दी हुई हैं ?

प्रश्न १५३—बतावें कि खुदा और उसके तख्त में वज़न कितना है जो आठ फरिश्तों को उठाना होगा। शायद खुदा तख्त के मुकाबिले में वजन में कुछ हल्का ही बैठेगा, आप का क्या ख्याल है ?

प्रश्न १५४—बतावें कि खुदा जमीन से हजार किलो मीटर से कम ऊँचा है या उससे भी ऊपर है। यदि ऊपर है तो कितना ?

प्रश्न १५५—जब खुदा लोगों को अपने कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं रखता, खुद ही उनका भाग्य पैदा होते ही लिख देता है तो लोगों के कर्मों की जिम्मेवारी खुदा मियां की हो जावेगी। तब खुदा को किसी को भी दण्ड देने का हक कैसे होगा साबित किया जावे ?

प्रश्न १५६—यह चौकीदार आसमान में किस चीज

होने से रोकने की चौकीदारी किया करते हैं। ये स्वयं सेवक हैं या तनखवाह खुदा से लेते हैं ?

प्रश्न १५७—बतावें सूरज और चाँद को किसी मौलवी की छत पर जमा किया जावेगा या अरब में किसी मकान या मस्जिद में उनका लाकर रखा जावेगा। कुरानी खुदा का इल्म काबिले तारोफ था।

प्रश्न १५८—सूरज को चादरे में लपेटा जावेगा या रस्सी से बाँधा जावेगा ? और तारे झाड़कर किसी मैदान में जमा किये जावेंगे या किसी तालाब में अरब में इकट्ठे किये जावेंगे। क्या यही खुदाई इल्म का नमूना है ?

प्रश्न १५९—खुदा के ये रजिस्टर एक दो हैं या लाखों जिल्दों में हैं। रजिस्टरों के कागज किस पेपर मिल से मंगाये जाते है ?

प्रश्न १६०—आसमान व जमीन के भी क्या बातें सुनने को कान होते हैं ? यदि हो तो वे कितने २ बड़े हैं और किधर हैं। साबित करें ?

प्रश्न १६१—जन्नत में जाते समय तक भी बच्चे क्या बच्चे ही बने रहेंगे या वे उस वक्त तक कब्रों में बढ़ कर दाढ़ी मूंछ वाले बड़े बन जावेंगे ? जन्नत में उन बाल बच्चों के निकाह को औरतें भी मिलेगी या बेचारे सदा क्वारे ही रहा करेंगे ? क्या उनको भी हूरों का मजा चखने को मिलेगा ?

प्रश्न १६२—क्या खुदा पूरे कुरान को भी याद नहीं रख सकता था जो उसे लोहे की तख्ती पर उसे लिखकर रख लेना पड़ा था ? क्या इस मामले में हमारे मुसलमान हाफिज खुदा से बाजी नहीं मारले गये जो पूरा कुरान याद कर लेते है ? बतावे कि खुदा का दिमाग इतना कमजोर क्यों हो गया है जो कि वह कुरान भी हिफ्ज (याद) नहीं रख सकता था ?

प्रश्न १६३—साबित कर के दिखावें कि पोले आकाश में किवाड़ चौखट दरवाजे भी लगे है ? अरबी खुदा की किताब कुरान को संसार के बड़े २ विश्व विद्यालयों में रिसर्च के लिये रखना क्यों नामुनासिब

होगा ? क्या हम विश्वास रखें कि कुरान में कोई एव नहीं है और यह गप्प भी उलमाये इस्लाम सत्य सावित कर के दिखा सकेंगे ?

प्रश्न १६४--पेट के अन्दर के सभी हिस्से गल जाने पर भी इन्सान जिन्दा बना रहेगा यह साबित कर के दिखावे वरना इसे गप्प क्यों न मानी जावे ?

प्रश्न १६५--बतावें कि यह कसम खाने वाला मुहम्मद था या दूसरा खुदा था।

प्रश्न १६६--कुरान जब यह खुली घोषणा कसम खा खा कर करता है कि यह एक फरिश्ते का पैगाम है तो वह खुदाई पैगाम नहीं रहा। क्या खुदा भी कोई फरिश्ता था ? कुरान की खुदाई साबित करो

प्रश्न १६७--क्या खुदा को भी घेरा जा सकता है ? यदि हां तो उसकी लम्बाई चौड़ाई व मोटाई कितनी है ? बताया जावे कि वह कितने बड़े मकान में समा सकता है ?

प्रश्न १६८--क्या खुदा इतना भारी था कि उसके बोझ के मारे पहाड़ भी चूर चूर हो गया था ? या खुदा इतना पापी था कि उसके आते ही तवाही पैदा हो गई थी ? खुदा के आने पर खुशहाली क्यों नहीं पैदा होती खुलासा करे ?

प्रश्न १६९--दुनियां को पैदा करके पालन करने वाला खुदा को बताना उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ावेगा या उसे प्रलय (विनाश) के दिन का कबरिस्तान का मालिक बताना बढ़ावेगा ? सरसब्ज बागों का मालिक दुनियां का परोपकार करने वाला भला आदमी होगा या मरघट का मालिक बनना अच्छी बात होगी ? कुरान ने कयामत का मालिक बताकर खुदा की बेइज्जती क्यों की है।

प्रश्न १७०--गूगे बहरे लोगों से घृणा करने वाला खुदा रहीम कैसे है।

प्रश्न १७१--मुर्दा जानवरों की खाल उतार कर खुदा ने खुद ही

डेरे सीकर बनाने का चमारों जैसा काम खुशी से किया या किसी मजबूरी में किया था अथवा क्यों किया ?

प्रश्न १७२—निराधार आकाश में स्थित जमीन का उठा कर तोड़ना कैसे बनेगा सावित करें ?

प्रश्न १७३—खुदा दिन में तथा रात में किस दिशा में बहुत ऊँचाई पर रहता है सप्रमाण यह स्पष्ट किया जावे ?

प्रश्न १७४—इस आयत के होते हुए खुदा को मुन्सीफ (न्यायी) सावित करें ।

प्रश्न १७५—क्या इससे खुदा ईमानदार परीक्षक सावित किया जा सकता है ।

प्रश्न १७६—कुरान में जन्नत के नजारों को क्या सही साबित किया जा सकता है या ये नासमज अय्याश अरबी लोगो को फुसला कर इस्लाम में भरती करने को फर्जी लालच की वातें है ?

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक 5330
दयानन्द महिला ... कुरुक्षेत्र

प्रश्नों के क्रमानुसार

कुरान के आलोच्य स्थल व समीक्षायें

(१) खुदा जन्नत (स्वर्ग) में रहता है—परहेजगार जन्नत के बागों में और नहरों में होंगे।५४। सच्ची बैठक में बादशाह (खुदा) के पास जिसका सब पर कब्जा है।५५। कु० पा० २७ सूरे कमर रु० ३॥

समीक्षा—इससे प्रगट है कि अरबी इस्लाम का खुदा सारे विश्व में व्यापक नहीं है वह केवल जन्नत (स्वर्ग) में अपने मकान में रहता है।

(२) खुदा तख्त पर बैठता है—"जिसने जमीन और आसमान को जो कुछ आसमान और जमीन में हैं छः दिन में पैदा किया फिर तख्त पर जा बैठा।" कु० पा० १९ सूरे फुर्कान रु० ५ आ० ५९ (क़यामत के दिन) तुम्हारे परवर्दिगार के तख्त को आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे। कु० पा० २९ सूरे हाक्का रु० १ आयत १७।

समीक्षा—कुरान में खुदा के लेटने, खड़े होने आराम करने का कोई ज़िक्र नहीं किया गया हैं। हर समय हजारों लाखों या करोड़ों सालों तक बैठे रहने से बीमारी हो जाना, कमर के दर्द होना, कमर का रह जाना आदि स्वाभाविक है। यह तो एक तरह की सजा जैसी बात है। पर यहूदियों को एवं कुरान की मान्य पुस्तक तौरात में उत्पत्ति ३।९ में खुदा का रोजाना सबेरे अदन के बाग में (स्वास्थ ठीक रखने को) टहलने जाने का वर्णन दिया है।

(३) खुदा फौज लेकर लड़ने गया—ऐ पैगम्बर! यह वक्त था जब कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों को (युद्ध क्षेत्र में) आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं। तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे बस तुम इनकी गर्दनें मारो और इनके टुकड़े कर डालो।" कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० २ आयत १२।

समीक्षा—खुदा आदमियों से फरिश्तों की फौज लेकर लड़ाई के मैदान में लड़ने जाया करता था और अपनी कायर फौज को हिम्मत बंधाता था, यह बात भी अरबी कुरानी खुदा की असलियत को खोलने वाली है। कुरान खुदा को सर्वशक्तिमान नहीं मानता है। इस्लामी खुदा भी एक मामूली सेनापति (सिपह सालार) जैसा ही था। इन्जील में प्रकाशित वाक्य नाम के अध्याय ९।१६ में लिखा है कि खुदा के पास बीस करोड़ घुड़ सवार सेना रहती है, और फौजें कितनी हैं, यह नहीं बताया है किन्तु अरबों खरबों से क्या कम होंगी। यह फौजें खुदा की रक्षा के लिये उसके पास रहती हैं। यदि यह न हों तो हो सकता है दुश्मन खुदा पर हावी हो जावें।

(४) पत्थर भी डर जाते हैं—

"और बाज पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं।" कु० पा० १ सू० बकर रु० ९ आयत ७४।

समीक्षा—डर उसे लगता है जिसके दिल व दिमाग होते हैं और वह चेतन्य व जानदार होता है। पत्थर तो बेजान पदार्थ है, उनका खुदा से डरना लिखना कम समझी की बात है। पता नहीं अरबी खुदा इतनी सी मोटी बात भी क्यों नहीं समझता था

(५) बादल जमीन और आसमान के बीच में हैं—

"बादल जो (खुदा के हुक्म से) आकाश और धरती के बीच में घिरे रहते है।" १६४।कु० पा० २ सू० बकर रु० २०।

समीक्षा—हमारी निगाह में यह वाक्य गलत है अथवा खुदा अज्ञानी था जमीन के चारों ओर शून्य आकाश है, कहीं कोई ठोस पदार्थ आकाश नाम का नहीं है जिसकी ऊपर कोई हद मानली जावे और जमीन व आसमान की दो हदों के बीच में बादलों को माना जावे। उचित होता यदि यह लिखा जाता कि धरती के ऊपर आकाश में बादल घिरे रहते हैं। यह साधारण सी बात तो चौथे दर्जे का विद्यार्थी

भी जानता है, पर कुरान लिखने वाला अरबी खुदा इतनी सी भी नहीं समझता था, आश्चर्य की बात है।

(६) दोजख का ईंधन आदमी व पत्थर--

"बस (दोजख की) आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वह इन्कार करने वालों (काफिरों) के लिये तैयार हैं।" कु० पा० १ सू० बकर रु० ३ आ० २४।

समीक्षा--कुरान के अनुसार काफिर दोजख में इस लिये झोंके जावेंगे ताकि उनको उनके गुनाहों के लिये सजा दी जा सके और वे दुःखी व परेशान हों। इसी लिये उनको दोजख का ईंधन लिखा है। किन्तु पत्थरों को भी इन्सान की ही तरह दोजख का ईंधन लिखना बताता है कि उनको भी सजा दी जावेगी पर यह नहीं खोला गया कि पत्थरों को उनके किन गुनाहों की सजा दी जावेगी? क्या अरबी खुदा की निगाह में बेजान पत्थर भी काफिर होते है?

(७) बेजान इन्सान में रूह डाली—

"लोगो! क्यों कर तुम खुदा का इन्कार कर सकते हो और तुम बेजान थे, तो उसने तुममें जान डाली; फिर (वही) तुमको मारता (वही) तुमको जिलायेगा फिर उसकी तरफ लौटाये जाओगे।" कु० पा० १ सू० बकर रु० ३ आ० २८।

समीक्षा--चिकित्सा विज्ञान यह बताता है कि वीर्य कीट तथा रजाडम्ब चैतन्य (जीवित) होते है और उनके मिलने से जो गर्भ टहरता है वह प्रारम्भ से अन्त तक सदैव सजीव रहता है। यदि वीर्य कीट जीवित न हो तो गर्भ ठहर ही नहीं सकता है। ऐसी दशा में कुरान का यह लिखना कि मनुष्य शरीर प्रारम्भ में बेजान होता है और पूरा शरीर बनने पर खुदा उसमें जान डालकर उसे जानदार बनाता है, खुदा के दावे को प्रत्यक्ष एवं विज्ञान के विरुद्ध सिद्ध करता है। शरीर जब भी बेजान हो जावेगा वह सड़ जावेगा, फिर उसमें जान डाली नहीं जा सकती है। अतः कुरान की यह बात ठीक नहीं है कि प्रारम्भ

में मनुष्य बेजान होता है और खुदा उसमें जान डाल कर जिन्दा करता है।

(८) ज़मीन के बाद सात आसमान बनाये—

"वही है जिसने तुम्हारे लिये धरती की चीजें पैदा की, फिर आकाश की तरफ ध्यान दिया तो सात आकाश हमवार बना दिये और वह हर चीज से जानकार है।" कु० पा० १ सूरे बकर रु० ३ आ० २६।

समीक्षा—यह आयत भी बुद्धि के विरुद्ध है। यदि पहिले आकाश नहीं था तो जमीन को कहां पर कैसे बनाया। यदि आकाश बाद को बनाया गया तो पहिले इस शून्य स्थान में क्या भरा था और वह कहां गया ? यदि परमाणु भरे थे तो उनको इकट्ठा करने पर पहिले आकाश उत्पन्न होगा तब बाद को जमीन या कुछ बनेगा। इस दशा में जमीन बनाने के बाद आकाश बनाने की बात कहना गलत होगा। आकाश तो अनन्त है, अनन्त के सात भाग बताना भी बुद्धि विरुद्ध बात है, यदि हिस्से हो जावेंगे तो वह अनन्त ही न रहेगा। वर्तमान विज्ञान आकाश व विश्व को अनन्त मानता है। सात आसमानों को हमवार बनाना लिखना बताता है कि अरबी खुदा को विद्या नहीं आती थी।

(९)—खुदा ने गोश्त पकाकर उतारा—

"मैंने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर मन और सलवा भी उतारा और हमने जो तुम को पवित्र भोजन दिये हैं उनको खाओ।" (५७) कु० पा० १ सूरे बकर रु० ६।

मन=रात को पत्तों पर जो मीठी चीज जम जाती है। सलवा=बटेर जैसी चिड़ियों का पका मांस।

समीक्षा—खुदा पक्षियों को पकड़ के कत्ल करता था उनके पर व हड्डी नोचकर साफ करता था और फिर मांस को पकाकर अरबी मुसलमानों को खिलाता था। तो क्या इससे खुदा एक बवर्ची जैसा साबित नहीं होता है ? गोश्त को पकाकर सलवा बनाना भी

कोई खुदा का पेशा हो सकता है? अरबी खुदा भी विचित्र आदमी था।

(१०) इन्सान को बन्दर बना कर नगद सजा—

"तुममें से जिन्होंने हफ्ते के दिन (शनिश्चर) में ज्यादती की तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ (ताकि जहाँ जाओ) दुतकारे जाओ।" ६५। कु० पा० १ सू० बकर रु० ८।

समीक्षा—इस आयत में खुदा ने दो बातें बताई हैं। एक तो यह कि कर्मों का फल मनुष्य से बन्दर की योनि में जाकर भोगा गया। दूसरी यह कि कर्मों का फल मिलने के लिये कयामत अर्थात फैसले के दिन तक इन्तजार करना ही होगा यह जरूरी नहीं है।

भारत निवासियों का यह प्राचीन सिद्धान्त है कि कर्मों का फल यहीं पर तथा मनुष्य एवं पशुपक्षी कीट आदि की योनियों में भोगने को जाना पड़ता है। उसके लिये पृथक कोई स्वर्ग नरक आदि स्थान नियत नहीं है। कुरान ने भी इस आयत में उसी बात को स्वीकार किया है तथा अन्यत्र दोजख जन्नत में जाने तथा कयामत को फैसला होने की बात का खन्डन किया है।

(११) खुदा सर्वज्ञ नहीं है—

"(खुदा ने कहा) गरज उन्होने गाय हलाल की और उनसे उम्मेद न थी कि करेंगे।" कु० पा० १ सू० बकर रु० ८ आयत ७१।

इसमें कुरानी अरबी खुदा कहता है कि मुझे उम्मीद न थी कि वे लोग गाय हलाल करेंगे। इससे स्पष्ट है कि खुदा ने अपनी सर्वज्ञता का स्वयं खण्डन करके स्वयं को अल्पज्ञ घोषित कर दिया है। दो एक प्रमाण और भी देखें—

ऐ पैगम्बर! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि अगर तुम में से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे अगर तुममें से सौ होंगे तो हजार काफ़िरों पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे।६५। अब खुदा ने तुम पर से अपने हुक्म का (बोझ) हल्का कर

दिया और उसने देखा कि तुममें कमजोरी है तो अगर तुम में से जमे रहने वाले सौ होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर रहेंगे और अगर तुम में से हजार होंगे खुदा के हुक्म से वह दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं।६६। कु० पा० १० सू० अन्फाल रु० ८।

समीक्षा—इन आयतों में खुदा को स्पष्ट रूप से अल्पज्ञ बताया गया है। वह मुसलमानों की ताकत का भी सही अन्दाज नहीं लगा पाया और धोखे में पहिले गलत हुक्म दे बैठा। बाद को अपनी गलती जब समझ पाया तो पहिले हुक्म में तरमीम (संशोधन) किया गया। समझदार लोग ऐसे अल्पज्ञ अरबी खुदा को अपना पूज्य व रक्षक कैसे मान सकते हैं? कुरान में अन्यत्र भी लिखा है—

"और ऐ पैगम्बर! जिस किब्ले पर तुम थे हमने उसको इसी मतलब से ठहराया था ताकि हमको मालूम हो जावे कि कौन कौन पैगम्बर के आधीन रहेगा और कौन उल्टा फिरेगा।" कु० पा० २ सू० बकर रु० १७ आ० १४३।

समीक्षा—अरबी खुदा ने इसमें साफ २ कहा है कि वह यह नहीं जान पाया था कि कौन २ व्यक्ति पैगम्बर के आधीन रहेगा और कौन खिलाफ रहेगा। यह बात खुदा जांच करने के बाद ही जान पाया था। क्या ऐसा खुदा दरअसल खुदा माना जा सकता है?

(१२) औरतों पर खुदाई जुल्म—

ऐ ईमान वालो। जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको (जान के) बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत।" कु० पा० २ सूरे बकर रु० २२ आ० १७८।

समीक्षा—इसमें हमारा ऐतराज इस अंश पर है कि औरत के बदले औरत पर जुल्म किया जावे। यदि कोई बदमाश किसी की औरत पर जुल्म कर डाले तो उस बदमाश को दण्ड देना मुनासिब

होगा किन्तु उसकी निर्दोष औरत पर जुल्म ढाना यह तो सरासर बेइन्साफी की बात होगी । ऐसी गलत आज्ञा देना अरबी खुदा को जालिम साबित करता है, न्याय नहीं ।

ऐसी औरतें जिनका खाबिन्द जिन्दा है उनको लेना भी हराम है मगर जो कैद हो कर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिये तुमको खुदा का हुक्म है·····फिर जिन औरतों से तुमने मजा उठाया हो तो उन से जो ठहराया उनके हवाले करो । ठहराये पीछे आपस में राजी होकर जो और ठहरालो तो तुम पर इस में कुछ नहीं । अल्लाह जानकर हिकमत वाला है । २४ । कु० पा० ५ सू० निसा रु० ४ ॥

समीक्षा–निर्दोष औरतों को लूट मेंपकड़ लाना और उनसे व्यभिचार करने की खुली छूट कुरानी खुदा ने देदी है, क्या यह अरबी खुदा का स्त्री जाति पर घोर अत्याचार नहीं है ? क्या वह व्यभिचार का प्रचारक नहीं था । फीस तै करके औरतों से व्यभिचार करने तथा फ़ीस जो ठहराली हो उसे देने की आज्ञा देना क्या खुदाई हुक्म हो सकता है ? अरबी खुदा और कुरान जो औरतों परजुल्म करने का प्रचारकहै, क्या समझदार लोगों को मान्य हो सकता है ?

(१३) रोंजा रखना जरूरी है–

"ईमान वालों । जिस तरह तुमसे पहिले किताब वालों पर रोजा रखना फर्ज (कर्तव्य) था: तुम पर भी फर्ज किया गया, ताकि तुम पापों से बचो ।" ॥कु० पा० २ सू० बकर रु० २३ आ १८३ ॥

समीक्षा—रोजा रखने की आज्ञा तौरात जबूर और इन्जील नाम की किसी भी पुरानी किताब में नहीं दी गई है, यदि कोई मुसलमान मौलवी दिखा सके तो इनाम मिलेगा । इस के अलावा रोजा में दिन भर न खाना और रात में खाना स्वास्थ विज्ञान की दृष्टि से भी गलत हैं । भोजन सूर्य के प्रकाश में या दिन छिपने से पूर्व कर लेना चिकित्सा की दृष्टि से भी उचित रहता है । कुरान का रोजा रखने का तरीका अवैज्ञानिक है । अरबी खुदा का यह आदेश पुरानी पुस्तकों के भी विपरीत है तथा हानि कारक भी है ।

(१४) रोज़ों में विषय भोग जायज़ किया गया—

"(मुसलमानों) रोजों की रातों में अपनी बीबियों के पास जाना तुम्हारे लिए जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो। पस अब उनके साथ (रोजों की रात के वक्त) हम बिस्तर हों।" १८७। कु० पा० २ सू० बकर रु० २३।

समीक्षा—इस पर सही बुखारी भाग १ सफा ३०१ हदीस ६११ में निम्न प्रकार वर्णन आता है "वरायः जी अल्ला अन्स से रवायत है कहा मुहम्मद सले अल्लाह औलियह व सल्लम के सहावह में से जब कोई रोजहदार होता और इफ्तार के वक्त सो जाता बिना इफ्तार किये तो वह तमाम दिन नहीं खा सकता था, यहां तक कि शाम हो, एक वक्त कैस बिन सरमह अन्सारी रोजा से थे। तो जब इफ्तार का वक्त आया तो अपनी बीवी के पास आये और उससे कहा तेरे पास कुछ खाना है। उसने कहा नहीं लेकिन मैं जाती हूँ तलाश करूंगी तुम्हारे लिये कुछ मिल जाये। और वे दिन भर मजदूरी करते थे इस लिये उनकी आंखें उन पर गालिब आई और सो गये। जब उनके पास उनकी बीबी आई तो कहने लगे बड़े खसारा में पड़ गया। जब दूसरे रोज दोपहर का वक्त हुआ तो उन पर गशी तारी हो गई। उसका जिक्र रसूल खुदा सले अल्ला औलियह व सल्लम से किया गया तो यह आयत नाजिल हुई कि तुम्हारे लिये रोज़ा की रात में अपनी औरत से हम बिस्तरी हलाल है। उस वक्त लोग इस आयत के हुक्म से बहुत बहुत खुश हुए और यह भी नाजिल हो गया कि खाओ और पियो जब तक कि सफेद धागा स्याह धागे से जुदा हो यानी रात बीते तक।

इस हदीस से साफ हो गया कि अगर रोजा अखत्यार को खाना न मिल सके तो रोज़हदार औरत से हमबिस्तरी करके रोजा अखत्यार कर सकता है यह आसान व मजेदार नुस्खा खुदा ने बता दिया। इसमें खाने का झंझट भी साफ हो गया। रोटी न मिले तो भी हमबिस्तरी कर लेने से काम चल जावेगा।

(१५) बीबिया खेतियां है चाहे जैसे जाओ —

"तुम्हारी बीबियां तुम्हारी खेतिया है। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ।" कु० पा० २ सू० बकर रु० २८ आ० २२३।

समीक्षा—इस पर खुलासा करते हुए 'हफबातुल मुसलमीन' पुस्तक में पृ० ४०।४१ पर लिखा है।

इब्न अब्बास मे मरवी है कि एक दिन जनाव उमर फ़ारुख रसूल अल्लाह के पास हाजिर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह मैं हलाक हो गया। आपने फरमाया किस चीज ने हलाक किया? उन्होंने अर्ज किया कि रात मैंने अपनी सवारी को ओंधा कर लिया था। इब्न अब्बास कहते हैं कि रसूल अल्लाह चुप रह गये। पस अल्लाह ताला ने वही भेज दी रसूल अल्लाह की तरफ यानी तुम्हारी बीबियां तुम्हारी खेतियां हैं। जिधर से चाहो जाओ और अपने नफ्सों का चाहाना करो पस अल्लाह से डरो।"

(१६) वतोफीउलदब्र जायज है—

'तफसार फ़तह अलबयान नवाब सेकहसन खां मरहम जिल्द अव्वल सफा २८५ तहत आय। खर्जामियहाविन शाबित से मरवी है वह फरमाते हैं कि एक शख्श ने औरत से वतीफ़ीउलदब्र का रसूल अल्ला से सवाल किया तो आपने फरमाया हलाल है। (हफवातुल मुसलमीन पृष्ठ ४१)।

(१७) झूठी कसमें—

"तुम्हारी फिजूल कसमों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा जो तुम्हारे दिली ईरादे हैं।" कु० पा० २ सू० बकर रु० २८ आयत २२५।

समीक्षा—जब झूठी कसमें खाना जुर्म नहीं रहा और मुसलमान दूसरों को झूठी कसमें खाकर यदि धोखा देने लगें तो उनका कौन विश्वास करेगा? यदि कोई भोला शरीफ आदमी उन पर विश्वास कर बैठे।। तो निश्चय धोखा खाकर नुकसान उठाने वालों में होगा। अरबी खुदा की क्या यह शिक्षा दुनियां में बेईमानी फैलाने में सहायक न होगी।

(१८) कुरान मुहम्मद ने लिखा था—

"यह अल्लाह की आयतें जो मैं तुमको सच्चाई से पढ़ पढ़कर सुनाता हूँ और बेशक तुम पैगम्बरों में से हो।" कु० पा० २ सू० बकर रु० ३२ आयत २५२।

समीक्षा—कुरान का दावा है कि उसे बनाने वाला खुदा था, उस आयत में कुरान सुनाने वाला खुदा उस खुदा से दूसरा है जो कहता है कि मैं अल्लाह की आयते सच्चाई से पढ़ कर सुनाता हुं। कुरान दो खुदा मानता है, यह स्पष्ट है अथवा कुरान मुहम्मद ने लिखा था? (प्रश्न ११९ भी देखो)

(१९) सूद खाना पाप है—

"जो लोग सूद खाते हैं (कयामत के दिन) खड़े नहीं हो सकेंगें ॥ कु० पा० ३ सू० बकर रु० ३८ आ० २७५)

समीक्षा—सूद खाना यदि हराम है तो दुनियां के इस्लामी मुल्कों की बैन्कों व डाकखानों में सूद लिया दिया जाता है, क्या वे सरकारें उन में धन जमा करने वाले मुसलमान सभी दोज़ख में डाले जावेगें?

(२०) खुदा ने अरब वालों को जाहिल बताया है—

(ऐ पैगम्बर) किताब वाले और (अरब) के जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (या नहीं) ॥ कु० पा० ३ सूरे आलइमरान रु० २ आ २० ॥

समीक्षा—इस में अरबी खुदा ने अरब वालों को डंके की चोट जाहिल घोषित कर दिया है। जाहिलों को जैसे उपदेश दिये जाते है, वैसे ही कुरान में उन को दिये गये हैं। हूरे गिलमे-शराबें आदि के लालच से ही जाहिल लोग इस्लाम में फांसे जा सकते थे और वही हथकण्डे कुरान में अपनाये गये हैं। पर एक बात विचारणीय यह भी है कि खुदा ने बिना बजह लोगों को 'जाहिल' पैदा कर के अपनी भलमनसाहत का सबूत दिया है या जहालत का यह सोचने की बात है। क्या गलियां देने से खुदा की शराफत जाहिर होती है?

(२१) खुदा हर काफिर को ७० हाथ की जंजीर से बांधेगा—(खुदा कहेगा) इसको पकड़ो और इसके गले में तोक डालो।३०। फिर इसको नरक में ढककेल दो।३१। और इसें सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बांध दो।३२। कु० पा. २९ सू० हाक्का रु० १ ॥

समीक्षा—दोजख की ऊंची लपटों वाली तेज आग में झोंक देने के बाद हर काफिर को इतनी लम्बी जंजीर से बांधना क्यों जरुरी होगा? क्या छोटी तीन गज़ की जंजीर एक आदमी को काफ़ी नहीं होगी। इतनी बड़ी ढेर सारी जंजीरे खुदा किस लोहा फ़ैक्ट्री से खरीदेगा? वह हिन्दुस्तानी होगी या अमरीकन?

(२२) खुदा की 'हो' (कुन)

"जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे फर्मा देता है कि हो (कुन) और वह हो जाता है।" कु० पा० ३ स० आलइमरान रु० ५ आ० ४७ ॥

समीक्षा—खुदाके 'हो' के आदेश को कौन सुनता है, किससे खुदा 'हो' कहता है यह भी खोला जाना था। खुदा को 'हो' कहने की क्या जरूरत थी, केवल मन से विचार करक ही काम क्यों नहीं कर लेता था। क्या खुदा भी 'कुन' हो का मुहताज है।

(२३) ईसाको इन्जील सिखाने का खुदा का गलत ब्यान—

"और खुदा ईसा को आसमान की किताब और अक्ल की बातें और तौरात और इन्जील सिखा देगा।" कु० पा० ३ सू० आलइमरान रु० ५ आ० ४८ ॥

समीक्षा—कुरान की यह आयत गलत है। इन्जील नाम की कोई किताब ईसा के जन्म से पूर्व या ईसा के जमाने में नहीं थी। ईसा के मरने के बाद उसके चेलों के द्वारा लिखित पचासो पुस्तकों का संग्रह किया गया था। यह संग्रह ईसा के ३०० वर्ष बाद किया गया था। और एक सभा में उन में से बहुत सी किताबों को रददो कर दिया गया। केवल २७ किताबों को पसन्द किया गया और उन के संग्रह

को इन्जील नाम से प्रचारित किया गया । अतः खुदा का कुरान में ईसा को इन्जील सिखाने की बात कहना वे सर पैर की बात है। अतः यह आयत गलत है ।

(२४) खुदा का मकर करना–

'यहुद ने (ईसा से) मकर किया। अल्लाह ने उससे (यहुद से) मकर किया और अल्लाह मकर करने वालों में अच्छा मकर करने वाला है।" कु० पा० ३ सू० आल इमरान रु० ५ आ ५४ ॥

समीक्षा–इस आयत में खुदा ने अपने को बढ़िया मकर फरेब करने वाला बताकर अपनी निन्दा की है या प्रशंसा यह सबको विचार करना चाहिए । जब अरबी खुदा मकर फरेब करने में माहिर है तो उसके अन्धभक्त मुसलमान भी यदि मकर व फरेबी बने तो उन्हें कौन दोष दे सकता है ।

(२५) गैर मुस्लिम का विश्वास न करो–

"जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे उसके सिवाय दूसरे का ऐतबार न करो।" कु० पा० ३ सू० आलइमरान रु० ६ आ० ७३ ।

समीक्षा––जब मुसलमान दूसरों का ऐतबार न करेंगे तो उनपर भी दुनियां में कोई क्यो ऐतबार करेगा । मुसलमानों का तो खुदा ने झूठी कसमे तक खाने का निर्देश दे रखा है ।

(२६) खुदाई दीन इस्लाम की प्रशंसा–

"दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है।" १८ रु०२ । और जो शख्स इस्लाम के सिवाय किसी और दीन का तलाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कबूल नही और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा।" कु० पा० ३ सूरे आलइमरान रु० ६ आ० ८५ ।

"हमने तुम्हारे लिये दीन इसलाम का पसन्द किया।" कु० पा० ६ सूरे मायदा रु० १ आ० ३ ॥

समीक्षा—हर कौंजड़ा जैसे अपनी डलिया के बेर मीठे व दूसरों के बेर खट्टे बताता है बस ही कुरानी अरबी खुदा ने इस्लाम की तारीफ में ढोल पीटे हैं जैसा ऊपर की आयतों से प्रगट है ।

(२७) सबकी उम्र निश्चित है—

और कोई शख्श बे हुक्म खुदा मर नहीं सकता जिन्दगी लिखी हुई है। जो शख्श दुनियांमें बदला चाहता है हम उसका बदला यही देते हैं और जो कयामत में बदला चाहता है मैं उसको वहीं दूँगा और जो लोग शुक्र करते हैं मैं उनको जल्द बदला दूँगा। कु०पा० ४ सू० आलइमरान रु० १५ आ० १४६।

समीक्षा—सबकी यदि उम्र लिखी होने की बात ठीक है तो खुदा को लड़ाई के मैदान में फ़रिश्तों की फौजी मदद भेजने की जरूरत नहीं थी क्योंकि कोई भी नियत वक्त से पहिले नहीं मर सकता था।

यदि बदला इन्सान की मरजी के अनुसार यहीं पर मिल सकेगा तो कयामत के दिन सबका फैसला होने का कुरान का दावा झूठा हो जावेगा और क़यामत व जन्नत और दोजख बेकार हो जावेगी।

(२८) गुनाह करने को खुदा की ढील—

"जो लोग इन्कार कर रहे हैं, इस ख्याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह समेट लें और इनको जिल्लत की मार है।" कु० पा० ४ सू० आलइमरान रु० १८ आ० १७६।

समीक्षा—अरबी खुदा की नियत वद थी, वह मनुष्यों का भला नहीं चाहता था। यदि भला चाहने वाला होता तो लोगों को पाप करने की ढील न देता। मगर खुदा गर्व से कहता है हम लोगों को ज्यादा से ज्यादा बुरे काम करने के लिए ही ढील देते हैं। अर्थात् खुदा चाहता है कि लोग खूब पाप कर्म करते रहें। क्या ऐसा आदमी भी खुदा हो सकता है जो अपनी प्रजा का बुरा चाहने वाला हो?

(२९) दुनियां की जिन्दगी धोखे की है—

"और दुनियां की जिन्दगी तो धोखे की पूँजी है।" कु० पा० ४ सूरे आलइमरान रु० १९ आ० १८६।

समीक्षा—यदि दुनियां की जिन्दगी धोखे की पूंजी है तो खुदा ने जीवों को दुनियां में जन्म देकर गुनाह क्यों किया? उन्हें सीधा जन्नत

(स्वर्ग) में क्यों नहीं भेज दिया जिसे कुरान असली जिन्दगी का मजा मानता है जहां हर मियां को ५०० हूरें ४००० क्वारी अछूती औरतें व ८००० व्याहता औरतों के अलावा बेशुमार गोरे चुट्टे लौंडे (गिलमें) ऐश करने को मिलने तथा भर भर प्याले सौंठ और कपूर मिली शराब के पीने को मिलने। अरबी खुदा की नजर में औरतों से ऐश करने व शराब पीने की जिन्दगी ही तो असली जिन्दगी है। (देखो तफसीर-कुरान तथा कुरान)।

(३०) चाहे जितनी औरतें रखो छूट है—

"अगर तुमको इस बात का डर हो कि बेपरवाह लड़कियों में इन्साफ कायम न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दो-दो और तीन-तीन चार-चार औरतों से निकाह करलो लेकिन अगर तुमको इस बात का शक हो कि बराबरी न कर सकोगे तो एक ही बीबी करना या जो तुम्हारे कब्जे में हो उस पर सन्तोष करना। यह तदबीर मुनासिब है।' कु० पा० ४ सूरे निसा रु० १ आ० २॥

समीक्षा—इसमें साफ छूट दी गई है कि यदि मर्द में औरतों के साथ हर बात में एक जैसा बर्ताव करने की ताकत हो तो चाहे जितनी औरतें अय्याशी को अपने पास रख सकता है।

(३२) बीबियां बदल सकते हो—

"अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी को बदल कर उसकी जगह दूसरी बीबी करने का हो तो तुमने पहिली बीबी को बहुत सा माल दे दिया हो तो भी उसमें से कुछ भी न लेना। क्या किसी किस्म की तोहमत लगाकर जाहिरा बेजा बात करके अपना दिया हुआ लेते हो? कु० पा० ५ सू० निसा रु० ३ आ० २०॥

समीक्षा—इसका मतलब यह है कि बिना झूठी तोहमत लगाये यदि कोई चाहे तो अपनी बीबी को बदल कर नई बीबी किसी से ले सकता है। बीबियां बदल लेने की रिवाज अरबी खुदा की नजर में कोई बुरी बात नहीं थी। यदि अब भी यह रिवाज मुसलमानों में जारी हो तो किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिये।

(३२) मां से निकाह का निषेध (व समर्थन)

"जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना, मगर जो हो चुका सो हो चुका। यह बड़ी शर्म और गजब की बात थी और बहुत बुरा दस्तूर था।" कु० पा० ४ सूरे निसा रु० ३ आ० २२॥

"तुम्हारी मातायें, बेटियां तुम्हारी बहिनें, बुआयें, मौसियां, भांजियां, भतीजियां दूध पिलाने वाली मातायें दूध शरीकी बहिनें और तुम सासें पर हराम हैं। २३। कु० पा० ५ सू० निसा रु० ४॥

समीक्षा—खुदा को यह मां बेटे का शादी (जिना) का दस्तूर पहिले पसन्द था इसीलिये उसने कुरान द्वारा मान्य घोषित पहिली खुदाई किताबों तौरात जबूर और इञ्जील में इसकी कभी निन्दा नहीं की और न मना की थी। तौरात से लै व्यवस्था अध्याय में २०।२१ में लिखा है कि—

"और यदि कोई अपनी सौतेली मां के साथ सोये तो वह अपने पिता का तन उघाड़ने वाला ठहरेगा, सो इसलिये वे दोनों निश्चय ही मार डाले जांय।"

इसमें सौतेली मां से विवाह वा जिना का निषेध तो है पर सगी मां से करने का निषेध कहीं नहीं किया है। कुरान लिखाते समय खुदा को ध्यान आया और उसने मां से व्यभिचार या विवाह का निषेध कर दिया था। किन्तु इस्लाम के परममान्य अबू हनीफ के नजदीक मुहर्रमात अब्दियह यानी खास मां बहिन बेटी आदि से शरह इस्लाम के अनुसार जिना (निकाह) जायज नहीं है उनसे जिना कर लेना जायज है कोई पाप नहीं है। (देखो बाबा अलवती हिदायह युसुफीहदीस (३६५।३६६ जिल्द १)

(३३) मिट्टी मलने से पाक—

"हां रास्ते चले जा रहे हो और अगर तुम बीमार हो या मुसाफिर या तुममें से कोई पखाने से आवे या स्त्री प्रसंग करके आया हो और

तुमको पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लेकर मुंह और हाथ पर मल लो। अल्लाह माफ करने वाला वख्शने वाला है।" ४३। कु० पा० ५ सू० निसा रु० ७ व पा० ६ सू० मायदा रु० २ आ० ६।"

समीक्षा—पाक होने के लिये गन्दे हिस्सों को साफ करना तो ठीक होता है पर गुदा या मूत्रेन्द्रिय (ऐजायेतनासुल) गन्दा होने पर मुंह हाथ पर मट्टी मलने से वे कैसे साफ हो जावेंगे, यह समझ में नहीं आया। क्या इसका यह मतलब है कि इसी तरह मुंह और हाथ गन्दे हों तो गुदा और मूत्रेन्द्रिय पर मट्टी मलने से वे भी पवित्र हो जावेगे। यह तो विचित्र तरीका कुरान ने वताया है।

(३४) खुदा दोजख में खाले बदला करेगा—

"जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको आग में झोकेंगे। जब उनकी खालें जल जावेगी उनको दूसरी खाल बदल देंगे ताकि दण्ड भोगें। अल्लाह जबर्दस्त बड़ा हिकमत वाला है।" ५६। कु० पा० ५ सू० निसा रु० ८॥

समीक्षा—बार २ जली खालें बदलते रहने की महनत से बचने के लिये अल्लाहमिया यदि पहिले ही लोगों की खालों पर ऐसा मरहम लगा दे कि लोगों को तकलीफ तो जलने की हो पर खालें जलने न पावें तो उत्तम होगा ओर खुदा को इस काम से छुट्टी मिल जावेगी और वह दूसरी जरूरी बातों की ओर ध्यान देने का समय पा सकेगा।

(३५) मुसलमान मुसलमान को न मारे—

"किसी ईमान वाले को जायज नहीं कि ईमान वाले को मार डाले ९१। जो मुसलमान को जानबूझ कर मार डाले तो उसकी सजा दोजख है।" ९२। कु० पा० ५ सू० निसा रु० १३।

समीक्षा—यह आयते खुदा को अन्यायी और अत्याचारी घोषित करती हैं और उसे मुसलमानों का पक्षपाती बताती। न्याय की बात तो यही थी कि अन्यायी कोई भी हो मुसलमान हो या काफिर उसे दण्ड देने को कहा जाता। मुसलमान जालिम भी निर्दोष होगा

यह कोई नहीं मान सकता है। अरबी खुदा को इन्साफ करना भी नहीं आता था ऐसे पक्षपाती अरबी खुदा को कोई दूसरा समझदार व्यक्ति अपना रक्षक कैसे मान सकता है जो मुसलमानों को कत्ल करने को भड़काता है।

(३६) खुदा-बकील गवाह और मुल्जिम—

"सुनो तुमने दुनियाँ की जिन्दगी में उनकी तरफ हो कर झगड़ा कर लिया तो कयामत के दिन उनकी तरफ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा।" कु० पा० ५ सू० निसा रु० १६ आ० १०९।

समीक्षा—कुरान बताता है कि कयामत के दिन खुदा एक कुर्सी या तख्त पर बैठेगा। मुल्जिमान अपने मुल्जिमों के मुकद्दमों की पैरवी करेंगे और खुदा से खूब बहस मुबाहिसा व झगड़ा करेंगे तब कहीं खुदा अन्त में किसी को हूरे व गिलमे (औरते व लोंडे) भोगने को जन्नत में तथा दूसरों को दोजख में भेजेगा। यह बात नहीं खोली गई है कि उन वकीलों को फीस कौन देगा और वह कितनी होगी तथा वकीलों की उस समय पोशाक अंग्रेजी सूट बूट हैट की होगी, अरबी होगी या वे मादर जात नंगे ही वहां खड़े होकर पैरवी करेंगे ? यह बात सबको जान लेनी चाहिये कि खुदा के दरबार में भी बिना वकीलों से पैरवी कराये किसी का काम न बनेगा और न अरबी खुदा ही बिना मुकद्दमा सुन सकेगा। कयामत के दिन हम ऐसे आर्यसमाजी बकीलों का इन्तजाम कर देंगे जो अरबी खुदा के सरकारी वकीलों को हरा कर खुदा के बन्दों को दोजख में भिजवा कर काफिरों का जन्नत (बहिश्त) पर बे रोक टोक कब्जा करा देंगे। सारी हूरें काफिरों के हिस्से में आजावेगी और गिलमों को धक्का मार मार कर खुदा के अरबी चेलों के लिये दोजख में भेज दिया जावेगा। जन्नत की दूध और शहद की नहरों पर काफिरों का कब्जा होगा और सौठ व कूपर मिली जहरीली शराब ड्रमों में भरवा कर खूब गरम कराके कुरान परस्त अरबी लोगों

के लिये दोजख में भिजवादी जावेगी। रिश्वत से सारे काम हो जाते हैं, सरकारी खुदाई बकीलों को तोड़ लेना पैसे वाले काफ़िरों के लिये मामूली बात होगी।

(३६) कल्मा पढ़ने वाले गुनहगार हैं—

"यह गुनाह तो अल्लाह माफ़ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीफ ठहराया जाय और इससे कम जिसको चाहे माफ करे, और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह दूर भटक गया।" कु० मा० ५ सू० निसा रु० १८ आ० ११६॥ और मस्जिदे सब खुदा की है खुदा के साथ किसी को न पुकारो। १८। कु० या० २९ सूरे जिन्न रु० १॥

समीक्षा—मुसलमानों का कल्मा 'लाइलाहा लिल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह सारे कुरान में कहीं भी एक स्थान पर इस शक्ल में नहीं नहीं दिया गया है। एक स्थान से लाइलाह लिल्लिल्लाह" और दूसरे स्थान से "मुहम्मद रसूलिल्लाह" लेकर जोड़ कर कल्मा बना लिया गया है। यदि खुदा को यह कल्मा अर्थात् मुहम्मद की खुदा के साथ शिरकत (शामिल करना) मंजूर होती तो वह पूरा कल्मा कुरान में लिखा देता। बल्कि खुदा ने तो साफ साफ ऊपर ऐलान किया है कि खुदा के नाम के साथ किसी भी दूसरे का नाम जोड़ने या लेने वाले को खुदा हरगिज हरगिज माफ नहीं करेगा। खुदा ऐसे लोगों को (मुसलमानों को घोर पापी मानता है। अतः मौजूद कल्मा नहीं बोलना चाहिये, वह कुरान के खिलाफ है। कु० पारा ५ सूरे निसा रु० १८ आ० ११६ में लिखा है कि खुदा का शरीक ठहराने वाला हरगिज माफ नहीं किया जावेगा।

(३८) खुदा सच्चा है या धोखे बाज है? —

"और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन है। १२२।'

"काफिर खुदा को धोखा देते है हालांकि खुदा उन्हीं को धोखा दे रहा है।" १४२। कु० पा० ५ सू० निसा रु० २०। २१॥

समीक्षा—ऊपर दो आयतों में खुदा को सच्चा और दूसरी में उसे

धोखे बाज बताया है। दोनों बातें एक दूसरे के खिलाफ है। खुदा का कौन सा गुण ठीक माना जावे ?

(३६) काफिरों को दोस्त मत बनाओ—

"ईमान-वालों ! ईमान बालों को छोड़कर काफिरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम जाहिर खुदा का अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।" १४४ ॥ कु० पा० ५ सू० निसा रु० १४४ तथा पा० ३ सू० आल इमरान आ० २८।

समीक्षा—मुसलमान यदि काफिरों (गैर मुस्लिमों से इतनी घृणा करने लगेंगे और वे उनका विश्वास नहीं करेंगे। तो इसका परिणाम यह होगा कि प्रतिक्रिया वश दूसरे लोग भी मुसलमानों से घृणा करने लगेगें और वे उनका विश्वास नहीं करेंगे। कुरान हिन्दू मुसलमानों में हमेशा घृणा व दोष के बीज बोता रहा है। हिन्दुओ सावधान मुसलमानों ! कुरान की इस जहरीली आयतु से होशियार रहो यह मुल्क के अमन में बाधक हैं।

(४०) ईसा को सूली न लगी थी (इञ्जील का खण्डन)

"और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा-मसीह को जो रसूल थे कत्ल कर डाला, और न तो उन्होंने उनको कत्ल किया और न उनको सूली पर ही चढ़ाया मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ और वे लोग इस बारे में मतभेद डालते हैं, तो इस मामले में शक में पड़े हैं। उनको इस बात की खबर तो है नहीं सिर्फ अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं। और यकीनन ईसा को लोगों ने कत्ल नहीं किया।" १५७। कु० पा० ६ सू० निसा रु० २२ ॥

समीक्षा—इञ्जील को कुरान ने खुदाई किताब माना है और उसकी तस्दीक अनेक स्थानों पर की है। उनमें मार्क-युहन्ना आदि कई अध्यायों में ईसा को सूली देने का उल्लेख है। इञ्जील की रचना ईसा के ही शिष्यों द्वारा मुहम्मद से लगभग कई सौ वर्ष पूर्व की गई थी। उसकी बात ईसा के मामले में कुरान की अपेक्षा अधिक माननीय है कुरान की कल्पना गलत है।

(४१) खुदा ने हलाल को हराम कर दिया—

"अन्त को यहूदियों की शरारत की बजह से हमने पाक चीजें जो उनके लिये हलाल थीं उन पर हराम करदीं और इस वजह से कि अक्सर खुदा की राह से रोकते थे। १६० ॥ कु० पा० ६ रु० २२ सू० निसा ॥

समीक्षा—अरबी खुदा अपनी बात का भी पक्का नहीं था। वह चिड़ कर अपने कानून में जब चाहे तबदीली कर डालता था। दुनियां का कोई मजिस्ट्रेट भी अपने हुक्म को नहीं बदलता है, पर अरबी खुदा निराला ही मजिस्ट्रेट था।

(४२) ईसा खुदा के बेटा नहीं थे--

"मान जाओ, तुम्हारा भला होगा। अल्लाह एक है व इस लायक नहीं कि उसके कोई सन्तान हो ....।" १७१। कु० पा० ६ सू० निसा रु० २३ ॥

समीक्षा—पहिली खुदाई किताब इञ्जील में ईसा खुदा का इकलौता बेटा था। (देखो यूहन्ना ३। १६) ऐसा लिखा है और इस अरबी खुदा की किताब कुरान में उसका खण्डन किया गया है। दोनों में कौन सच्चा है, पाठक निर्णय करें। खुदाई किताबो में भी परस्पर विरोध का घोटाला है।

(४३) खुदा को कर्ज दो तो गुनाह माफ—

"खुश दिली से खुदा को कर्ज देते रहो तो हम जरूर तुम्हारे गुनाह तुम से दूर कर देगें ....।" १२। कु० पा० ६ सूरे निसा रु० २ ॥

समीक्षा—पैसे वालों को खुदा ने गुनाह माफ का आसान रास्ता बता दिया है, पर गरीबों की मौत है। न उन पर पैसा होगा और न वे जन्नत की हूरों गिलमों के मजे उड़ा सकेंगे। खुदा को भी कर्ज की जरूरत पड़ जाती है, अजीब बात है। शायद अरबी खुदा भी गरीब आदमी होगा ऐसा खुदा द्वारा कर्ज मांगने से प्रतीत होता है।

(४४) खुदा की शरारत—

"और जो लोग अपने को ईसाई कहते हैं, हमने उनसे वचन लिया

था, तो जो कुछ उनको शिक्षा दी गई थी उससे फायदा उठाना भूल गये फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा कयामत के दिन तक के लिये लगादी और आखिरकार खुदा उनको बदला देगा जो कुछ करते थे। १४ ॥ कु० पा ६ सू० मायदा रु०३ ।'

समीक्षा—अरबी खुदा का काम शैतानियत का रहा। उसे तो ईर्षा द्वेष मिटाकर लोगों को भलाई की ओर लगाना था न कि उनमें कयामत तक के लिए बुराई घुसेड़ दी। अरबी खुदा और शैतान में उनके कर्मों की दृष्टि से क्या फर्क रह गया।

(४५) ईसाई काफिर हैं—

"जो लोग मरियम के बेटे मसीह को खुदा का बेटा कहते हैं, वही काफिर है।" १७। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ३ ॥

समीक्षा—इञ्जील के अनुसार मसीह खुदा का बेटा था कुरान के अनुसार इञ्जील मानने वाले काफिर हैं। दोनों खुदाई किताबों इञ्जील व कुरान में कौन सी झूठी है?

(४६) सजा या इनाम खुदा की मर्जी पर है—

खुदा जिसकोचाहे माफ करे और जिस को चाहे सजा दे और आसमान जमीन और जो कुछ जमीन और आसमान के बीच में है सब अल्लाह ही के अख्तार में है और उसीकी तरफ लौट कर जाना है ॥ १२ ॥ कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ३ ॥

समीक्षा—बिना बजह किसी को सजा देने व किसी को माफ करने वाला मजिस्ट्रेट या अरबी खुदा कोई भी हो पागल और जालिम माना जावेगा, मुन्सिफ नही।

(४७) खुदा चाहता तो सबको एक ही दीन पर कर देता—

"और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही दीन पर कर देता। लेकिन यह चाहा गया है कि जो हुक्म दिये हैं उनमें तुम को आजमाये सो तुम ठीक कामों की तरफ चलो। ४८। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ७ ॥

समीक्षा—खुदा अगर सभी को एक ही दीन पर कर देता तो दुनिया में मारकाट झगड़े फिसाद जो इस्लाम ने मजहब प्रचार के लिए फैलाए न फैलते और सब सुखी रहते मगर खुदा ने जानबूझ कर सब को एक दीन वाला न होने दिया और वह भी सिर्फ इसलिए कि लोगों को आजमाया जाय। बिचारा अरबी खुदा बिना आजमाये लोगों को जांच भी नहीं पाता था कि कौन नेक है और कौन बद है। खुदा का ज्ञान बहुत थोड़ा था, आखिर और करता भी क्या।

(४८) यहूदी व ईसाई मुसलमानों के दुश्मन–

"मुसलमानो। यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ"....।५१। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ८ 'और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ' आयत ५७ रु० ६॥

समीक्षा–अरबी खुदा चाहता है कि मुसलमान दुनिया में किसी को भी दोस्त न समझें। अर्थात उनको भी संसार अपना दुश्मन समझ कर उनसे घृणा करने लगे। यदि संसार की सभी कौम मुसलमानों का पूर्ण बहिष्कार सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक तौर पर करदें तो खुदा की पूरी ताकत लगने पर भी मुसलमान दुनियां से मिट जावेंगे। अरबी खुदा मुसलमानों का साक्षात शत्रु था जो उन्हें ऐसा हुक्म उसने दिया।

(४९) खुदा के दो हाथ हैं–

"खुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं।" ६४। कु० पा० ६ सू० मायदा रु० ६॥

समीक्षा––रावण के बीस हाथ थे, सहस्त्रबाहु के हिन्दू हजार हाथ मानते हैं, विष्णु के चार हाथ तथा शक्ति के आठ हाथ माने जाते हैं, पर कुरान के अरबी खुदा के सिर्फ दो ही हाथ थे। इस कल्पना में हिन्दू लोग अरबी मुसलमानों से बाजी मार ले गये और जीत में रहे।

(५०) शराब की निन्दा—

"मुसलमानो ! शराब जुआ बुत और पांसे यह शैतानी काम है। इससे बचो, शायद इससे तुम्हारा भला हो।" कु० पा० ७ सूरे मायदा रु० १२ आ० ९० ॥

समीक्षा—यह ठीक है कि शराब जुआ मूर्ति पूजा और पांसे गन्दे काम हैं, सभी को इससे बचना चाहिए। पर खुदा ही सोंठ कपूर मिली कस्तूरी की डाट लगी मजेदार शराब पिलावे या उसका लालच दे तो उस भले आदमी को क्या कहा जावे। कुरान में एक जगह शराब की बुराई तथा दूसरी जगह उसकी तारीफ करना यह अरबी खुदा की अक्ल की विशेषता है। बुत परस्ती जब पाप है तो हज्ज में संगे असबद पत्थर का बोसा लेने वाले काफिर क्यों न माने जावें।

(५१) ईसा के बारे में गलत ब्यान—

उस दिन अल्लाह कहेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा !..... जबकि तुम हमारे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूंक मार देते तो वह हमारे हुक्म से पक्षी बन जाता.....।" ११० कु० पा० ७ सू० मायदा रु० १५ ॥

समीक्षा—कुरानी खुदा का यह ब्यान सर्वथा मिथ्या है। ईसा ने कभी मिट्टी की चिड़िया बनाकर फूंक मार कर जिन्दा नहीं की थी। इन्जील में या इतिहास में इसकी कोई मिसाल नहीं दी है।

(५२) बिना खुदा की मर्जी से कोई सीधे रास्ते पर नहीं आ सकता

"और अगर खुदा को मन्जूर होता तो इनको सीधे रास्ते पर राज़ी कर देता तो देखो तुम कहीं मूर्खों में न हो जाना।" ३५ कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ४ ॥

समीक्षा—मुसलमानों को चाहिये कि पहिले खुदा की मर्जी मालूम करलें उस के बाद लोगों को इस्लाम का उपदेश दिया करें। अगर खुदा चाहेगा तो लोग खुद व खुद मुसलमान बनने को उसके पास चले जावेंगे ! वरना उनकी मेहनत बेकार जावेगी।

(५३) खुदा ने हर चीज किताब में लिखली है-

"कोई चीज नहीं जिसे हमने किताब में न लिखा""हो:—। ३८ ॥ कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ४ ॥

समीक्षा—कुरानशरीफ में तो हर चीज लिखी नहीं है, फिर वह किताब कौन सी और कहाँ पर रखी है जिसमें सभी कुछ लिखा रखा हो। खुदा को शायद अपनी यादगार के लिए हर बात डायरी में लिख लेनी पड़ती हो ताकि वक्त पर भूल न जावे।

(५४) खुदा ही लोगों को भटकाता हैं–

"खुदा जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहें उसे सीधे रास्ते पर लगादे।" ३९ कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ४ ॥

समीक्षा—अरबी खुदा को लोग इसीलिये ज़ालिम और अन्यायी कहते हैं कि वह बिना बजह भोले भाले लोगों को भटका देता है और इन्सान का पक्का दुश्मन हैं।

(५५) खुदा ने बेशुमार पैगम्बर भेजे थे—

"तुमसे पहिले बहुत उम्मतों (संगतों) की तरफ पेगम्बर भेजे थे""।" ४२ ॥ कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ५ ॥

समीक्षा—कृपया बतावे कि भारतवर्ष-अफ्रीका–चीन–जापान अमरीका आदि देशों में खुदा ने कौन २ से पैगम्बर और खुदाई किताबें भेजी थी? यदि नहीं भेजी तो क्यों? खुदा का सारा प्यार अरब के रेगिस्तानी वासिन्दों पर ही हमेशा क्यों उमड़ता रहा था। (नोट–कुरान पा० ३ सू० आलइमरान आ० २० में अरब वालों को खुदा ने जाहिल घोषित किया है)

(५६) कुरान मक्का के आस पास वालों को डराने को उतारा था

और यह किताब आसमानी है जिसको हमने उतारा है, बरकत वाली है और जो किताबें इससे पहले की हैं उनकी तसदीक करती हैं। और ऐ पैगम्बर। हमने इसको इस वजहसे उतारा है कि तुममक्का वालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं उनको डराओ।

कु० पा० ७ सू० अनआम रु० ११ आ० २ ॥

समीक्षा—अरबी खुदा कहता है कि कुरान सिर्फ मक्का और उसके आस पास के रहने वालों को डराने के लिए उतारा गया था, यह सारे संसार के लिए नहीं बनाया गया था। इसके मानी यह हैं कि लोगों को उसे न मानना चाहिए। वह भी डराने को उतारा था न कि किसी को अच्छे उपदेश देने के लिए।

(५७) मुशरिक खुदा की मर्जी से बने थे—

"अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते और हमने तुम को इन पर निगाह वान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो।" १०७। कु० पा० ७ सू० अनआम रु० १३ ॥

समीक्षा—जब लोग खुदा के बनाने या उसकी मर्जी से ही मुशरिक बने थे तो फिर उन को सूरते तोबा आ० ४ में कुरान में काफिर और कत्ल करने योग्य अरबी खुदा ने क्यों बताया है। अजीब खुदा था कि लोगों को गुमराह भी करता था और फिर उन्हें कत्ल भी कराता था।

(५८) खुदा ने जुल्म करने को ही जालिम पैदा किये—

"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े २ अपराधी पैदा किये ताकि वहां फसाद करते रहें। और जो फसाद वह करते हैं अपनी ही जानों के लिये करते हैं और नहीं समझते।" ॥ कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १५ आ० १२३ ॥

समीक्षा—जब कि हर बस्ती में फसादी खुदा ने केवल इसी लिये पैदा किये हैं कि वे फसाद करते रहें तो वे खुदा के हुक्म का पालन करेंगे ही। उस हालत में जो कुछ भी बदमाशी वे करेंगे उसकी पूरी जिम्मेदारी खुदा पर ही होगी। उनको दोषी बताना खुदा की ना अक्ली की बात है। वे खुदा की मर्जी के खिलाफ नहीं जा सकते है।

(५९) इस्लाम की सीधी राह—

"जिसको खुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल को

इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसको भटकाना चाहता है उसके दिल को तङ्ग कर देता है। कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १५ आ० १२५ ॥

समीक्षा—जो खुदा इतना अन्यायी हो कि लोगों को बिना बजह गुमराह करता रहता हो उसके प्यारे मजहब इस्लाम से जो दूर रहता है वही भाग्यशाली है। हम तो इस्लाम में फंसने वालों को बद किस्मत ही समझते हैं। पहले यहूदी मजहब सीधी राह था अब इस्लाम हो गया खुदा रोजाना नई राह बदलता रहता है। आगे कोई और सीधी राह होगी।

(६०) कर्मों के अनुसार दर्जे होंगे—

"और जैसे जैसे कर्म किये है उन्हीं के बमूजिब सबके दर्जे होंगे और जो कुछ ये कर रहे हैं तुम्हारा परवर्दिगार उससे बे खबर नहीं है।" १३२ कु० पा० ८ सू० अनआम रू० १६।

समीक्षा—सारे कुरान के कयामत व जन्नत दोजख में इनाम-आराम व सजा एक ही तरह से मिलने का वर्णन है, दर्जों का कोई जिक्र नहीं है। अतः यह आयत गलत है व धोखा देने को लिखी गई हैं। कहीं यह नहीं लिखा है कि किसी को हूरें-गिलमें (लौंडे) और शराबें कम या ज्यादा मिलेगी। लिखा हो तो दिखाया जावे।

(६१) सूरज चांद तारे फर्मांबर्दार हैं-

"और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि यह सब खुदा के फर्मांबर्दार हैं ?" कु० पा० ८ सू० आराफ रु० ७ आ० ५४॥

समीक्षा—आज्ञाकारी वही होता है जो समझ रखता हो। बेजान पदार्थ फर्मांबर्दार या नाफर्मांबर्दार नहीं हो सकता है। उसे जैसे चलाया जावेगा वैसे ही चलेगा। कुरान का सूरज चांद व तारों को फर्मांबर्दार (आज्ञाकारी) बताना अजीब अक्लमन्दी की बात है।

(६२)–बहुत से लोग दोजख ही के लिये पैदा किये हैं–

"और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोजख-ही के लिये पैदा किये हैं।" १७६ कु० पा० ८ सू० आराफ रु० २२ ॥

समीक्षा–जब खुदा ने दोजख में भरने के लिये खास किस्म के लोग पैदा किये हैं तो वे अच्छे आदमी बन ही नहीं सकते हैं। यदि नेक बन जावेंगे तो दोजख को भरने को क्या खुदा को उसमें घुस कर बैठना पड़ेगा। खुदा का काम तो नेक काम करके तरक्की करने वाले नेक आदमी पैदा करना था पर अरबी खुदा को लोगों को दोजख में जला जला कर उनकी चीख पुकार सुनकर मजा लूटने में आनन्द आवेगा। अजीब जालिम खुदा है।

(६३) लूट के माल में खुदा व पैगम्बर का साझा—

"ऐ पैगम्बर! तुम से लूट के माल का हुक्म पूंछते हैं, कहदो कि लूट का माल तो अल्लाह और पैगम्बर का है।" १।

और जान रखो कि जो चीज तुम लूट कर लाओ उसका पांचवां भाग खुदा का और पैगम्बर का और पैगम्बर के रिश्तेदारों का अनाथों का और गरीबों और मुसाफिरों का है॥ रु० ५ आ० ४१ ॥

तो जो कुछ तुमको लूट मे हाथ लगा है उसको पाकर समझकर खाओ....।" ६६ ॥ कु० पा० ६ सू० अन्फाल रु० ६ ॥

समीक्षा—प्रजा की लूट करना, लूटकर गरीब स्त्री बच्चों व पुरुषों को बर्बाद कर देना उनको बेसहारा बना देना यह बहुत ही नीचता का काम होता है। पर अरबी खुदा ने लूट का हुक्म ही नहीं दिया बल्कि उसमें अपना–पैगम्बर व उसके रिश्तेदारों का घर बैठे मुफ्त में हिस्सा भी बांध लिया। कुरान ने लोगों को जुल्म करना ही सिखाया है अच्छी बातें न तो अरबी खुदा को आती थीं न उसके पैगम्बर को। यदि आती होतीं तो प्रजा को लुटवाने और लूट के माल में मुफ्त में हिस्से अपने व उसके न बांधे जाते।

(६४) खुदा ने फरिश्तों की फौजें भेजी—

फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर और मुसलमानों पर अपना सब

उतारा और ऐसी फौजें भेजी जो तुमको दिखाई नहीं पड़ती थी और काफिरों को बड़ी सख्त मार दी।" ॥ कु० पा० १० सू० तोबा रु० ४ आ० २५ ॥

समीक्षा—पर यही फौजें भारत पाक युद्ध में भारतीय सैनिकों से तीन बार मार खाकर हार गई। लोगों को मूर्ख बनाने को फ़रिश्तों की फौजों की कल्पना की गई थी।

(६५) काफिरों से लड़ो-जज़िया लो--

किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन (इस्लाम) को मानते हैं, इनसे लड़ो यहां तक कि जलील होकर (अपने) हाथों जज़िया दें ॥ २९ कु० पा० १० सूरे तोबा रु० ४ ॥

समीक्षा--कुरान विचार स्वतन्त्रता का घोर विरोधी है और इस्लाम से भिन्न विचार रखने वालों पर जुल्म करने का हुक्म देता है यह ऊपर स्पष्ट है। इतिहास साक्षी है कि ऐसी आयतों के प्रभाव से मुसलमानों ने संसार में खून की नदियां बहाई थीं और दूसरों पर घोर अत्याचार किये थे। क्या यह फिसाद की बातें सिखाने वाला और अमन (शान्ति) का सख्त विरोधी नहीं है? बंगला देश के अत्याचार इसी की मिसाल हैं।

(६६) कुरान में दो खुदा--

खुदा इनको गारत करे, किधर को भटके चले जा रहे हैं।" ३० ॥ ऐ मुहम्मद! खुदा तुझे माफ़ करे। ४३ ॥ कु० पा० १० सू० तोबा रु० ५ व ६ ॥ "मैं तो पूरब और पश्चिम के परवदिगार की कसम खाता हूँ।" ४० पा० २९ सूरे मआरिज ॥

समीक्षा—कुरान खुदा ने कहा है यह कुरान में लिखा है और वही खुदा कहता है कि खुदा इनको गारत करे। इससे प्रगट है कि कुरानी खुदा से बड़ा कोई दूसरा खुदा और भी है। उसी से मुहम्मद को माफ़

कराने की कुरानी खुदा ने प्रार्थना की थी। (नं० १८ भी देखो।)

(६७) आसपास के काफिरों से लड़ने का आदेश—

मुसलमानो! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुमसे सख्ती मालूम करें। और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साक्षी है जो बचते हैं। १२३॥ कु० पा० ११ सू० तौबा रु० १६॥

समीक्षा - जब दुनियां में सभी मुसलमान अपने पड़ोसी गैर मुस्लिमों से लड़ते रहेंगे तो किसी भी मुल्क में शान्ति कैसे रह सकती है। कुरान ने संसार में मार काट मचाने की शिक्षा देकर मुसलमानों के जहन को हमेशा खराब किया है। यदि गैर मजहब वाले भी ऐसी ही बात मुसलमानों के बारे में सोचने लगें तो क्या इस्लाम का नामो निशान भी दुनियां में बाकी रह सकेगा। क्रिया की प्रतिक्रिया असम्भव नहीं है॥

(६८) खुदा अर्श पर बैठता है उसका मालिक है तख्त पानी पर था—

"तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर तख्त पर जा बिराजा। ५४। कु० पा० ८ सूरे आराफ रु० ७॥ अर्श जो बड़ा है उसका भी वही मालिक है '१२९ कु० पा० ११ सू० तौबा रू० १६॥ वही है जिसने जमीन और आसमान को छः दिन में बनाया और उसका तख्त पानी पर था। ७। कु० पा० १२ सू० हूद रु० १॥

समीक्षा—अरबी खुदा जब कुन 'हो' कह कर सब कुछ बना सकता था तो छः दिन तक दुनियां बनाने की भूल न जाने उससे क्यों हो गई। मेहनत कर के तख्त पर आराम करने को जा बैठना ठीक ही था, उससे थकावट मिट गई होगी। पर जब खुदा ने तख्त नहीं बना या होगा तब तक वह किस पर बैठता था यह प्रश्न ज्यों का त्यों रह गया, क्यों कि बनने से पहिले अर्श (तख्त) नहीं होगा। खुदा को तख्त का मालिक बनाने से उसकी इज्जत नहीं बढ़ती है। जब वह सारे विश्व का मालिक मान लिया गया तो फिर तख्त सूरज, चांद, जमीन,

पहाड़ आदि का अलग अलग मालिक बताना बेकार का बात है। और तख्त तो पत्थर का होगा उसका कोई महत्व नही है। इस पर एक यह भी प्रश्न है कि खुदा बड़ा है या तख्त। यदि खुदा बड़ा है तो तख्त पर बैठ नही सकेगा। यदि तख्त बड़ा है तो खुदा तख्त से भी छोटा साबित हो गया। यदि दोनो बराबर हैं तो खुदा वे मिसाल नही रहा। यदि तख्त हमेशा से है तो खुदा और तख्त उम्र की द्रष्टि से बराबर हो गये। यदि तख्त पानी पर है तो पानी किस पर है, यह क्यों नहीं बताया गया है ?

(६९) कुरान तफसील है—

यह किताब (कुरान) इस किस्म की नही कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इससे पहले की हैं उनकी तस्दीक करती है और उन्हीं की तफसील है। इसमें सन्देह नही कि यह खुदा ही की उतारी हुई है। ३७॥ कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ४॥

समीक्षा—जब कि कुरान पुरानी किताबों की तफसील (व्याख्या) मात्र है तो असल किताबों के रूप में पुरानी किताबों का महत्व बढ़ जाता है और कुरान का दर्जा घटिया बन जाता है क्योंकि इस में जो कुछ भी है पुरानी किताब की ही व्याख्या है।

(७०) हर बात रोशन किताब में लिखी है—

"न जमीन में और न आसमान में और जर्रे से छोटी चीज हो या बड़ी, रोशन किताब में लिखी हुई है। "६१॥ कु० पा० ११ सूरे यूनिस रु० ७॥ जर्रा से छोटी और जर्रा से बड़ी जितनी चीजें हैं रोशन किताब में सब लिखी हुई हैं।" कु० पा० २२ सूरे सबा आ० ३॥

समीक्षा—यह रोशन किताब कुरान तो हो नही सकता क्योंकि उसमें हर चीज का जिक्र नहीं है। तब यह कौन सी किताब है और कहां है ? यदि खुदा के पास लिखी रखी है तो उसका जिक्र करना बेकार है। यदि दुनियां में है तो वह किताब वेद ही हो सकते हैं क्योंकि

समस्त सत्य विद्याओं के भण्डार हैं। रोशनी का अर्थ ज्ञान या प्रकाश होता है। वेद शब्द का अर्थ भी ज्ञान है। नाम से भी रोशन किताब का अर्थ वेद ही बनता है। कुरान के भक्तों को इस पर विचार करना चाहिये।

(७१) खुदा दिलों पर मुहर कर देता है—

हम बेहुक्म लोगों के दिलों पर मुहर कर दिया करते हैं।" ७४। कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० ६॥

समीक्षा—प्रश्न यह है कि दिलों पर मुहर यदि खुदा बेहुक्म बनने से पहिले कर देता है तब तो उन लोगों का कोई दोष नहीं है, खुदा ही गुनहगार है। और यदि बाद को करता है तो बेकार रहा क्योंकि लोग अपनी मर्जी से बेहुक्म बनते हैं। खुदा की मौहर से नहीं।

(७२) खुदा नहीं चाहता कि सब मुसलमान बनें—

"और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो जितने आदमी ज़मीन की सतह में हैं सबके सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह ईमान ले आवें। ६६। किसी शख्स के हक में नहीं है कि बिना हुक्म खुदा के ईमान ले आवे.....।" १००॥ कु० पा० ११ सूरे यूनिस रु० १०॥

समीक्षा—जब तक खुदा नहीं चाहेगा कोई भी मुसलमान न बनेगा। यदि खुदा इस्लाम का प्रचार चाहेगा तो पल भर में दुनियां को मुसलमान बना देगा। तो किसी भी मौलवी को इस्लाम का प्रचार नहीं करना चाहिये क्यों कि खुदा दुनियां को मुसलमान बनाना नहीं चाहता है। या यह मानना चाहिये कि 'अंगूर खट्टे हैं' की कहावत के अनुसार खुदा की ताकत के बाहर है कि सभी को मुसलमान बना सके।

(७३) एक व दस सूरतें बनाने की शर्त—

"क्या वह कहते हैं कि इसे खुद (मुहम्मद ने) बना लिया है? (तू कह दे कि) यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और खुदा के सिवाय जिसे चाहो बुला लो। ३८। कु० पा० ११

सूरे यूनिस रु० ५ ॥ "क्या (काफिर) कहते हैं कि उसने कुरान को अपने दिलसे बना लिया है, तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुलालो अगर तुम सच्चे हो।" १३ ॥ कु० पा० १२ सूरे हूद रु० २ ॥

समीक्षा—पहिले खुदा ने एक सूरत बनाने की शर्त लगाई थी। पर जब किसी ने एक सूरत बनाकर पेश करदी होगी तो झट खुदा ने दस सूरतें बनाने की शर्त बदल दी। अरबी खुदा अपनी जबान का भी पक्का नहीं था। उसे अपनी बात बदलने में कुछ भी शर्म व संकोच नहीं होता था। आखिर अरबी खुदा ही तो था दुनियां का खुदा नहीं था। जब खुदा ने देखा कि लोग दस सूरतें भी बनाने में लगे हैं और लगातार यह ऐतराज करते हैं कि कुरान खुदाई न होकर मुहम्मद खुद बना रहा हैं तो उसने यह कह कर अपनी जान छुड़ाई कि—

"क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर ऐतराज करते हैं और कहते हैं कि कुरान को इसने खुद बना लिया है, (तुम) उनको जबाव दो कि अगर कुरान मैंने खुद बना लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो गुनाह तुम करते हो मेरा कुछ जिम्मा नहीं।" ३५। कु० पा०. १२ सूरे हूद रु० ३ ॥

हर परेशान व्यक्ति यही कहता है जो परेशान खुदा ने मुहम्मद से कहलाकर बात खत्म कर दी थी। गलत बात का आखिर समर्थन कब तक किया जा सकता था।

(७४) अप्राकृतिक व्यभिचार और लूत की बेटियां—

और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने की बजह से तंग दिल हुए और कहने लगे यह तो बड़ी मुसीबत का दिन है।७७। लूत की जाति के लोग दौड़े-दौड़े लूत के पास आये और यह लोग पहिले से ही बुरे काम किया करते थे। लूत कहने लगे, भाइयो !. यह मेरी बेटियां हैं यह तुम्हारे लिये

ज्यादा पवित्र हैं। तो खुदा से डरो और मेरे मेहमानों में मेरी बदनामी न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं ? ७८। उन्होंने जबाव दिया कि तुम को मालूम है कि हमको तुम्हारी बेटियों से कोई ताल्लुक नहीं, हमारे इरादे से तुम भली प्रकार जानकार हो। ७९। कु० पा० १२ सूरे हूद रु० ७॥

समीक्षा—अरब में अप्राकृतिक व्यभिचार बहुत प्रचलित था, यह इससे प्रगट है कि लोग खुले आम स्त्रियों को पसन्द न करके सुन्दर लड़कों को चाहते थे। पैगम्बर लूत का अपनी बेटियों को गुन्डों को पेश करना, और उनका लड़कियों के बजाय सुन्दर लड़कों को मांगना इसका सबूत है। खुदाई किताब कुरान में इस प्रकार की गन्दी बातों का उल्लेख होना उसके लिये शोभा की बात है या बदनामी की, यह हर कोई समझ सकता है। अरबी खुदा भी कैसा था जो ऐसी भद्दी बातों को भी उसमें लिखाना नहीं भूला। खुदा भी सुन्दर लड़के (गिलमे) जन्नत में पेश करेगा।

(७५) अरबी में ही कुरान क्यों उतारा गया—

हमने इस कुरान को अरबी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझ सको। २। कु० पा० १२ सूरे यूसुफ रु० १॥

समीक्षा—जबे कि कुरान का उद्देश्य ही मक्का और उसके आस-पास के लोगों को डराना था तो उसे अरबी में ही उतारना ठीक था ताकि वे उसे समझ सकें। पर यह नहीं बताया कि असली कुरान खुदा के पास किस भाषा में लिखा रखा है। शायद वह संस्कृत में ही होगा क्योंकि प्राचीनतम भाषा संस्कृत ही है। निम्न प्रमाण भी देखें। "(ऐ मुशरिकीन अरब ! हमने यह इसलिये उतारी) कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहिले बस दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी और हम तो उसके पढ़ने पढ़ाने से बिल्कुल बेखबर थे। १५६। कु० पा० ८ सूरे अनआम रु० २०॥ इस प्रमाण से भी स्पष्ट है कि कुरान मक्का और उसके आस पास या मुशरिकीन अरब वालों को इस्लाम में फांसने

के लिये खुदा के नाम से बनाया गया था। वास्तव में वह संसार के लिये नहीं बना था, न सभी को उसे मानना चाहिये।

(७६) आसमानों को ऊंचा खड़ा किया—

"अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना किसी सहारे के ऊंचा बनाकर खड़ा किया तुम देख रहे हो फिर तख्त पर जा बिराजा।"२॥ कु० पा० १३ सूरे राद॥

समीक्षा—इस आयत में खुदा का आना जाना-आसमान बनाकर फिर तख्त पर जा बैठना लिखा है, इससे स्पष्ट है कि खुदा हाजिर नाजिर (सर्वव्यापक नहीं है। आसमान जब कोई ठोस पदार्थ नहीं है तो उनका ऊंचा और बे सहारा बनाकर खड़ा करना कहना कुरान बनाने वाले को पूरा ना समझ साबित करता है।

(७७) असली कुरान से मुर्दे जी उठे-पहाड़ चलने लगे-जमीन फ़ट जावेगी—

और अगर कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता''''।" ३१॥ कु० पा० १३ सूरे राद रु० ४॥

समीक्षा—(ऐ पैगम्बर) अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि वह खुदा के डर के मारे झुक गया होता और फट गया होता और हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं ताकि वह सोचें।" २१ कु० पा० २८ सू० हशर रु० ३॥

अगर मौजूदा कुरान सच्चा होता तो दुनियां में एक भी मुसलमान मरना नहीं चाहिये था, जमीन जब फट सकती थी तो अलमारी में भूकम्प कुरान रखने से आजाना चाहिये था-मस्जिदें कुरान रखने से भिस्मार हो जानी चाहिये थीं-पहाड़ों में रास्ते बनाने को डाइनेमाइट से उड़ाने के बजाय कुरान से काम लेना चाहिये था। पर एक भी शर्त कुरान से पूरी नहीं होती है अतः हम दावे के साथ कहते हैं कि मौजूदा कुरान बिल्कुल नकली है, यह कुरान की ही शर्त पर असली साबित

नहीं किया जा सकता है ।

(७८) खुदा के पास असल किताब है—

"खुदा जिसको चाहे मिटा देता है और (जिसको चाहता है) कायम रखता है और उसके पास असल किताब है ।" ३९ ।। कु० पा० १३ सूरे राद रु० ६ ।।

समीक्षा—अरबी खुदा भी किताबें पढ़ता है और डायरी रखता है ताकि और झंझटों व परेशानियों के कारण सब कुछ भूल न जावें । जिसकी याद्दाश्त कमजोर हो उसे हर बात लिखकर रखना बिल्कुल मुनासिब है । बादाम पाक खाने से भी स्मृति शक्ति (याद्दाश्त) तेज हो जाती है, यह सभी को फायदा करता है । खुदा चाहे तो इस्तेमाल कर सकता है और फायदा उठा सकता है ।

(७९) सूरज चक्कर खाता है—

"और सूरज व चाँद जो चक्कर खाते हैं एक दस्तूर पर तुम्हारे काम में लगाया । और रात दिन को तुम्हारे अधिकार में कर दिया ।" ३३ । कु० पा० १३ सू० इब्राहीम रु० ५ ।

समीक्षा—सूरज को घूमना बताना विज्ञान विरुद्ध है । खुदा बेचारे को इतनी भी जानकारी नहीं थी, ताज्जुब की बात है ।

(८०) इब्राहीम का नमाज पढ़ना (गलत है)

("इब्राहीम ने दुआ की) । ३५ । 'ऐ मेरे परवर्दिगार ! मुझको और मेरी सन्तान को ताकत दे कि मैं नमाज पढ़ता रहूं और ऐ मेरे परवर्दिगार ! मेरी दुआ कबूल कर ।" ४० । कु० पा० १३ सूरे इब्राहीम रु० ६ ।।

समीक्षा—इब्राहीम यहूदी था जो मौहम्मद से हजारों साल पहिले हुआ था । नमाज सूरते फ़ातिहा से पढ़ी जाती है जो कि कुरान की सर्व प्रथम सूरत है और मुहम्मद के काल में कुरान बनते समय बनी थी (सू० हिज्र आ० ८७ देखो) । अतः इब्राहीम का नमाज पढ़ने की प्रार्थना करना सर्वथा गलत है । नमाज का प्रचलन मुहम्मद से ही हुआ था ।

(८१) फ़रिश्ते उतरने की बात गलत है--

(लोगों ने कहा) ऐ शख्स अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता। ७। सो हम फरिश्तों को नहीं उतारा करते मगर फैसले के लिये""।" ८ ॥ कु० पा० १४ सू० हिज्र।

समीक्षा--मुहम्मद साहब कहते थे कि कुरान जिब्रील फरिश्ते के द्वारा खुदा उनके पास भेजता है तो लोगों ने चुनौती दी कि हमारे सामने फरिश्ते को बुलाओ। क्योंकि फ़रिश्ते वाली बात गलत थी अतः बजाय मुहम्मद के खुदा ने उनकी विकालत करके जबाव दे दिया कि हम फरिश्ते नहीं भेजते हैं। इससे जिब्रील द्वारा कुरान आने की बात स्वयं गलत साबित हो गई। मुहम्मद का दाबा खुदा ने झूठा कर दिया।

(८२) आसमान में बुर्ज--

"हमने आसमान में बुर्ज बनवाये।" १६ ॥ कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० २ ॥

समीक्षा--आसमान में कोई बुर्ज नहीं है। कुरान की बात बेसर पैर की है।

(८३) तारे टूटना शैतान को मारना है--

और हर निकाले हुए शैतान से उसकी रक्षा की। १७। मगर चोरी छिपा कोई बात सुन भागे तो दहकता हुआ अंगारा एक तारा इसे खदेड़ने को उसके पीछे होता है।" १८। कु० पा० १४ सूरे हिज्र रु० २॥

समीक्षा--उल्कापात को शैतान को मारने को तारे टूटना बताना कुरानी खुदा की खगोल विद्या से अज्ञानता प्रगट करता है।

(८४) जमीन में पहाड़ गाढ़े--

और हमने जमीन को फैलाया और हमने उसमें पहाड़ गाढ़ दिये। १९ ॥ कु० पा० १४ सूरे हिज्र रु० २ ॥ 'जमीन झुकने न पावे' १५ सू० नहल रु० २ ॥

समीक्षा--गाढ़ी जाने वाली वस्तु जिसमें गाढ़ी जाती है उससे प्रथक होती हैं तभी उसे गाढ़ा जा सकता है। किन्तु पहाड़ों का विकास जमीन के अन्दर से ऊपर को होता है अतः उनका गाढ़ना बताना अज्ञानता की बात है और गलत है। अरबी खुदा इतना भी नहीं जानता था आश्चर्य की बात है।

(८५) शैतान की बनाई आयतों के चन्द नमूने—

"वह बोला मैं ऐसे शख्स को सिजदा न करूंगा जिसे तूने सड़े हुए गारे से पैदा किया और बन खनाने लगता है। ३३। ऐ मेरे परवदिगार (शैतान ने कहा जैसी तूने मेरी राह मारी मैं भी दुनियां में इन सबको बहारें दिखाऊंगा और उन सबको राह से बहकाऊंगा। ३९। सिवाय उनके जो तेरे चुने बन्दे हैं। ४०।

नोट—शैतान की कही अनेक आयतें कुरान में कई स्थानों पर दी हैं। कु० पा० १४ सूरे हिज्र रु० ३॥

समीक्षा—कुरान का दावा है कि कोई भी मनुष्य या जिन्न या फरिश्ता कुरान की जैसी एक भी सूरत नहीं बना सकता है, चाहे सब मिलकर भी बनाने की कोशिश करें। कु० पा० १५ बनी इस्राइल रु० १० आ० ८८। पर अकेले शैतान ने कितनी ही आयतें बना कर दिखा दीं जो कुरान में दी हुई हैं। इस प्रकार कुरान का दावा गलत हो गया।

(८६) पिछली जिन्दगी का विश्वास करो— (पुनर्जन्म का समर्थन)

लोगो! तुम्हारा एक खुदा है, सो जो लोग पिछली जिन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिन इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं। २२। कु४ पा० १४ सू० नहल रु० ३॥

समीक्षा—जब खुदा ने पहिली बार ही लोगों को पैदा किया है तो उनको पिछली जिन्दगी का विश्वास न करने पर घमण्डी बताना बेबकूफी की बात साबित होती है। हां हिन्दुओं के उसूल से जीवों का सदैव पुनर्जन्म होता रहता है। पुनर्जन्म की बात मानने से ही पिछली

जिन्दगी की बात का हल निकल सकता है। हमारे विचार से कुरान-कार पुनर्जन्म के सिद्धान्त को ही यहां प्रगट कर रहा है।

(८७) कयामत करीब है—

"कयामत का वाके होना तो ऐसा है कि जैसा आंख का झपकना बल्कि वह करीब है। बेशक अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है।७७। कु० पा० १४ सू० नहल रु० ११।

समीक्षा—अब से १४०० वर्ष पहले यह आयत लिखी गई थी कि कयामत बहुत करीब आ लगी है। परन्तु आज तक इतना समय बीतने पर भी कयामत नहीं आ पाई है। वास्तव में सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय के रहस्य को अरबी खुदा और उसके पैगम्बर दोनों ही नहीं समझ पाये थे। अभी तो जमीन की आधी उम्र भी नहीं बीती है। पृथ्वी की आयु चार अरब बत्तीस करोड़ साल की है जिसमें से अभी तक एक अरब सत्तानवे करोड़ उन्तीस लाख उनञ्चास हजार चौहत्तर साल बीते है। शेष अभी भोगने को है। उसके बाद प्रलय आवेगी, यह वैदिक सिद्धान्त सर्वथा सत्य है।

(८८) सबका एक गिरोह बनाना खुदा को मन्जूर न था—

खुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही गिरोह बना देता, मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सुझाता है। और जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूंछ ताछ होगी।९३। कु० पा० १४ सूरे नहल रुकू १३॥

समीक्षा—जब खुदा ने ही नेक व बदमाशों को हिन्दू मुसलमानों यहूदियों के गिरोह अलग अलग बना कर उनको लड़ाया है तो उनसे उनके कर्मों की पूंछ करने का उसे क्या हक है। बदमाशों के गिरोह बदमाशी करेंगे ही, वे बनाये ही इसीलिए गए हैं।

(८९) कुरान में खुदा ने आयतें बदल डाली

जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं और जो हुक्म उतरता है उसको वही खूब जानता है....।१०१। कु० पा० १४ सूरे नहल रु० १४ तथा कु०पा०३१ सू० बकर रु०११ आ०१०६

समीक्षा—अरबी खुदा जब भी अपनी पहिली आयतों में गलती पाता था तो उनको कुरान में से निकाल कर नई आयतें बना कर घुसेड़ देता था। अपने हुक्मों में वह हमेशा तरमीम (संशोधन) करता रहता था यह बात ऊपर के प्रमाण से स्पष्ट है। इसीलिये हम कहते हैं कि मौजूदा कुरान वह असली कुरान नहीं है जो पहली वार में उतरी आयतों वाला था। यह तो कटा छटा संशोधित संस्करण है अतः अमान्य है। पटना की खुदावख्श लायब्रेरी में आज भी ४० सिपारे वाला कुरान रखा है जबकि मौजूदा कुरान में केवल ३० सिपारे ही मिलते हैं। इससे भी वर्तमान कुरान अमान्य हो जाता है।

(६०) कुरान जिब्रील फरिश्ता लाया था—

"कहो कि सच तो यह है कि इस (कुरान को) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से पाक रूह जिब्रील लेकर आये हैं ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं खुदा उनको अचल रखे....।" १०२ ॥

कु० पा० १४ सूरे नहल रु० १४ ॥

समीक्षा—यह आयत इसलिए गलत है क्योंकि पीछे सूरते हिज्र आ० ८ में खुदा फरिश्ते उतारने की बात से साफ इन्कार कर चुका है। दोनो में से एक आयत अवश्य मिथ्या है। सचाई यह है कि कुरान मौहम्मद साहब ने लिखा था और खुदा के नाम से लिखा था ताकि लोग उनकी बात का विश्वास कर लेवे।

(६१) बिना पहले पैगम्बर भेजे खुदा सजा नहीं देता है—

"जब तक हम पैगम्बर को न भेज लें (किसी को उसके अपराध की) सजा नहीं दिया करते।" १५। कु० पा० १५ बनी इस्राएल रु० २ ॥

समीक्षा—यदि यह दावा सही है तो दो सौ करोड़ से संसार में पदा होने वाले लोगों को कर्म फल खुदा नहीं दे सकेगा। भारत में प्राचीनतम काल से मनुष्यों की आबादी है पर खुदा ने किसी भी पैगम्बर को क्यों नहीं भेजा। यदि भेजा था तो उसका जिक्र ईसा मूसा नूह आदि की तरह कुरान में क्यों नहीं किया है ?

(९२) अरबी खुदा के जुल्मों का नमूना—

हमको जब किसी गाँव को मार डालना मंजूर होता है, हम उसके खुशहाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें बेहुक्मी करते हैं तब उन पर यह सजा साबित हो जाती है। फिर हम उसी बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं। १६। प्रा० १५ सू० बनी इस्राएल रु० २।

समीक्षा—अरबी खुदा के दिमाग में खुशहाल लोगों को देखकर जलन पैदा होती है। जैसे कि तन्दुरुस्त पशु को देख कर कसाई उसको मारने की सोचता है या सम्पन्न लोगों को देख कर डाकू बदमाश उनको लूटने की बात सोंचते हैं। खुदा भी गन्दे हथकन्डों से उन पर लांछन लगा कर उनको तबाह कर देता है। यह इन्सानों का दुश्मन खुदा है। इस में और राक्षसों में क्या अन्तर हो सकता है। कोई भी आदमी उससे अपनी भलाई की कैसे आशा कर सकता है! खुदा बरबादी पसन्द है न कि प्रजा की खुशहाली पसन्द है।

(९३) खुदा के साथ दूसरे की इबादत का निषेध—

"खुदा के साथ किसी दूसरे की इबादत नहीं करना। नहीं तो तुम दुर्दशा पाकर बैठे रह जाओगे।" २२॥ कु० पा० १५ सू० बनी इस्राइल रु० २॥

समीक्षा—यह हुक्म तो ठीक है पर मुसलमानों के मौजूदा कल्मे में खुदा के साथ 'मुहम्मद रसूलल्लाह' जो बोला जाता है वह गलत है। कल्मा ही गलत हो जाता है। लाशरीक खुदा के साथ मुहम्मद को शरीक कर देने से मुसलमान काफिर बन जाते हैं।

(९४) खुदा कुरान सुनने पर परदा लगा देता है—

"(ऐ पैगम्बर) जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम में और उन लोगों में जिनको कयामत का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं।४५। उनके दिलों पर आड़ रखते हैं ताकि कुरान को समझ न सकें और उनके कानों में बोझ डालते हैं ताकि सुन न सकें। और जब कुरान में अकेले खुदा की चर्चा करती है तो काफिर नफरत से उल्टे भाग खड़े

होते हैं। ४६ ॥ कु० पा० १५ सू० बनी इस्राईल रु० ५ ॥

समीक्षा—जब अरबी कुरानी खुदा खुद ही नहीं चाहता कि लोग कुरान को सुने और यदि कोई सुनना भी चाहे तो वह उनके बीच में परदा डाल देता है उनके दिल-दिमाग व कानों में बोझ डाल देता है ताकि वे सुन व समझ न सकें तो फिर उनका क्या दोष है। काफिर तो खुदा है जो लोगों को अपने प्यारे इस्लाम को समझने से रोकता है।

(९५) विवशतः खुदा ने चमत्कार भेजना बन्द कर दिया—

और हमने चमत्कारों का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले लोगों ने झुठलाया....और हम चमत्कार सिर्फ डराने की गरज से भेजा करते हैं। ५९। बाबजूदे हम इन लोगों को डराते हैं लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को बढ़ाता है। ६०॥ कु० पा० १५ सूरे बनी इस्राईल रु० ६॥

समीक्षा—बेचारे अरबी खुदा की इससे बड़ी परेशानी और क्या हो सकती है कि उसे अपनी नातजुर्बेकारी और लोगों से हार मानने की खुद ही घोषणा करनी पड़ी है। लोग उसके चमत्कारों से डरने के बजाय उसकी मजाक उड़ाते रहे और उसे अपनी हार मान कर अपनी गलती पर पछताना पड़ा तथा आगे चमत्कार भेजना बन्द कर देना पड़ा। खुदा की इस बेबसी में हमारी उसके साथ पूरी सहानुभूति है।

(९६) कयामत को लोग अन्धे बहरे गूंगे उठेंगे—

"कयामत के दिन हम उन लोगों को उनके मुँह के बल अन्धे गूंगे और बहरे करके उठावेंगे।९८। कु० पा० १५ सूरे बनीइस्राईल रु० ११।

(९७) कयामत को लोग देखते सुनते व बोलते उठेंगे—

(कयामत के दिन) फ़िर दुबारा सूर फूंका जायगा। फ़िर वे खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे। ६८। कु० पा० २४ सू० जमर रु० ७॥

"और यह लोग दोजख में चिल्लाते होंगे।"कि हमारे परवर्दिगार! हमको (यहां से) निकाल फिर हम जैसे कर्म करते थे वैसे नहीं करेंगे सुकर्म करेंगे। ३७। पा० ३० सू० फ़ातिर रु० ४।

समीक्षा – ऊपर की कौनसी बात कुरान की झूंठी है और कौनसी सच है, कुरानी खुदा ही बेहतर जान सकता है।

(९८) कुरान में कोई ऐब नहीं है—

"हर तरह की तारीफ खुदा ही को है जिसने अपने सेवक पर कुरान उतारा और उसमें कोई ऐब नहीं रखा। १।" कु० पा० १५ सूरे कहफ रु० १॥

समीक्षा कुरान में पुरानी तौरात जबूर और इन्जील की तफसील है, परस्पर विरुद्ध बातों का उल्लेख है, खुदा की पाक जात को कलंकित किया गया है, खगोल विद्या एवं विज्ञान के विरुद्ध अनेक स्थल हैं, खुदा को अल्पज्ञ व पक्षपाती बताया है, इत्यादि अनेक प्रकार के दोषों वाली आयतों की भरमार होने पर भी खुदा उसे बे ऐब बताता है। वास्तव में यह उसका साहस मात्र है।

(९९) खुदा का अज्ञान

"फिर कई वर्ष के लिए हमने गुफा में उनके कान थपक दिए।११। फिर हमने उनको उठाया ताकि हम देखलें कि दो गिरोहों में से किसको ठहरने की अवधि याद है। १२॥ कु० पा० १५ सूरे कहफ रु० १॥

समीक्षा – कुरानी खुदा बिना परीक्षा किये लोगों के याद होने की भी बात न जान सका उससे उसकी सर्वज्ञ बनने की शेखी की पोल खुल जाती है।

(१००) जन्नत में सोने के कंकण व हरे रेशमी कपड़े मिलेंगे –

वहां सोने के कंगन पहिनाये जायेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे, वहां तख्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे....।३४। कु० पा० १५ सू० कहफ रु० ४॥

समीक्षा – रेशमी कपड़े और सोने के कंगन किस कारखाने के बने होंगे, यह खालिस सोने के होंगे या चौदह कैरट के होंगे। कपड़े टैरीकौट के या ऊनी भी मिल सकेंगे या नहीं या खुदा की मर्जी के ही जबर्दस्ती पहिनने पड़ेंगे। हूरें कैसे कपड़े व हार वगैरह पहिने होंगी

यह बात नहीं खोली गई हैं।

(१०१) खुदा ने शैतानों को मदद क्यों नहीं ली ?—

"हमने आसमान और जमीन को पैदा करते समय बल्कि खुद शैतान के पैदा करते समय भी शैतानों को नहीं बुलाया, और हम ऐसे न थे कि राह भुलाने वालों को (अपना) मददगार बनाते।" ५१। कु० पा० १५ सू० कहफ रु० ७॥

समीक्षा--कुरान में एक शैतान इब्लीस का जिक्र आता है पर यहां शैतानों अर्थात् बहुत से शैतान होने की बात कही गई है। खुदा ने इसी डर से दुनियां बनाते वक्त शैतानों की मदद नहीं ली थी कि वे कहीं खुदा को भी भुलावे में डाल कर गुमराह न कर देवे। खुदा का डर मुनासिब ही था। हो सकता है सारे शैतान मिलकर खुदा पर हावी हो जाते या खुदा के काम को बिगड़वा देते। खुदा ने समझदारी से काम लिया था।

(१०२) सूरज डूबने की जगह कीचड़ का तालाब है--

"यहां तक कि जब (सिकन्दर) सूरज डूबने की जगह पर पहुंचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली कीचड़ के कुण्ड में डूब रहा है और देखा कि उस कुण्ड के करीब एक जाति बसी है....।"।८६। कु० पा० १६ रु० ११ सू० कहफ॥

समीक्षा--सूरज शाम को काली कीचड़ के कुण्ड में डूबता है और उस कुण्ड के किनारे एक जाति भी बसी है, कुरान की इस बात को तारीफ पढ़ने वाले बच्चे खूब करेंगे। आखिर कुरान खुदाई किताब है, उसमें ऐसी विलक्षण बातें न मिलेंगी तो और कहां मिलेगी।

(१०३) जन्नत में सुबह शाम खाना मिलेगा--

"और वहां उनको खाना सुबह शाम मिला करेगा।" ६२॥
॥ कु० पा० १६ सूरे मरियम रु० ४।

(१०४) पुरानी बातों को ही कुरान में दोहराया गया है--

(ऐ पैगम्बर) तुझसे वही बातें कही जाती हैं जो तुझसे पहिले

पैगम्बरों से कही जा चुकी हैं। बेशक तेरा परवर्दिगार क्षमा करने वाला और उसकी सजा दुःखदाई है। ४३।

॥ कु० पा० २४ हामीम सज्दह रु० ५ ॥

समीक्षा—जब कि कुरान में पहिले पैगम्बरों को बताई व उनकी किताबों में लिखी बातों ही की नकल है तो कुरान की विशेषता क्या रह जाती है। नकल से असल किताबें ज्यादा महत्व की साबित हो जाती है। कुरान की शान इस आयत से कम हो जाती है।

(१०५) कुरान आसान कर दिया है—

"तो हमने इस (कुरान) को तुम्हारी जबान में इस गरज से आसान कर दिया है कि तुम उससे परहेजगारो को खुश खबरी सुनाओ, झगड़ालुओं को सजा से डराओ।" ९७ ॥ कु० पा० १६ सूरे मरियम रु० ६ ॥

समीक्षा—असली कुरान किस कठिन भाषा में कहां पर रखा है यह यह भेद खोला जाना चाहिए।

(१०६) जमीन आसमान का एक पिण्ड था—

"क्या जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्होंने नहीं देखा कि आसमान और जमीन का एक पिण्ड सा था। सो हमने (उसको तोड़कर) जमीन और आसमान को अलग-अलग किया और पानी से तमाम जानदार चीजें बनाई तो क्या इस पर भी लोग ईमान नहीं लाते।३०। कु० पा० १७ सू० अम्बिया रु० ३ ॥

समीक्षा—क्या पोल आकाश और ठोस जमीन का पिण्ड भी बन सकता है यह पढ़े लिखे लोग स्वयं सोच सकते हैं। कुरानी खुदा ने उन दोनों को तोड़ कर जुदा जुदा भी कर दिया, कैसी बुद्धि विरुद्ध बात है। इलहाम ही तो है, कोई न कोई विलक्षण बात उसमें होनी ही चाहिये।

(१०७) खुदा ने शर्मगाह में रूह फूंक दी—

"और वह बीबी (मरियम) जिसने अपनी शर्म की यानी शिहबत की जगह की हिफाजत की, तो हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और

हमने उसको और उसके बेटे (ईशा) को दुनियां जहान के लोगों के लिये निशानी करार दिया।" ९१ ॥ कु० पा० १७ सूरे अम्बिया रुकू ६॥

समीक्षा—किसी भी ब्रह्मचारिणी पवित्र कवारी लड़की को शर्मगाह (गुप्तेन्द्रिय) में फूंक मार कर गर्भाधान कराना खुदा को दुराचारी साबित करता है। ऐसा बुरा काम कम से कम अरबी खुदा को तो नहीं करना चाहिये था। मुस्लिम डाक्टरों को सोचना चाहिये कि क्या फूंक मारने से भी गर्भ रह सकता है ?

(१०८) आसमान का लपेटना—

जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं। १०४ ॥ कु० पा० १७ सू० हज्ज रु० ७ ॥

समीक्षा—शून्य आकाश को कागज की तरह लपेटने की बात कहने वाला खुदा और कुरान बनाने वाले की विद्या की योग्यता कितनी थी यह सभी समझ सकते हैं।

(१०९) अल्लाह की मदद करो—

"और जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह अवश्य उसकी मदद करेगा।" ४० ॥ कु० पा० १७ सूरे हज्ज रुकू ५ ॥

समीक्षा—कुरानी अल्लाह भी इन्सान की मदद का मौहताज रहता है यह कुरान ने जाहिर कर दिया है। पर उसकी किस मुसाबत में हम लोग मदद करें यह नहीं खोला है। हर मुसलमान को बेचारे अरबी खुदा की अवश्य मदद करना चाहिए, मुसीबत के दिन किसी पर हमेशा नहीं बने रहते हैं और मदद करने का एहसान बना रहता है। बदले की भावना से मदद करना खुदगरजी की मदद है। हम खुदा की नि.स्वार्थ मदद करेंगे तो हमारा दर्जा खुदा से ऊंचा क्यों नहीं माना जावेगा ?

(११०) आसमान गिरने से रुका है—

आसमान जमीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से। ६५। कु० पा० १७ सूरे हज्ज रु० ९ ॥

समीक्षा शून्य आकाश जमीन पर गिर पड़ेगा यह बात अरबी खुदा की अक्ल की पोल खोलने को उत्तम प्रमाण है। हम खुदावन्द की इल्मी लियाकत को तारीफ करते हैं।

(१११ शरीर के अङ्ग गवाही देंगे--

"जब इनकी जबानें और इनके हाथ और इनके पांव इनके कामों की जो कुछ वे करते थे गवाही देंगे।" २४ ॥ कु० पा० १८ सूरे नूर रु० ३ ॥

"यहाँ तक कि नरक के पास जमा होंगे तो जैसे-जैसे काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान और उनकी आंखें और उनके चमड़े उनके मुकाबिले में गवाही देंगे।" २०। कु० पा० २४ सूरे हामीम सज्दह रु० ३।

समीक्षा--शरीर के अङ्ग अलग-अलग अपने कर्मों की गवाही देंगे यह भी मजेदार बात होगी। व्यभिचारी लोगों व औरतों के अङ्ग भी गवाही देंगे। खुदा के पास कर्मों का रजिस्टर भी मौजूद होगा, मुल्जिमों के वकील भी वहां पर पैरवी कर रहे होंगे, किसी तहसीलदार की कचहरी से कम ठाटबाट की अदालत खुदा की न होगी।

(११२) लोंडियों से व्यभिचार जायज--

"तुम्हारी लोंडियां जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनियाँ की जिन्दगी के फ़ायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर करो। और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये गये पीछे क्षमा करने वाला मेहरबान है। ३३ ॥ कु० पा० १८ सू० नूर रुकू ४ ॥

समीक्षा--बांदियों से जबर्दस्ती जब हरामखोरी करने के बाद खुदा क्षमा कर देगा तो यह आयत बिलकुल बेकार लिखी गई है। हराम-खोरी करना कुरान में जुर्म नहीं माना गया है यह इसी आयत से स्पष्ट हो गया है।

(११३) आसमान में ओलों के पहाड़ हैं--

और आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं जिस पर चाहता है ओले बरसाता है और जिसे चाहता है बचा देता है....। ४३ ॥ कु० पा० १८ सू० नूर रु० ६ ॥

समीक्षा--आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हैं ऐसी बेतुकी बात जिस कुरान में लिखी हो उसे कौन पढ़ा लिखा आदमी खुदाई कलाम मान सकेगा। यह खुदा की इल्मी काब्लियत की मिसाल है।

(११४) जन्नत में बालाखाने मिलेंगे—

'यही लोग हैं जिनको उनके सब्र के बदले में (रहने को) बालाखाने मिलेंगे, और दुआ और सलाम के साथ वहां उनकी अगवानी की जायगी।" ७५ ॥ कु० पा० १९ सू० फुकीन रु० ६ ॥

समीक्षा--जहां बालायें (औरतें) रहती हैं वे बालाखाने, जहां गुसल करते हैं वह गुसलखाने कहे जाते हैं। जन्नत में ऊपर की मन्जिलों में हूरें होंगी वहीं नियां लोग रखे जावेंगे। शायद नीचे की मन्जिलों में गिलमा (लोडे) रहते होंगे। अरबी मुसलमानों को मूर्ख बनाने के लिये जन्नत (बहिश्त) की यह रसोली कल्पना कुरान बनाने वालों ने पेश की थी। वरना ज्यादा औरतों व लोडों से ऐश करना कोई बड़प्पन की बात नहीं है।

(११५) क्या इगलामबाजी अरब से चालू हुई?

"क्या तुम दुनियां के लोगों में से लड़कों पर दौड़ते हो। १६५। और तुम्हारे पालन कर्ता ने जो तुम्हारे लिए बीबियां दी हैं उन्हें छोड़ देते हो बल्कि तुम सरकश कौम हो। १६६ ॥ कु० पा० १९ सू० शुअरा रु० ९ ॥

समीक्षा--कुरान के इस वर्णन से ज्ञात होता है कि अरब में इगलाम बाजी का उस जमाने में खूब प्रचार था, सम्भवतः यह बुराई वहीं से और स्थानों में भी फैली थी। अरबी खुदा (या मुहम्मद) ने इगलाम बाजी पसन्द अरबी लोगों को अपने मजहब में फंसाने के लिए बहिश्त में खूबसूरत गोरे चट्टे कम उम्र के नाबालिग लोंडों (गिलमों) का लालच कुरान में पेश किया था। हम समझते हैं कि जिस किताब को खुदाई कहा जाता है उसमें ऐसी गन्दी बातों का जिक्र होना अफसोस की बात है, उस पर कलंक है।

(११६) खुदा ने मकर किया (मक्कार है)--

और मकर किया उन्होंने एक मकर और मकर किया हमने एक मकर और वह नहीं जानते थे पर देख क्यों कर हुआ आखिर काम मकर उनके का। ५०। यह कि हलाक किया हमने उनको और कौम उनकी को सबको। ५१॥ कु० पा० १६ सू० नम्ल रु० ४॥

काफिर फरेब करते थे अल्लाह भी फरेब करता था। अल्लाह फ़रेब करने वालों में अच्छा फरेब करने वाला है॥ कु० पा० ६ रु० ४॥

समीक्षा—यदि किसी शक्स ने मक्कारी की तो खुदा ने भी मक्कारी की यह कुरान बताता है। पता नहीं खुदा को मक्कारी करने से उसकी वेइज्जती मुसलमान क्यों नहीं मानते हैं। यह तो ठीक है कि खुदा अपनी मक्कारी में जीत गया पर मक्कार होना तो बुरी बात है, इससे अरबी खुदा की शान नहीं बढ़ती बल्कि गिरती है।

(११७) जमीन से एक जानवर निकलेगा—

"और जब वादा (कयामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम जमीन से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे, वह इनसे बातें करेगा····। ८२। कु० पा० २० सूरे नम्ल रु० ६॥

समीक्षा—वह जानवर किस भाषा में लोगों से बातें करेगा, और क्या बात पूछेगा। क्या वह लोगों को दूध भी पिलावेगा। उसकी शक्ल कैसी होगी। खुदा की और उसकी शक्ल में क्या फर्क होगा। वह सफेद होगा या काला, नर होगा या मादा, वह अकेला होगा कि जोड़े से होगा? उसके सींग होंगे या नहीं? वह मनहूस जानवर खुदा की किस बात में मदद करेगा, इत्यादि बातों का खुलासा किया जाना भी जरूरी है जो नहीं किया गया है।

(११८) पहाड़ उड़ते फिरेंगे—

और तू पहाड़ों को देखकर ख्याल करता है कि जमे हुए हैं। मगर यह (कयामत के दिन) बादल की तरह उड़े उड़े फ़िरेंगे····।" ८८। कु० पा० २० सू० नम्ल रु० ७॥

समीक्षा - पहाड़ जमीन के अन्दर मीलों गहरे घुसे हैं, वे अन्दर से ऊपर को उभरते रहते हैं। अरबों खरबों टन वजनी पहाड़ हवा में उड़ते फिरेंगे (जैसे रुई या पतंग उड़ती है) यह बात बच्चों को बहलाने जैसी है। कोई भी थोड़ी सी अक्ल वाला इसे नहीं मान सकता है। य द पहाड़ हवा में उड़ेंगे तो फिर अरब के मुसलमान उनके बीबी बच्चे बरतन मकान व उनकी मस्जिदें भी क्यों न उड़ जावेंगे, वे तो बहुत हलके होते हैं। अगर कोई पहाड़ उड़ कर कहीं काबे पर गिर पड़ा तो वहां क्या हश्र होगा ? अरबी खुदा की किताब कुरान की बातें वास्तव में सच्चाई से दूर एवं मनोरंजक मात्र हैं।

(११६) मुहम्मद साहब बे पढ़े लिखे थे—

'और कुरान से पहिले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था।" ४८ ॥ कु० पा० २१ सूरे अन्कबूत रु० ५ ॥

समीक्षा—यह ऊपर की बात स्वयं कुरान से ही गलत साबित हो जाती है। कुरान की पहिले पारे की पहिली सूरत की पहिली आयत "बिस्मिल्लाह रहमानुर्रहीम" अर्थात् शुरू करता हूँ साथ नाम अल्लाह के जो बड़ा रहम वाला है।

इससे मुहम्मद साहब खुदा का नाम लेकर कुरान लिखना शुरू करते हैं। यह बताता है कि वे पढ़े लिखे जरूर थे।

"खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुश खबरी सुनाता हूँ।" कु० पा० ११ सू० हूद आ० २ ॥

इसमें खुदा की तरफ से खुश खबरी सुनाने और डराने की बात मुहम्मद ने कही है।

यह अल्लाह की आयतें हैं जो मैं तुमको पढ़ पढ़कर सुनाता हूँ। पा० ३ सू० बकर रु० ३३ आ० २५२ ॥

"कहो अगर खुदा ये चाहता तो मैं न तुमको पढ़ कह सुनाता और न खुदा तुमको इससे आगाह करता।" १५ ॥ कु० पा० ११ सू० यूनिस रु० २ ॥

"खुदा इनको गारत करे किधर को भटके चले जा रहे हैं।" ३०। कु० पा० १० सू० तौबा रु० ५ ॥

खुदा से गारत करने की प्रार्थना मुहम्मद साहब ने की थी। इन प्रमाणों से साफ जाहिर है कि कुरान को लिखने वाले मुहम्मद साहब थे, वे पढ़े भी थे, और कुरान का पढ़ पढ़ कर लोगों को सुनाया भी करते थे। यह उन्होंने खुद स्वीकार किया है। कुरान का उक्त दावा भी गलत है। प्र० न० १८ भी देखें।

(१२०) कयामत का फैलला हजार साल में होगा –

"फिर तुम लोगों की गिनती के (अनुसार) हजार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा। उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने गुजरेगा।" ५ ॥ कु० पा० २१ सू० सज्दह ॥

समीक्षा – खुदा की कचहरी एक हजार साल तक लगी रहेगी और लोगों के वकील खुदा से मुबाहिसा करते रहा करेंगे। खुदा यदि सर्व शक्तिमान (कादिरे मुतलक) होता तो फैसला जल्दी भी कर सकता था। उसे हर आदमी का अलग अलग कर्मों का हिसाब किताब देखना पड़ेगा, किताबें देखनी पड़ेंगी, वकीलों की बहस सननी पड़ेंगी तब कहीं जन्नत व दोजख में उन्हें भेज कर छुट्टी मिलेगी। हमारे यहां के मजिस्ट्रेट और अरबी खुदा में ज्यादा अन्तर नहीं है।

(१२१) खुदा ने सबको ठीक सूझ क्यों नहीं दी—

"हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सबसे हम नरक भर देंगे। १३ ॥ कु० पा० २१ सू० सज्दह रु० १ ॥

समीक्षा – खुदा ने कभी कसम खा रखी होगी कि दोजख को आदमियों से भरेंगे और अपनी उसी कसम को पूरा करने की जिद की बजह से उस भले आदमी ने सारे इन्सानों को नेक रास्ते पर नहीं डाला बल्कि लोगों को गुमराह भी किया। क्या ऐसा खुदा भी नेक माना जा सकता है जो प्रजा को गुमराह करता रहता हो ?

(१२२) मुहम्मद की बीबियों को खुदा की धमकी—

ऐ पैगम्बर की बीबियो। तुमसे कोई जाहिर बदकारी करेगी, उसके लिए दोहरी सजा दी जायगी और अल्लाह के नजदीक यह मामूली बात है।" ३०॥

समीक्षा इससे स्पष्ट है कि मुहम्मद की बीबियां बदकार थीं और खुदा को उन्हें बदकारी से रोकने को धमकी भी देनी पड़ी। ज्यादा शादियां करने वालों की बीबियां यदि बदकार हो जावें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।' मुहम्मद साहब के निकाही बीबियां ग्यारह थीं बे निकाही भी अनेक थीं।

(१२३) खुदा ने व्यभिचार को औरतें भेंट की—

ऐ पैगम्बर! हमने तेरी वह बीबियां तुझ पर हलाल की जिनको मिहर तू दे चुका है और लोंडियां जिन्हें अल्लाह तेरी तरफ लाया और तेरे चचा की बेटियां और तेरी बूआ का बेटियां जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होंने अपने को पैगम्बर को दे दिया। बशर्ते कि पैगम्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे। यह हुक्म खास तेरे लिए है सब मुसलमानों के लिए नहीं....।" ५०। कु० पा० २२ सू० अहजाब रु० ६॥

समीक्षा – इसमें खुदा औरतों और लोडियों को मुहम्मद के पास लाया ताकि वह उनको भोग सकें खुदा ने खास रियायत मुहम्मद पर की थी। अच्छा होता यही रियायत सभी मुसलमानों को भी दे दी जाती। खुदा जिना के लिए औरतें भी Supply करता है यह कुरान की बढ़िया बात है। मुहम्मद साहब को जिन्दगी में औरतों का पूरा २ आनन्द खुदा देता रहा था। औरतें यदि इनसे सन्तुष्ट न होकर बदकारी औरों के साथ करती थीं तो खुदा घरेलू मैनेजर की तरह उनको डांटता भी रहता था जैसाकि पीछे दिखाया जा चुका है। (प्र० न० १२२)

(१२४) खुदा की कसम कुरान में खाने वाला कौन था?—

'और इन्कारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। पोशीदा

बातों के जानने वाले अपने परवर्दिगार की कसम जरूर आवेगी ।"३ । कु० पा० २२ सू० सबा ॥

(१२५) चिड़ियों ने फौज को मार डाला--

(ऐ पैगम्बर) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे परवर्दिगार ने हाथी वालों के साथ कैसा बर्ताव किया । १ । और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे । ३ । जो उन पर कंकरण की पथरियां फैंकते थे । ४ । यहां तक कि उनको खाये हुए भूसे की तरह कर दिया । ५ ॥ कु० पा० ३० सू० फील ॥

समीक्षा—क्या यह सम्भव है कि चिड़ियों (अबाबीलो) द्वारा ४-४ रत्ती की कंकड़ियां फैंकने से फौज और हाथी पिट-पिटकर मर कर भूसा बन गये हों ? एक चादरा सर पर डाल लेने से भी तो किसी का कुछ न बिगड़ सकता था । क्या उस वक्त के आदमी मक्खी या चींटी जैसे होते थे ?

(१२६) फरिश्तों के पंख हैं —

"उसी ने फरिश्तों को दूत बनाया जिनके दो-दो । तीन-तीन और चार-चार पर हैं । १ ॥ कु० पा० २२ सू० फातिर ।

समीक्षा—पर यह नहीं बताया गया कि उनकी शक्ल गधे-सुअर बकरी या कौए की जैसी है या सर्प जैसी है ? अगर एक फरिश्ता कभी पकड़ में आ जावे तो किसी अजायब घर में देखने को दुनियां को मिल सकेगा ।

(१२७) खुदा ने हर बात लिख ली है —

"और हमने हर चीज खुली असल किताब में लिख ली है ।" १२ । कु० पा० २२ सू० यासीन ॥

समीक्षा—डायरी में जैसे वकील या मुनीम जी हर बात को नोट करके रखते हैं, वैसे ही याद्दाश्त के लिए अरबी खुदा भी अपनी खुली किताब नाम की डायरी में लिख लेता था ।

(१२८) सूरज चांद को नहीं पकड़ सकता है—

"न तो सूरज से ही बन पड़ता है कि चांद को पकड़े और न रात ही दिन से आगे आ सकती हैं और हर कोई एक एक घेरे में फिरते हैं।" ४० ॥ कु० पा० २३ सू० यासीन रु० ३ ॥

समीक्षा—सूरज जमीन से ९ करोड़ मील दूरी पर है जब कि चांद दो लाख ३६ हजार मील के फ़ासले पर है। सूरज अपनी ही कीली पर घूमता है जब कि चाँद जमीन के चारों ओर घूमता हुआ स्वयं भी घूमता है। तो सूरज चांद को नहीं पकड़ सकता यह कहना बड़ी बेतुकी सी बात है। कुरान को समझदारी की बात कहना चाहिये था। यदि सूरज और चांद दोनों एक ही दूरी पर होते और दोनों घूमते भी होते तब तो यह बात कहना बन भी सकता था। शायद अरबा खुदा को इस मामले की जानकारी नहीं थी।

(१२९) कयामत के दिन फैसला किताबों से होगा—

और जमीन अपने परवदिगार से चमक उठेगी और किताबें रख दी जायेंगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किए जायेंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और उन पर जुल्म न होगा।" ६९ ॥ कु० पा० २४ सू० जुमर रु० ७ ॥

समीक्षा—कयामत के दिन खुदा जिन किताबों को देखकर फैसला करेगा वे दीवानी की होंगी या जाब्ता फौजदारी की होंगी ? वह किताबें अगर दुनियां में भी आ जावें तो सभी लोग खुदा के कानूनों को पढ़ कर जान लेवे कि खुदा जो दफा लगावेगा वह ठीक होगी या गलत और हमारे वकील भी तैयारी कर लेवे।

(१३०) खुदा का जमीन आसमान से बातें करना—

जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से ? दोनों ने कहा हम खुशी से आये। ११ ॥ कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० २ ॥

समीक्षा—खुदा का जमीन और आसमान से बातें करना और

उनका जवाब देना असम्भव है। अगर ठीक है तो भक्तों का अपनी बेजान मूर्तियों से बातें करना, मनौती मांगना भी क्यों न ठीक माना जावेगा ?

(१३१) बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दो—

और नेकी और बदी बराबर नहीं। बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दे तो तुझ में और जिस आदमी में दुश्मनी थी उसे तू पक्का दोस्त पावेगा।" ३४ ॥ कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५ ॥

समीक्षा--यह उपदेश अति उत्तम है। किन्तु खुदा के उस हुक्म के बिलकुल खिलाफ़ हैं जिसमें उसने कहा था 'ऐ ईमान वालो। जो लोग मारे जावें उनमें से तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है ! आजाद के बदले आजाद गुलाम के बदले गुलाम औरत के बदले औरत''''। कु० पा० २ सू० बकर रु० २२ आ० १७८ ॥

एक जगह बुराई के बदले बुराई करने का हुक्म देना और दूसरी जगह बुराई का बदला भलाई से देना, इन दोनों परस्पर विरोधी उपदेशों में से कौनसा माननीय है ? खुदा को तो एक ही अच्छी बात कहनी चाहिये थी।

(१३२) कुरान में झूठ का प्रवेश नहीं है—

"यह कुरान अजीब किताब (कुरान) है। ४१। इसमें झूठ का न इसके आगे से और न इसके पीछे से दखल है। हिकमत वाले सब खूबियों के सराहे से उतारी हुई हैं। ४२ ॥ कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह रु० ५।

समीक्षा—इस किताब में पीछे जो भी अवैज्ञानिक बातों का कुरान से उल्लेख है उनसे कुरान की इस आयत के दावे का खण्डन स्वयं हो जाता है।

(१३३) खुदा शैतान पीछे लगा देता है—

"और जो शख्स (खुदा) कृपालु की याद से बराता है हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर दिया करते हैं। और वह उसके साथ रहता

है। ३६। और शैतान पापियों को राह से रोकता है। ३६। कु० पा० २५ सू० जुखरुफ रु० ४ ॥ क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहें। ८३। कु० पा० १६ सू० मरियम रु० ६ ॥

समीक्षा—गलत रास्ते पर चलने वालों को नेक रास्ता बताना खुदा को योग्य था। पर वह भला आदमी भूले भटके को गुमराह कराने के लिए बदमाश शैतान को उसके पीछे लगा देता है ताकि वह उसे हमेशा बुराई की ओर ही ले जाता रहे। अरबी खुदा इन्सान का पक्का दुश्मन था उसके काम सभी शरारत के ही रहे हैं। कहीं खुदा लोगों को गुमराह बिना वजह करता है, कहीं शैतान से गुमराह कराता है। ऐसे खुदा को रक्षक मानना भी गलती की बात है।

(१३४) खुदा का गुस्सा होना—

"फिर जब उन लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया हमने इनसे बदला लिया, फिर इन सबको डुबो दिया।" ५५। कु० पा० २५ सू० जुखरुफ रु० ५ ॥

समीक्षा—खुदा को भी गुस्सा आ जाता था और बदला ले बैठता था। उसका दिमाग भी ठण्डा नहीं था। खुदा का अपने गुस्से पर भी काबू न था। हो सकता है खुदा को अय्याशी का शौक हो, शराब भी पीता हो। पर कुरान में इन बातों का जिक्र नहीं है। मुन्सिफ को तो शान्त दिमाग का होना चाहिए। क्रोधी कामी लोभी मोही होना तो बुराई की बात है।

(१३५) हर आदमी का हाल दो-दो फरिश्ते लिखते रहते हैं—

"या ख्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे नहीं जानते और हमारे फरिश्ते उनके पास लिखते हैं।" ८०॥ कु० पा० २५ सू० जखरुफ रु० ७ ॥

समीक्षा—खुदा ने हर आदमी पर दो-दो फरिश्ते लगा रखे हैं जो उसके हर काम को लिखते रहते हैं और उसकी रिपोर्ट खुदा को देते

हैं। ऐसा कुरान व इस्लाम मानता है।

(१३६) खुदा ने गुमराह किया—

ऐ पैगम्बर! भला देखो तो जिसने अपनी ख्वाहिशों को अपना पूजित ठहराया और इल्म होते हुए भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानों पर और उसके दिल पर मुहर लगा दीं और उसकी आंखों पर पर्दा डाल दिया तो खुदा के (गुमराह किये) पीछे कौन उसको हिदायत दे, क्या तुम नहीं सोचते। २३। कु० पा० २५ सूरे जासियह रु० ३।।

समीक्षा—अगर कोई आदमी अपनी पसन्द के अनुसार किसी की उपासना करे तो अरबी खुदा जल भुन कर उसके दिल दिमाग पर मौहर कर देता है कि वह सही रास्ता न अपना सके। ऐसे बुरे खुदा को मानने वाले दया के पात्र है।

(१३७) खुदा का दफ्तर—

"यह हमारा दफ्तर है, तुम्हारे काम ठीक बतलाता है। जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे।" २९।। कु० पा० २५ सू० जासियह रु० ४।।

समीक्षा—खुदा के यहां भी दफ्तर है, उनमें क्लर्क रहते हैं जो हिसाब किताब ठीक रखते हैं। शायद दफ्तरों (मुहाफ़िज खानो) की रक्षा के लिए दरोगा सिपाही भी तैनात रहते होंगे। खुदा उनको सरकारी वर्दियां भी देता होगा! रक्षा के लिए ३०३ नं० की लम्बी मार की राइफल भी उनको दी जाती होगी। खुदा भी एक तहसीलदार साहब से किसी बात में कम नहीं था।

(१३८) कुरान मुहम्मद ने बनाना मान लिया—

"क्या यह कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिल से) बना लिया है, तू कह कि अगर मैंने इसको अपने दिल से बनाया होगा तो तुम खुदा के मुकाबिले में मेरा कुछ नहीं कर सकते....।" ८।। कु० पा० २६ सू० अहकाफ रु० १।।

समीक्षा—आखिरकार मुहम्मद साहब ने कुरान खुद बनाना मान ही लिया, बधाई है।

(१३९) जन्नत में दूध-शराब और शहद की नहरें हैं—

जिस जन्नत (बहिश्त) का वायदा परहेजगारों से किया जाता है, उसकी कैफियत यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जिसमें बू नहीं और दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को बहुत ही मजेदार मालूम होंगी। और साफ शहद की नहरें हैं और उनके लिये वहां हर तरह के मेवे होंगे। १४। कु० पा० २६ सूरे मुहम्मद रु० २॥

समीक्षा—यह दूध ऊटनी का होगा या भैंसों, गायों या बकरी का होगा? शराब अंगूरी होगी या जौ की बनी होगी यह नहीं खोला गया। नहरें खोद कर बनाई जाती हैं जबकि नदियां कुदरती तौर पर बनती हैं। यह नहरें खुदा ने खोद कर बनाई थीं या किसी और ने? नहरों की मिट्टी कीचड़ मिलने से दूध शराब और शहद का जायका किरकिरा जरूर बन जावेगा तब पीने वालों को उसमें मजा कैसे आवेगा। कुरानी बहिश्त भी शराबखोरी का अड्डा ही होगा, यह ऊपर की आयत से स्पष्ट हो जाता है।

(१४०) लड़ो या वे मुसलमान हो जावें—

(खुदा ने कहा ऐ मुहम्मद) देहाती जो पीछे रहे इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिये बुलाये जाओगे। तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जावें। १६॥ कु० पा० २६ सूरे फतह रु० २॥

समीक्षा—खुदा लड़ कर मुसलमान बनाने के लिये अपने चेलों को उकसाता था। इस्लाम मजहब तलवार के जोर से ही दुनियां में फैला। लोगों ने गुण्डों से अपनी प्राण रक्षा के लिए ही मुसलमान बनना स्वीकार किया था वरना कुरान में कोई भी ऐसी बात नहीं है कि लोगों का उसकी ओर आकर्षण हो सकता। बुद्धिमान लोग अरब खुदा और उसके नाम से बनी किताब कुरान की वास्तविकता भली

प्रकार समझते हैं। इस प्रमाण के होते हुए कोई मुसलमान यह नहीं कह सकता है कि इस्लाम जोर जबर्दस्ती से नहीं फैलाया गया था। कुरान की जहरीली शिक्षा से बचना उचित होगा।

(१४१) अरबी खुदा ने लूटें कराई—

(ऐ पैगम्बर) जब मुसलमान बबूल के दरख्त के नीचे तुझसे हाथ मिलाने लगे अल्लाह उनसे खुश हुआ और उसने उनके दिली विश्वास को जान लिया और उनको तसल्ली दी और उसके बदले में उनको नजदीकी फतह दी। १८। और बहुत सी लूटें उनके हाथ लगी और अल्लाह बली हिकमत वाला है। १९। अल्लाह ने तुमको बहुत सी लूटों के देने का वायदा किया था कि तुम उसे लोगे फिर यह (खैबर की लूट) तुमको जल्द दी और लोगों पर जुल्म करने से तुमको रोका। २०। और दूसरा वायदा लूट का है जो तुम्हारे काबू में नहीं आया, वह खुदा के हाथ है....। २१॥ कु० पा० २६ सू० फतह रु० ३॥

समीक्षा—लूट अत्यन्त गन्दा काम है, गरीब औरतें बच्चे प्रजा बरबाद हो जाते हैं। पर अरबी खुदा को यह गन्दा काम भी पसन्द था और वह मुसलमानों को लूट कराने में मदद देता था, वायदा भी करता था तथा लूट के माल में से पांचवां हिस्सा खुद भी मारता था (सूरे अन्फाल रु० ५ आ० ४१)। ऐसे बेरहम अन्यायी अत्याचारी अरबी खुदा से दुनियां जितनी दूर रहे उतना ही उसके लिए अच्छा होगा।

(१४२) खुदा का न थकने का ब्यान—

"और हमने आसमानों और जमीन को जो कुछ उनके बीच में है ६ दिन में बनाया और हम नहीं थके।" ३७। कु०पा० २६ सूरे जारियात रु० ३॥

समीक्षा—ज्यादा काम करने पर खुदा जरूर थक जाता वह नहीं सकता था। तौरात में उत्पत्ति २/२ में लिखा है 'और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया। और उसने अपने किये हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया। और परमेश्वर

ने सातवें दिन आशीष दी और पवित्र ठहराया, क्योंकि उसमें उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम किया।"

कुरान ने तौरात को खुदाई व सच्ची किताब माना है। खुदा का विश्राम करना बताता है कि वह जरूर थक गया था तभी तो उसने आराम किया। कुरान की बात तौरात की बात के सामने गलत है कि खुदा नहीं थका था।

(१४३) खुदा ने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया था—

और हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं। ४७। कु० पा० २७ सूरे जारियात रु० ३॥

समीक्षा—खुदा ने शून्य आकाश (जिसे बनाने की बात कहना भी नादानी है) को अपने हाथों की बड़ी भारी ताकत लगाकर बनाया था। वाकई अरबी खुदा के हाथों में बड़ी ताकत है कि वह शून्य आकाश को भी बना सकता है जिसमें कुछ नहीं बना होता है।

(१४४) अपनी पूजा का भूखा खुदा—

"और मैंने जिन्नों और आदमियों को उसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें।" ५६॥ कु० पा० २७ सूरे जारियात रु० ३॥

समीक्षा - खुदा को अपनी पूजा कराने का शौक प्रत्यक्ष है। इन्सान को उसकी तरक्की व फायदे तथा पुरुषार्थ के लिए पैदा न करके खुदगरजी से खुदा ने पैदा किया है। यदि ऐसी ही बात थी तो दोजख भरने के लिए गुनहगारों को पैदा करने की क्या जरूरत थी। सभी को खुदापरस्त बना देना था।

(१४५) खुदा जमीन पर उतर कर आया—

(खुदा) जो जोरावर है। फिर सीधा बैठा। ६। और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। ७। फिर वह नजदीक हुआ और करीब आया। ८। फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया। ९। उस वक्त खुदा ने फिर अपने बन्दे (मुहम्मद) पर हुक्म भेजा। १०। कु० पा० २७ सूरे नज्म रु० १॥

समीक्षा—खुदा को हाजिर नाजिर (सर्व व्यापक) इस्लाम साबित नहीं कर सकता है। उसका अरबी खुदा आसमान पर रहता है, वहीं से आता जाता है यह ऊपर के प्रमाण से स्पष्ट है। सर्व व्यापक का आना जाना बन ही नहीं सकता है।

(१४६) खुदा जन्नत (स्वर्ग) में रहता है—

परहेजगार (बैकुण्ठ के बागों और नहरों में होंगे। ५४। सच्ची बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर कब्जा है बैठेंगे। ५५॥ कु० पा० २७ सूरे कमर रु० ३॥

समीक्षा—खुदा जन्नत (बहिश्त) में रहता हैं। वहीं पर असंख्य खूब-सूरत औरतें तथा सुन्दर-सुन्दर लोंडे भी रहते हैं। वहीं पर हूरों के हुस्न (सौन्दर्य) की बिक्री का बाजार भी लगता हैं (देखो मुकद्दमाये तफ़सीरुल्कुरान पृ० ८३ व कुरान परिचय पृ० ११७)। ऐसे ऐशो आराम के बहिश्त में अरबी खुदा की तबियत खूब लगी रहती होगी। वह बड़ा भाग्यशाली है। तौरात के अनुसार खुदा के मकान में दरवाजे तथा फाटक भी लगे हैं। उनकी रक्षा को बहुत से पहरेदार भी नियत रहते है। इन्जील के अनुसार खुदा की रक्षा को बीस करोड़ घुड़ सवार फौज भी वहां रहती है (देखो प्रकाशित वाक्य नाम का अध्याय ६। १६) अरबी खुदा बड़े ठाट बाट का था किसी बड़े जमींदार से किसी बात में कम नहीं था। नौकर-चाकर-फौजें-महल-हूरें-गिलमें सभी उसके पास बेशुमार थे।

(१४७) सूरज निकलने और डूबने की जगहें हैं—

और सूरज निकलने और डूबने की जगहों का मालिक। १७॥ कु० पा० २७ सू० रहमान रु० १॥

समीक्षा—अरब में यह जगह कहां पर हैं यह बात कुरान को और खोल देनी चाहिए थी तो खुदा के सही इल्म का सभी को ज्ञान हो जाता। कुरान की बातें ऐसी ही हैं जिन पर पढ़े लिखे लोग हँसे बिना न रह सकेंगे।

(१४८) खुदा को कर्ज दो— दूना मिलेगा--

ऐसा कौन है जो अल्लाह को खुश दिली से उधार दे फिर वह उसके लिए दूना कर दे और उसके लिए इज्जत का फल है। ११। कु० पा० २७ सू० हदीद रु० २॥

"उसके पाप क्षमा करेगा।" १७। सू० तगाबुन पा० २८॥

समीक्षा खुदा को कर्ज देने में स्टाम्प जरूर लिखा लिया जावे और किसी मालदार मुसलमान की जमानत करालो जावे तो कर्ज देने वालों के लिए कर्ज देना मुनासिब होगा। आश्चर्य है कि खुदा को भी कर्ज मांगना पड़ा है और पाप माफ करने का लालच देना पड़ा है।

(१४९) औरतों को चेली बनाने की स्वीकृति—

ऐ पैगम्बर! जब तेरे पास मुसलमान औरतें आवें और इस पर तेरी चेली बनना चाहें....तो तुम उनको चेली बना लिया करो....। १२। कु० पा० २८ सू० मुम्तहना रु० २॥

समीक्षा—खुदा मुहम्मद साहब के हर शौक को पूरा किया करता था उनको औरतें भी भेज देता था बांदियां व चेलियां रखने की भी इजाजत थी। बुआयें मौसियों आदि की बेटियों को भी निकाह में लेने की आज्ञा केवल उन्हीं को दे रखी थी।

(१५०) ईसा के बाद अहमत आवेगा--

ईसा ने कहा....एक पैगम्बर की खुश खबरी देता हूँ जो मेरे बाद आवेगा उसका नाम अहमद होगा....। ६॥ कु० पा० २८ सू० सफ्फ रु० १॥

समीक्षा--ईसा ने इन्जील में यह भविष्यवाणी कभी नहीं की थी कि मेरे बाद अहमद आवेगा। कुरान की यह बात बिलकुल गलत है।

(१५१) कसमें तोड़ डालने का आदेश--

तुम लोगों के लिए खुदा ने तुम्हारी कसमों को तोड़ डालने का हुक्म रखा है और अल्लाह हा तुम्हारा मददगार और हिकमत वाला है।२। कु० पा० २८ सू० तहरीम।

समीक्षा--मुसलमानों का अमल कुरान के अनुसार रहता है सभी को यह समझ लेना चाहिए और कस्मों पर विश्वास करके धोखा नहीं खाना चाहिये। ऊपर की आयत से स्पष्ट है कि अरबी खुदा-कुरान और मुसलमान सहसा विश्वास योग्य नहीं हैं। कसमें या वायदों को तोड़ डालना इस्लामी सभ्यता का नमूना है।

(१५२) गैर मुस्लिमों से जिहाद का हुक्म—

ऐ पैगम्बर काफ़िरों और मुनाफिकों से जिहाद कर और उन पर सख्ती कर, उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है। ९। कु० पा० २८ सूरे तहरीम रुकू २।

समीक्षा—संसार को किसी मजहबी किताब में अपने से भिन्न विचारधारा रखने वालों से लड़ने उन पर जुल्म करने का उपदेश नहीं मिलेगा बल्कि सभी के साथ प्रेम शान्ति से रहने के उपदेश मिलेंगे। किन्तु दूसरों पर जुल्म करने की जहरीली आज्ञायें केवल कुरान में मिलेंगी। कुरान विश्व शान्ति का खुला शत्रु है यह इस आयत से साफ जाहिर है।

(१५३) खुदा के तख्त को आठ फरिश्ते उठाये होंगे–

"उस दिन (क़यामत के दिन) तुम्हारे परवर्दिगार के तख्त को ८ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे।१७। कु० पा० २९ सू० हाक्का रु० १।

समीक्षा--ये फरिश्ते यदि थक कर तख्त को पटक दें तो तख्त व उसका सवार अरबी खुदा कहां गिरेगा ? फरिश्ते किस पर खड़े होंगे ? तख्त अधर आसमान में क्यों नहीं रुका रह सकेगा जब कि सूरज तक अधर रुका हुआ है।

(१४५) खुदा कितनी दूर रहता है—

खुदा के मुकाबिले में जो सीढ़ियों (आसमानो) का मालिक है।३। उनसे फरिश्ते और रूह उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है। ४॥ कु० पा० २९ सू० मआरिज॥

समीक्षा—यदि ऊपर चढ़ने की रफ्तार प्रति घन्टा बता दी जाती तो खुदा और उसके रहने के स्थान बहिश्त की दूरी का ठीक २ पता लगाया जा सकता था ?

१५५) सबके गले में खुदा ने भाग्य पत्र बांध रखा है—

और हर आदमी का भाग्य उसकी गर्दन से लगा दिया है । और कयामत के दिन हम उसके कारनामों का लेखा निकाल कर उसके सामने पेश करेंगे····। १३ ॥ कु० पा० १५ सू० बनी इस्राइल रु० २ ॥

समीक्षा – खुदा जब पैदा करते समय ही हरएक के गले में उसका भाग्य लिख कर बांध देता है तो इसका अर्थ यह है कि खुदा जैसा चाहता है, लिख देता है वैसा ही कर्म मनुष्य करता है। तब मनुष्य की अपने कर्मों के लिए जवाब देही समाप्त हो जाती है और खुदा जवाब देह बन जाता है।

(१५६) आसमान में चौकीदार हैं—

और हमने आसमान को टटोला तो उनको सख्त चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया। ८। कु० पा० २९ सूरे जिन्न ॥

समीक्षा—बिना टटोले खुदा यह बात भी न जान सका था कि आसमान में चौकीदार भी बैठे हैं आसमान में बुर्ज चौकीदार और अङ्गारे भरे होने की बात उल्माये कुरान को प्रत्यक्ष सावित करनी चाहिए, वरना कोई इस पर विश्वास नहीं करेगा।

(१५७) सूरज और चांद जमा किए जायेंगे—

और सूरज और चन्द्रमा जमा किये जायेंगे।" ९ ॥ कु० पा० २९ सूरे कयामत ॥

समीक्षा—इनको कहां पर जमा किया जावेगा, अरब में या किसी मस्जिद की छत पर या मौलवी के घर में ?

(१५८) सूरज लपेटना और तारे झाड़ना—

जिस वक्त सूरज लपेट लिया जाय।१। और जिस वक्त तारे झड़ पड़ें। २। जिस वक्त आसमान की खाल खींची जाय। ११। कु० पा० ३० सू० तकवीर ॥ जब आसमान फट जाये। १। सू० इन्फितार।

समीक्षा—सूरज को किस चादरे में लपेटा जायेगा और तारे जो जमीन से भी बड़े २ लोक हैं झड़ कर कहाँ पर गिरेंगे ? कुरान को

कल्पना भी प्रलय की विलक्षण हैं। शून्य आकाश का फाड़ा जाना व उसकी खाल खींची जाना लिखना अक्लमन्दी की बात नहीं है।

(१५९) खुदा के पास पृथक २ रजिस्टर रहते हैं--

कुकर्मी लोगों के कर्म राजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में हैं ७। और ऐ पैगम्बर! तू क्या समझे कि कैदियों का रजिस्टर क्या चीज है।८। वह एक किताब है जिसकी खाना पूरी होती रहती है।९। अच्छे लोगों का कर्म लेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है।१८। वह एक किताब है जिसकी खाना पूरी होती रहती है। २०। फरिश्ते जो नजदीक हैं उस पर (तैनात हैं)। २१। कु० पा० ३० सू० ततफीफ।

समीक्षा—खुदा के यहां भी पुलिस विभाग की तरह राजनामचा के रजिस्टर पृथक २ रहते हैं और उनकी रक्षा को सिपाही तैनात रहते हैं। हर महकमे के कार्यालय भी खुदा के यहाँ बने हुए हैं। खुदा भी बिचारा बिना रजिस्टरों के कोई न्याय नहीं कर सकता है, बड़ा मजबूर है।

(१६०) आसमान व जमीन खुदा की बात सुनेंगे--

और जब आसमान फ़ट जावेगा। १। और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज़ ही है। २। और जब जमीन तान दी जाएगी। ३। और जो कुछ उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जायगी। ४। और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगी यह तो उसक फर्ज ही है। ५॥ कु० पा० ३० सू० इन्शिकाक।

समीक्षा—शून्य आकाश और जड़ जमीन खुदा की बातें सुनेंगे यह बात बेतुकी है। जमीन क्या कोई चादरा है जो तान दी जावेगी? जब जमीन की हर चीज अलग-अलग हो जावेगी तो जमीन नाम की कोई चीज खुदा की बात सुनने को बाकी न रहेगी। फिर बात कौन व कैसे सुनेगा? कुरान की सभी बातें अक्ल के खिलाफ होती हैं।

(१६१) बाल बच्चे भी जन्नत में जायेंगे--

"और (जन्नती) खुश खुश अपने बाल बच्चों में वापिस जायगा।९। कु० पा० ३० सू० इन्शिकाक॥

समीक्षा--मुसलमानों के बीबी बच्चे भी बहिश्त में साथ जायेंगे और वहां भी हूरों से बेशुमार बच्चे पैदा हुआ करेंगे। बधाई है, उनके इस्लाम का कुनवा खूब बढ़ेगा।

(१६२) कुरान लोहे महफूज पर खुदा ने लिख रखा है—

बल्कि यह कुरान बड़ी शान का है। २१। लोहे महफूज पर लिखा हुआ है। २२॥ कु० पा० ३० सू० बुरुज॥

समीक्षा—असल कुरान खुदा ने किसी कठिन भाषा में लौह महफूज नाम की तख्ती पर लिख कर रख लिया है। मौजूदा कुरान तो उसको सरल करके कांट छाँट कर बनाया गया है।

(१६३) आसमान में दरवाजे किवाड़ें भी हैं—

अगर हम इन लोगों के लिए आसमान का एक दरवाजा भी खोल दें और यह लोग सब दिन चढ़ते रहें। १४। तो भी यही कहेंगे कि हो न हो हमारी नजर बांध दी गई है और हम पर जादू कर दिया गया है। १५। कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० १॥

समीक्षा—आसमान में दरवाजे-चौखटें व किवाड़ें भी हैं, दरवाजे भी अनेक होंगे। अरब के कुरानी खुदा का इल्म दरअसल नुमायश में पेश करने योग्य था। समझदार लोग विचार करें।

(१६४) दोजख में आंतें गल जावेंगी—

जो लोग खुदा को नहीं मानते उनके लिये आग के कपड़े हैं। उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायगा। १९। जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जावेंगी। २०। कु० पा० १७ सूरे हज्ज रु० ३।

उनको खौलता हुआ पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आंतों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। १५। कु० पा० २६ सू० मुहम्मद रु० २॥

समीक्षा—जब आग से शरीर की खाल जल जावेगी, मांस भुन जावेगा तथा पेट के अन्दर के सभी हिस्से जिगर-तिल्ली-गुर्दे आंतें गल कर मिट जावेंगे तो फिर इन्सान जिन्दा कैसे रहेगा?

(१६५) यह खुदा की कसम किसने खाई (खुदा ने या पैगम्बर ने)–

"तेरे परवर्दिगार की कसम है कि हम इन सबसे पूछेंगे।" ९२। कु० पा० १४ सू० हिज्र रु० ६॥

"पोशीदा बातों के जानने वाले अपने परवर्दिगार की कसम कयामत जरूर आवेगी।" (कु० पा० २२ सूरे सवा आ० ३)

समीक्षा–कुरान जब खुदा का बनाया है तो उस खुदा ने किस खुदा की कसम खाई है। क्या इस्लाम में दो खुदा हैं? ये आयतें मुहम्मद की बनाई कुरान में जोड़ दी गई हैं या शैतान की हैं।

(१६६) कुरान फरिश्ते का पैगाम है–

'और रात की कसम जब उसका उठान हो। १७। और सुबह की (कसम) जिस वक्त उसकी पौ फटती है। १८। बेशक यह (कुरान) एक प्रतिष्ठित फ़रिश्ते का पैग़ाम है। १९। यह शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं है। २५॥ कु० पा० ३० सू० तकवीर॥

समीक्षा–यह तो कोई नहीं कहता कि कुरान शैतान का कहा हुआ है, मगर इसमें यह भी साफ शब्दों में घोषणा कर दीं गई है कि कुरान प्रतिष्ठित फरिश्ते का पैगाम है। अर्थात् यह खुदा के द्वारा कहा गया, उसका बनाया या खुदाई पैगाम या किताब हरगिज नहीं है।

(१६७) खुदा घेर लिया जावेगा–

और (ऐ पैगम्बर! उस दिन) तू देखेगा कि फरिश्ते अपने परवर्दिगार की खूबी ब्यान करते तख्त को (जिस पर खुदा बैठा होगा) आस पास घेरे है....।" ७५॥ कु० पा० २४ सूरे जुमर रु० ८॥

समीक्षा–जब खुदा को घेरा जा सकता है तो वह कद में (लम्बाई चौड़ाई मौटाई में) बहुत बड़ा (अनन्त) नहीं हो सकता है, बल्कि वह एक घेरे में आ जाने वाली छोटी सी हस्ती का व्यक्ति होगा।

(१६८) खुदा के प्रगट होने पर पहाड़ चूर चूर हो गया–

"फिर जब उसका पालन कर्ता पहाड़ पर जाहिर हुआ तो उसको

चकना चूर कर दिया और मूसा मूर्छा खाकर गिर पड़ा ।" १४३ । कु० पा० ९ सू० आराफ़ रु० १७ ॥

समीक्षा—खुदा के आने पर पहाड़ पर हरियाली और सुन्दर द्रश्य पैदा हो जाने थे, रोशनी होनीं थी । भले आदमी जब आते हैं तो खुशियां चारों ओर पैदा हो जाती हैं। बदमाश जब आते हैं तो बुरे लक्षण पैदा होते हैं। खुदा क्या कोई राक्षस था जो उसके आने पर तबाही पैदा हो गई ? या खुदा बेहद भारी था जो पहाड़ उसके बोझ से चकनाचूर हो गया ?

(१६९) खुदा कयामत के दिन का मालिक है—

"न्याय के दिन (कयामत के दिन) का मालिक ।" २ । कु० पा० १ सू० फातिहा ॥

समीक्षा—जो खुदा सारे संसार की सभी वस्तुओं का सदैव मालिक है उसे कयामत के दिन का मालिक बनाने से उसकी इज्जत नहीं बढ़ती है। जैसे भारत के मालिक को दिल्ली-आगरा का मालिक बताना उसका अपमान करना ही होगा ।

(१७०) खुदा को बहरे और गूंगों से घृणा है—

"अल्लाह के नजदीक सब जानवरों में निकृष्ट बहरे गूंगे हैं जो नहीं समझते। २२ । अगर अल्लाह इनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी जरूर देता लेकिन अगर खुदा इनको सुनने की कावलियत भी दे तो भी यह लोग मुंह फेर कर उल्टे भागें।" २३ ॥ कु० पा० ९ सू० अन्फाल रु० ३ ॥

समीक्षा—जिनको जन्म से गूंगा बहरा खुदा ने बनाया है उनको किस खता के बदले में यह दण्ड खुदा ने दिया है, यह खोला जावे ? जन्म से पहले खुदा जीवों की काबलियत की जांच कब और कैसे करता है जब कि कुरान के मत से जन्म पहिली बार ही होता है। किसी को भी अपनी भली बुरी योग्यता प्रदर्शित करने का अवसर वर्तमान जन्म से पूर्व नहीं मिलता है। तब स्वयं ही बिना कारण के जीवों को गूंगा

बहरा बनाकर अपनी बहालत प्रगट करना और फिर उन दीन दुःखी गूंगे बहरों से घृणा करना खुदा की शराफत कैसे मानी जा सकती है। ऐसे दुखी जीवों पर तो सभी को दया व प्रेम करना चाहिए। मनुष्य भी उन पर तरस खाते हैं पर अरबी बेरहम खुदा जो 'रहमानुलरहीम' बनने का दम भरता है उनसे घृणा करता हैं जब कि खुद ही उनको गूंगा बहरा बनाता है? क्या ऐसे अरबी खुदा को रहीम साबित किया जा सकता है।

(१७१) खुदा ने खालों के डेरे बनाये—

और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए डेरे बनाये कि तुम अपने कूंच के वक्त और अपने ठहरने के वक्त उनको हल्का पाते हो। ८०॥ कु० पा० १४ सू० नहल रु० ११॥

समीक्षा—मुर्दा चौपायों को जिस पर से खाल उधेड़ना, उसे साफ करना और फिर उसे सीं कर डेरे बनाना चमारों का काम होता है जो कि इन्सान होते हैं। बेचारे अरबी खुदा को यह मजदूरी भी करनी पड़ती थी। सभी को उस पर तरस आवेगा। कुरानी खुदा इन्सान के काम भी करता है।

(१७२) जमीन और पहाड़ उठा कर तोड़े जायेंगे—

"और जमीन और पहाड़ उठाये जायेंगे और एकदम तोड़े जायेंगे। १४॥ कु० पा० १९ सूरें हाक्का रु० १॥

समीक्षा—उठा कर तोड़ना उसका होता है जो किसी पर रखा होता है। जमीन आकाश में निराधार रूप से स्थित है। उसका उठाना गिराना बताना कम अक्ल की बात है।

(१७३) खुदा बहुत ऊंचा है—

"सो खुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊंचा हैं। उसके सिवाय कोई पूजित नहीं वही बड़े तख्त का मालिक है।" ११६॥ कु० पा० १८ सू० मोमिनून रुकू ६॥

समीक्षा—जमीन हर समय घूमती रहती है। दोपहर को जो तारे हमारे ऊपर होते हैं वे शाम को हट जाते हैं और रात को वे विपरीत दिशा में होते हैं। अतः स्पष्ट किया जावे कि ऊपर से तात्पर्य किस दिशा है? खुदा जब ऊपर रहता है तो यहां पर तथा नीचे की दिशा में वह नहीं रहता है यह स्पष्ट है, न वह हाजिर नाजिर (सर्व व्यापक) ही है।

(१७४) खुदा बिना कारण रोजी कम या ज्यादा करता है—

अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसको चाहे रोजी देता है और जिसको चाहे नपी तुली कर देता है। अल्लाह हर चीज से जानकार है। ६२। कु० पा० २१ सू० अन्कबूत रु० ६ ॥

खुदा जिसको चाहता है भटकाता है और जिसे चाहता है राह देता है। ४। कु० पा० १३ सूरे इब्राहीम ॥

समीक्षा—खुदा का हर काम किसी न किसी आधार पर होता है। बिना कारण किसी को ज्यादा या कम देना, किसी को सजा या इनाम दे तो यह खुदा को बे-इन्साफ साबित करता है। तो जब खुदा ही बेइन्साफी करेगा तो दुनियां में उसकी देखा देखी बेइन्साफी व धांधलेबाजी क्यों न चलेगी? कुरान की यह आयत खुदा को दोषी स्वेच्छाचारी अन्यायी घोषित करती है। यदि ऐसा ही कोई मजिस्ट्रेट यहां भी करने लगे तो उसे क्या कहा जावेगा? वही खुदा के बारे में भी समझ लेवे।

(१७५) खुदा क्या ईमानदार परीक्षक था—

"और (हमने) आदम को सब (चीजों के) नाम बता दिये। फिर उन चीजों को फरिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर सच्चे हो तो हमको इन चीजों के नाम बताओ। ३१। (फरिश्ते) बोले तू पाक है जो तूने हमको बता दिया है। उसके सिवाय हमको कुछ नहीं मालूम सचमुच तू ही जानने वाला पहिचानने वाला है। ३२। तब खुदा ने हुक्म दिया कि ऐ आदम! तुम फरिश्तों को इनके नाम बता दो, फिर

जब आदम ने फरिश्तों को उन (चीजों) के नाम बता दिए तो खुदा ने फरिश्तों से कहा–क्यों हमने तुमसे नहीं कहा''''हमको सब मालूम है।" ३३ ॥ कु० पा० १ सूरे बकर रु० ४ ॥

समीक्षा—जब एक परीक्षक एक विद्यार्थी को पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर बता दे और दूसरों को न बतावे। फिर परीक्षा में वे ही प्रश्न सभी से पूंछे और उस एक को पास व दूसरों को फेल कर दे तो उसे बेईमान परीक्षक क्या नहीं कहा जायगा ? इस प्रकार की परीक्षा लेकर खुदा ने आदम को पास व फरिश्तों को फेल कर दिया। क्या यह खुदा की ईमानदारी का सबूत था।

(१७६) कुरान में जन्नत के नजारे –

"यही लोग हैं जिनके रहने के लिए (जन्नत में) बाग है। इन लोगों के (मकानों) के नीचे नहरें बह रही होंगी। वहां सोने के कंगन पहिनाये जायेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे। वहां तख्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे। अच्छा बदला है क्या खूब आराम है।" कु० पा० १५ सू० कहफ रु० ४ आ० ३१ ॥

और यहां (जन्नत में) तुमको ऐसा सुख है कि न तो तुम भूखे रहोगे न नंगे। ११८। और यहां न तुम प्यासे होगे न धूप में रहोगे। ११९। कु० पा० १६ सूरे ताहा ॥

मेवे और इनकी इज्जत होगी। ४२। नियामत के बागों में आमने सामने होंगे। ४४। सफेद रंग पीने वालों को मजा देगी। ४६। न उससे सर घूमते हैं और न उससे बकते हैं। ४७। उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आंखों की औरतें होंगी। ४८। गोया वह छिपे अण्डे रखे हैं। ४९। कु० पा० २३ सूरे साफ्फात रु० २ ॥

रहने को जन्नत के बाग जिनके दरवाजे उनके लिए खुले होंगे। ५० उनमें तकिया लगाकर बैठेंगे, वहां जन्नत के नौकरों से बहुत मेवे और शराब मंगावेंगे। ५१। उनके पास नीची नजर वाली (बीबियां) हूरें होंगी और हम उम्र होंगी। ५२। कु० पा० २३ सूरे साद रु० ४ ॥

तुम और तुम्हारी बीबियां जन्नत में दाखिल हों ताकि तुम्हारी इज्जत की जावे। ७०। उन पर सोने की रकाबियां चलेंगी और जिस चीज को उनका जी चाहे और नजर में भली मालूम हो जन्नत में होगी और तुम हमेशा यहीं रहोगे। ७१। पा० २५ सूरे जुखरुफ रु० ७ ॥

"ऐसा ही होगा बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे। ५४। कु० पा० २४ सूरे दुःखान रु० ३ ॥

(जन्नत में) ऐसी पानी की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को बहुत ही मजेदार मालूम होगी और साफ शहद की नहरें हैं और उनके लिए वहां हर तरह के मेवे होंगे। १५। कु० पा० २६ सू० मुहम्मद रु० २ ॥

हमने बड़ी २ आंखों वाली हूरें उनको ब्याह दी हैं। २०। जिस मेवे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको देंगे। २२। वह वहां आपस में शराब के प्यालों को छीना झपटी करेंगे, उसमें न बकवाद लगेगी न गुनाह होगा। २३। और लड़के उनके पास आयेंगे जायेंगे गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं। २४ ॥ कु० पा० २७ सू० तूर रु० १ ॥

"फरशों पर तकिये लगाये बैठे होंगे। तापते और उनके अस्तर होंगे। और दोनों बागों के फल झुके होंगे। ५४। उनमें पाक हूरें होंगी जो आंख उठाकर भी नहीं देखेंगी। और जन्नत वासियों से पहले न तो किसी आदमी ने उन पर हाथ डाला होगा और न जिन्न ने। ५६। उनमें अच्छी खूबसूरत औरतें होंगी। ७१। हूरें जो खोमे में बन्द हैं। ७२। जन्नती लोग वहां सब्ज कालीनों और उम्दा उम्दा फर्शों पर तकिये लगाये बैठे होंगे। ७६। दो बागों के सिवाय दो बाग और हैं। दोनों (बाग गहरे) सब्ज हैं।६४। कु० पा० २७ सू० रहमान रु० २ ;

जड़ाऊ तख्तों के ऊपर। १६। उनके पास लड़के हैं जो हमेशा लड़के ही बने रहेंगे। १८। उनके पास आबखोरे और लोटे और साफ़ शराब के प्याले लाते और ले जाते होंगे। १९। और हूरें बड़ी-बड़ी आंखों वाली जैसे छिपे हुए मोती। २३। हमने हूरों की एक खास सृष्टि

बनाई है। ३५। फिर इनको क्वारी बनाया है। ३६। प्यारी-प्यारी समान अवस्था वाली। ३७। कु० पा० २७ सू० वाकिया रु० १॥

(जन्नत में) खिड़कियों पर खिड़कियां बनी हैं....। २०। कु० पा० २३ सू० जुमर रु० २॥

"न वह वहां धूप देखेंगे न ठण्ड। १३। वहां वृक्षों की छाया होगी और उनके फ़ल भी नजदीक झुके होंगे। १४। उन पर चांदी के बर्तनों और गिलासों का दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे। १५। और वहां उनको प्याले पिलाये जायेंगे जिसमें सोंठ मिली होगी। १७। और उनके नजदीक नौजवान लड़के फिरते हैं। १९। उनका परवदिगार उन्हें पाक शराब पिलावेगा। २१।

निःसन्देह सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिनमें कपूर की मिलावट होगी।५। कु० पा० २९ सू० दहर रु० १ व २॥

"नौजवान औरतें हम उम्र। ३३। और छलकते हुए प्याले। ३४। कु० पा० ३० सू० नवा रु० २॥

'उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी। २५। जिस (बोतल)की मुहर कस्तूरी कीहोगी। और इच्छाकरने वालोंको चाहिए कि उसी पर इच्छा करे। २६। कु० पा० ३० सू० ततफीफ।

जन्नत में हूरों का बाजार होगा—

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर ने फरमाया कि स्वर्ग में रहने वालों में से अदना (छोटे) दर्जे का वह आदमी होगा कि उसके पास ६० हजार सेवक होंगे और हर सेवक का काम अलग-अलग होगा। हजरत ने फरमाया कि व्यक्ति ५०० हूरें, ४००० हजार क्वारी औरतें और ८००० ब्याहता औरतों से ब्याह करेगा।"

जन्नत (स्वर्ग) में एक बाजार है जहां पुरुषों और औरतों के हुस्न का व्यापार होता है। पस जब कोई व्यक्ति किसी सुन्दरी स्त्री की ख्वाहिश करेगा तो वह उस बाजार में आवेगा जहां बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें ज़मा हैं।....वे कहेंगी कि मुबारिक है वह शख्स जो हमारा

हो और हम उसकी हैं।"

हजरत अंस ने फरमाया हूरें गाती हैं "हम सुन्दर दासियां हैं, हम प्रतिष्ठित पुरुषों के लिए सुरक्षित हैं।" कुरान परिचय पृ० ११७॥ मुकद्दमाये तफसीरुल्कुरान पृ० ८३ ॥

"खाने को अंगूर और नौजवान औरतें हम उम्र।" ३३ ॥ कु० पा० ३० सूरे नबा रुकू २ ॥

वहां चश्मे बह रहे होंगे। १२। उसमें ऊंचे तख्त होंगे। १३। उसमें आवखोरे रखे होंगे। १४। गाव तकिये एक पंक्ति में लगे होंगे। १५। और मसन्द बिछे होंगे। १६ ॥ कु० पा० ३२ सूरे गाशियह रु० १ ॥

"जन्नत में अप्राकृतिक व्यभिचार (दर मुख्तार जिल्द २ सफा १०६)

समीक्षा—अरब के लोगों में अप्राकृतिक व्यभिचार लड़कों से करने का रिवाज था यह बात कुरान में हजरत लूत के यहां आये दो खूबसूरत लड़कों (फ़रिश्तों) को देखकर सारी बस्ती के लोगों को उनसे सम्भोग करने को एकत्रित होने वाली घटना से स्पष्ट है जो कि कुरान में पारा ८ सू० आराफ रु० १०। पा० १२ सू० हूद रु० ७। पा० १४ सूरे हिज्र आ० ६१ से ७४। पा० २० सूरे नम्ल रु० ४ आ० ५४/५५। पा० २० सू० अन्कबूत रु० ३ आ० २८/२९ के वर्णन से स्पष्ट है।

बेशुमार औरतों से विवाह करना, रखेलें रखना, बांदियों से व्यभिचार करना अरब में जायज था। शराबखोरी वहां पर आम थी। उनकी आदतों को देखकर मुहम्मद साहब ने उनको अपने नये मजहब में लाने के लिए जन्नत (स्वर्ग) में शराबें, औरतें (हूरें) व ग़िलमें (खूबसूरत लोडों) का लालच दिया था जिसके चक्कर में फंसकर सैकड़ों ही अय्याश लोग इस्लाम में शामिल हो गये थे। डकैत व बदमाशों को लूट का लालच देकर इस्लाम में खींचा था उसका वर्णन इसी पुस्तक में पीछे दिया गया है। गैर मुस्लिमों को कत्ल करने या इस्लाम स्वीकार कराने का हुक्म भी दिया गया था और उनको कत्ल करने वालों को जन्नत मिलने का प्रलोभन दिया था।

जन्नत (स्वर्ग) की इस कल्पना का केवल यही रहस्य है। वास्तव में इस प्रकार की जन्नत (स्वर्ग) का होना सम्भव नहीं जहां खुदा मनुष्यों को व्यभिचार के अलावा कोई ऊंची शिक्षा न दे सके। शराब गोश्त व लोंडे और औरतों की भरमार के अतिरिक्त अरबी खुदा की जन्नत में और कुछ भी नहीं है। इस कुरानी बहिश्त की कल्पना पर इस्लाम के सुप्रसिद्ध विद्वान मौलाना सर सैयद अहमद खां ने अपनी पुस्तक तफ़सीरुल्कुरान भाग १ पृ० ३३ पर लिखा है जो कुरानी जन्नत की असलियत का पर्दा फाश कर देता है।

"यह समझना कि स्वर्ग एक बाग के रूप में उत्पन्न किया हुआ है और संगमरमर और मोती के जड़ाऊ महल हैं सरसब्ज (हरे भरे) पेड़ हैं, दूध, शराब शहद की नहरें बह रही हैं हर तरह के मेवा खाने को मौजूद हैं। साकी व साकनीन (शराब देने वाले) अत्यन्त खूबसूरत चांदी के गहने पहिने कंगन पहिने हुए जो हमारे यहां घोसिने पहिनती हैं, शराब पिला रही है और एक जन्नती (स्वर्ग) निवासी एक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है, एक ने रान (उसकी जांघ) पर सर रखा है एक छाती से लिपट रहा है, एक ने जां बख्श (प्राणदायी) अधर होंठ का बोसा लिया है, कोई किसी कोने में कुछ···ऐसा बेहूदापन है जिस पर आश्चर्य होता है। यदि यही बहिश्त (स्वर्ग) है तो बिना मुबालिग (बिना सोचे समझे) हमारे खराबात (वेश्यालय) इससे हजार गुन बहतर हैं।" (तफसीरुल्कुरान पृ० ३३ भाग १)

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	२०	उस	इस
	२१	कम तग ड़ी	कमर तगड़ी
५	२१	हटा	हरा
६	१३	उस	इस
७	१६	६–७	६७
८	१६	रु	रुकू ८
११	५	से	में
१२	५	खुवा	खुदा
१३	४	पिछली	पहली
१४	२७	उतार	उतारा
२५	७	गर्म	गर्भ
	११	क	को
	१८	उस	इस
२६	१०	निकल	निकाल
	१८	हद	हूद
	२१	कु	कुन
२०	३	ह	हो
	२३	उल्मी	इल्मी
	२६	निसा	माय
२१	२७	चीज	ची
२२	४	उनका	
२३	१०	की	
२७	१	सी	
२८	६	नाया	
	२७	भी	
३१	३	न्याय	
३४	३	३२	
	५	उस	

३६	१५	रु० ३	रु० ८
३९	१२	से	के
	१६	र	मार
	२३	प	पाप
		बाबा	बाब
४१	११	मुल्जिमान	वकील लोग
४२	४	३६	३७
४४	२१	निसा	मायदा
४९	१	आयत २	आयत ९२
५२	३	२५	२६
५७	१९	डरान	डराना
५८	२०	रु० ३	रु० ४
६२	२७	पा० ३१	पा० १
६५	२७	पा० २१	पा० २२
६६	२२	३४	३१
६६	१०	गुगराह	गुमराह
६९	१०	[illegible]	अम्बिया
	१६	रु० ५	रु० ६
७०	१८	मजबूर करो	मजबूर न करो
[illegible]	१०	निया	मिया
	७	कु० पा० ९	३९ कु०पा० ० सूरे अनफाल
	८	फैलला	फैसला
	२६	अरब	अरबी
	२२	जारियात	काफ
	१५	उसी	इसी
	१६	बुआथे	बुआए
	१७	अहमत	अहमद
	१	बहालत	जहालत

गुरु विरजानन्द दण्डी
ग्रन्थ ... पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5330
दयानन्द